LOK SABHA DEBATES

(Eleventh Session)



(Vol. XLIV contains Nos. 31-38)

LOK SABHA SECRETARIAT NEW DELHI

Price: Rs. 2.00

CONTENTS

[Fifth Series, Volume XLIV, 11th Session, 1974]

								Columns
Re: Question of Privilege.	ě					•		1-34
Paper laid on the Table .	•				٠			35
Committee on public Undertak	ings-	-			٠			35
Minutes—laid .					٠			35
Business of the House-								36
Shri K. Raghu Ramaiah								36
Statement Re : C. R. P. Firing	at Co	och-E	Behar-	_				36
Shri F. H. Mohhsin								3640
Supplementary Demands for G	rante	(Gene	ral) 1	1074-	75			41—174
Shri S. P. Bhattacharyya	lants	(Ochie	,,	9/4	/3		٠	41-44
Shri Arjun Sethi .		•	•	•		•	•	44—48
	•	•		•	•	•	•	
Shri S. M. Banerjee .		•			•	•	•	4863
Shri Hari Singh	•	•	•	•	•	•	•	64—70
Shri Sezhiyan	٠	٠	•	•	•	•	•	70—78
Shri Biswanarayan Shastri		•	•			•	•	78—83
Shri Madhu Limaye .	•	•	•		•	•	٠	83—91
Shri Chandrika Prasad			•	•	•	•	٠	91—96
Prof. S. L. Saksena .				•	٠	•	•	96-97
Shri D. K. Borooah						•	٠	97-107
Shrimati Parvathi Krishnan	1							107-112
Shri Sukhdev Prasad Verm	a			•			*	112-116
Shri Onkar Lal Berwa	•	6.90						117-121
Shri Chandra Bhal Mani T	iwari							122-125
Shri J. B. Patnaik .								125-129
Shri P. G. Mayalankar								129-134
. Shri Nathu Ram Mirdha								135—141
Shri Siddheshwar Prasad							•	141-151
Shri Shahnawaz Khan								151-154
Shri K. R. Ganesh .								159-173
								_

1

LOK SABHA

Saturday, August 31, 1974/Bhadra 9, 1896 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[MR SPEAKER in the Chair]

RE. QUESTION OF PRIVILEGE

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): Sir, I had given a privilege motion against the Prime Minister.... (Interruptions)

MR. SPEAKER: We will take all these motions and everything on Monday because we decided that today we will take up only the regular business. We will take up all these motions on Monday.

श्री सधु लिसबे (बांका) : ऐसा क्यों प किया जाये

सम्बक्त महोदय : मंडे को रखिये ।

Everything will be taken up on Monday. After all, we should stick to something. We decided that there will be nothing else on Saturday

श्री सम्बुलिकये : आप मेरी प्रायंना सुनिये फिर जो फैसला करना है करिये। मेरी प्रायंना यी कि भाज हम को भर्ज करने -बीजिये। भाप का फैसला सोमबार को स्ही जायेगा।

सम्बक्त नहोदय : फैसला नहीं, सभी कुछ उसी दिन होगा । बी मचु लिनवे : इस में ज्यादा समय नहीं लगेगा। यह साफ केस प्रिविलेज का है। कांग्रेस के लोगों ने भी प्रस्ताव दे दिया पालियामेटरी प्रोव के लिए और प्रधान मंत्री उन को बुला कर डांटती हैं और कहती हैं भाप भ्रपने प्रस्ताव वापिस लीजिए। (व्यवचान) भाप लोग क्यों हल्ला मकाते हैं। हम तो भाप को जो दोषी नहीं हैं, क्लियर करने के लिए तड़प रहे हैं और जो दोषी हैं उन को 'पकडना वाहते हैं। (व्यवचान)

MR. SPEAKER: I am not taking up any motion today. Everything will be taken up on Monday, not today. We are not taking up anything today, except the regular business.

भी संकर स्थाल सिंह (वतरा) : प्रिविलेज मोशन लाने का प्रधिकार इन्हीं को है या हम को भी है। (स्थवसान)

श्री सबु लिमये: यह तय हुमा था कि ध्याम भाकर्षण नोटिस भाज नहीं मायेगा, लेकिन क्या यह भी तय हुमा था कि प्रिविलेख मोशन नहीं मायेगा। नेशनल हैराल्ड में जो रिपोर्ट भाई है (ब्यव्यान)

श्राच्यक्त सहोदय: मेरी समझ में नहीं स्राता कैसे स्रायेगा।

Some Members come and give motions. They can withdraw then motions. I have told a number of times in the House that unless they themselves are under pressure, why should others get exercised over it?

श्री सम्भू लिलाये: नेशमल हैराल्ड में ो रिपोर्ट माई है वह सापने भी वेश्वी होगी। अक्षान मंत्री ने इन लोगों को बुला कर कहा है कि पालियामेंटरी प्रोव नही हीगा। (व्यवस्थान) यह बहुत महत्वपूर्ण सामला है। इस के समो पहत्वी स जाना चाहिए और गहराई में चाहिए यह प्राप के साक्ष्यक्येंगन्स ह। (श्यक्यान) धगर भाग लोग एक सिस्ट देने के लिये तैयार नहीं हैं तो हल्ला ही होगा।

श्रध्यक्ष महोदय :

I am sorry this cannot be a matter of privilege.

कोई मेम्बर झाता है, मोशन देता है भीर वापिस ले लेता है तो उस को इस का हक है।

He has the right Why should you presume that he has been pressurised?

श्री स्थास नन्दन मिश्र (वेगुसराय)
भाप हम लोगो की वान मुन लीजिये। तव
कुछ कहिये। सगर साप शुरू मे ही बिना सुने
हुए फर्मुलेशन दे देगे तो एतराज होता है
कि स्थाप सपना दिमाग बना कर स्थात ह।
इसलिए साप हमारी बातो को मुन लीजिये।

श्री सघु लिमये इगलैंड में कहते हैं. The King can do no wrong. इस सेटन का यह पियम हो गया है कि इन्दिरा गांधी कोई गलती पहा कर सकती हैं।

Indira Gandhi can do no wrong! (Interruptions)

MR SPEAKER When the motions come I have to say whether, on the face of it, it is in order or not. I fail to understand why you should object when a Member withdraws it.

श्री मधु लिमये: कल मने नोटिस दिया था, पूरे दिन नहीं पढा श्रीर श्राज नहीं पढा तो हम क्या करें। म एक मिनट से श्रधिक नहीं लूगा।

श्री शंकर वयाल सिंह: में दो मिनट से ज्यादा नहीं लगा।

श्रध्यक्ष महोदय: प्राज तो कोई मोशन देला ही मही है।

श्री शृष्टु सिमये: एक एक मिनट सुन लेने मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिये। (व्यवधान) लाइनेस के लिए हस्ताकार करने का धानके ऊपर अभियोग हैं इसलिए वस संकम आप लोग चुप रहिये। (व्यवधान)

MR SPEAKER. Today we will not take up any other business. All other motions will be taken up on Monday.

भी मधु लिसपे: क्या यह तरीका है इन लोगो का, मेरी समझ से नही झाता। जो काम दो मिनट में हो सकता है उसके लिये 7 मिनट चले गये।

SHRI JYOTIRMOY BOSU On a point of order How can the motion be withdrawn without the concurrence of the House?

MR SPEAKER Any member can withdraw at any time before the House is seized of it.

SHRI MADHU LIMAYE Mr Jagannath Mishra, did you sign that application for grant of licence?

श्री जगन्नाथ मिश्र (मधुबनी) ग्राप विषय को समझ मही रहे हैं।

श्री मधु लिमये: पर्मनल एक्सप्ले में मान के बाद श्राप को इस मामले में नहीं पड़ना यह श्राप के हिन में ह। थोड़ी लज्जा हानी चाहिए श्राप को।

You have given your personal explantion. Now you keep quiet

सदन की मानहानि का प्रश्न प्रवि-लम्बनीय महत्व का होता है। प्रिविलेज मोशन अर्जेन्ट मोशन है। हम कोई माननीय रष्म्रीया के नौकर नहीं है जो वह चाह वहीं हो। (अयवधान)

श्री क्ष्मसम्बद्धन सिश्चः चेयर सगर क्षम तरह संकनाइव करेगी उनके डिस्टरवेस परतो हम इस्उस को नही चलने देगे। सापः इन को रोकिये।

Re. Question of BHADRA 9, 1896 (SAKA) Re. Question of Privilege Privilege

SHRI J. MATHA GOWDER (Nilgiris); Why don't you ask them to sit down?

श्री क्याम नग्दन मिश्रा: हम को जो कहना है हम को सुन श्रीजिये, श्रीर इन को जो कहना है केस को भी श्रीप नुन लिजिए। शोरगुल कराना चाहते हिन्द हाउस को नहीं चलने देंगे तो मनासिद सरीके में हन भी हाउस को नहीं चलने दंगे।

11.14 hrs.

[MR. DEPUTY-SPEAKER in the Chair]

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please sit down. May I request the hon, members to calm themselves down for some time? I am quite sure that you all have many important things, you are excited about things. But they cannot be settled in this way. Therefore the best thing is to hear you one or two minutes each. You can make your submissions. I will hear from this side of the House also.

There will be no partiality. I will hear this side also. Now, Shri Madhu Limaye

SHRI MADHU LIMAYF On 28th August, 1974, the House discussed my privilege notice....

MR. DEPUTY-SPEAKER. We have all seen your motion

श्री मधु लिनये: में कोई भाषण नहीं करना चाहता। कल जो नोटिस दिया है, वहीं पढ़ कर सुनाना चाहता हूं, क्योंकि सदम ने नहीं देखाू है। मेरे बोलने से इन्कों तकलीफ होगी, इसलिये लिखिन नोटिस ही ५७ ता हुं।

PROF. MADHU DANDAVATE (Rajapur): It is better that he reads his notice.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Mr. Madhu Limaye, kindly sit down. You will have your points of order. This notice of your motion has been circulated to all the Members.

SHRI MADHU LIMAYE: No. The motion is circulated, not this notice. This is a privilege motion. That is why I am reading it.

On 28th August, 1974 the House discussed my privilege notice against Prof. Chattopadhyaya, Shri L. N. Mishra and 21 alleged signatories to the Memorandum recommending issuance of licences to the Pondicherry parties After hearing members from both sides, including the Ministers, you ('you' means the Speaker) made the following observations. I quot from the Debate Part II, page 12.19 of 28th August 1974:—

"It is a very important subject";

"We must apply our mind and settle down some procedures;"

"If people go to the extent of getting forged signatures, we have to go into the matter thoroughly;"

"if the Minister is in possession of certain facts" whether he should not "either ask for information from the member or at least convey to the Speaker":

"I cannot give any off-hand ruling...We will take up this subject again...and consider what procedure to adopt."

यह स्पीकर का भीवजरवेशन हैं।

So, Sir, you stressed the gravity of the matter and said that it would be discussed again I have given a motion. The Congress Members alleged to be involved have also given motions. You have already admitted certain motions.

When the matter is pending in the House, can the Prime Minister seek to pre-empt and bypass the House? This is what she is trying to do. She wants to hush up the whole matter.

यह मुख्य प्वाइंट है।

Shri Madhu Limaye1

Re. Question of

Privilege

She wants to shield the culprits. She does not desire to clear those who are really innocent. The National Herald has published a report to the effect that the Prime Minister advised members against a parliamentary probe and suggested that the CBI should be asked to deal with the The National Herald, as everybody knows, is the paper of the Prime Minister and the Home Minister.

This is serious. This is a gross contempt of the House and attempt to pressurise the members of the Congress Party into withdrawing their request for your protection and a parliamentary probe into the whole murky affair. It is also an insult to you and the House.

उपाध्यक्ष महोदय, 20 सदस्यों ने ग्रपने व्यक्तिगत स्पटीकरण में ग्राप का ग्रीर सदन का संरक्षण मांगा है। इस में केवल सी. बी. श्राई. इन्क्वायरी से नहीं होने वाला है। इतना ही अर्ज करने के लिये मेंने नोटिस दिया। प्रधान मंत्री द्वारा सदन को बाई-पास करने श्रीर चर्चा को न होने देने का प्रशास किया जा रहा है। इतना ही मुझे कहना है।

MR DEPUTY-SPEAKER: I will plead with the Members. I just come to the Chair like that. I am not in the know of all these notices. As a matter of fact, when Shri Madhu Limaye was referring to a certain notice he has given, I was under the wrong impression that it was something else because this matter was not brought before me and as he was reading through the letter I was fumbling with the papers. It is only now that I see your notice. I will request you to appreciate that a man takes a little time to know where he stands when he is in the floods. .. (Interruptions) Now. let us do things in a calm manner and in a meaningful manner. Shri Goswami.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Would it not be more proper that I also make my complaint about the

breach of privilege and then the other side can be heard?

MR. DEPUTY SPEAKER: All right.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Would it not be more proper that I also make my complaint about the breach of privilege and then the other side can be heard?

MR. DEPUTY SPEAKER: All right,

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: You will kindly recall that I had earlier given notice of a privilege motion against the hon Minister of Commerce. That is still pending with you. In the meantime a breach of privilege or even contempt of the House has already taken place and I am going to submit to you the grounds on which I think that a contempt of the House or a preach of privilege has occurred. You will also be good enough to recall that 20 Members of Parliament had denied that they had appended their signature to a letter for grants of licence. And in doing so they had also, many of them made a request to the Chair to appoint a Committee to go into the whole affairs to institute a parliamentary probe into whole affair. Thereby they thought that the blot that is brought on their reputation could be completely washed of. So that is before you. That is before the entire House. This request publicly made, specifically made, unequivocally made by the Members whose signatures were alleged to be associated with a letter, in connection with grant of licence is before you, Subsequently, many of these members wrote to you that they wanted a probe to be instituted into the matter as expeditiously as possible. Now all that it is before you, you are seized of those letters or In the meantime we are Motions told them one of those members are now being pressurised to withdraw letters or Motions from you. This is for you to inform us how all this is going on, because, the House has already been told earlier in the presence of all us that they wanted a parliamentary probe to be instituted to this matter. And later the newspapers have reported that they had written to you withdrawing their notices. We would like to know whether these honourable gentlemen had submitted such a request in writing to you or not, and whether the process of withdrawal of letter has not already begun.

The second thing is this. You will recall that there are motions tabled by some other hon'ble Members of the House to institute a parliamentary probe by two hon. Members. There are already two motions on the subject.

And thirdly,—this is the third ground,—now the House is seized of this matter quite clearly and squarely. The Chair was pleased to say that this required a thorough probe and he would go into the matter at a leter stage.

So my submission is that the House is fully seized of the matter. This matter is before the House. And in meantime comes the tidings the through newspapers that the Minister of Parliamentary Affairs organised a meeting of the members of his own party to impress upon them the need not to press for the institution of such a probe. That is there. This is contained in the report of the National Herald and we also see from the Bulletin that is circulated to us that now the withdrawal of names from admitted motions has taken place. It has been circulated already. Here it is. We are also told, after this meeting with the Hon'ble Minister of Parliamentary Affairs the members met the hon'ble Prime Minister. hon'ble Prime Minister is reported to have said this—this has been widely circulated in newspapers-in two parts. the first being in a small group of the Members of Parliament who met her and later on at a meeting of her party executive. The han'ble Prime Minister has expressed a contrary opinion in this matter and that amounts to pressurising and adopting coersive me-

thods, the result of which is already evident in the circular sent to us, namely that some of the members have already begun withdrawing their notices.

My complaint of breach of privilege is against both the hon. Minister of Parliamentary Affairs and the hon'ble Prime Minister. They had committed breach of privilege Both of them are now exercising pressure and coercion in order to get their requests withdrawn from the Speaker. on a matter of which the House is seized. This is my respectful submission.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Sir. on 28th instant, the House discussed my privilege motion in the matter of issuance of licences to seven Pondichery parties. From the debate I see that your considered ruling was that it was a very important matter and we have to go into the matter thoroughly. The Congress Members alleged to have been involved have also given some motions and those are being admitted and the House is seized of the matter. But, a news from the 'National Heralad' which is a paper controlled by Mrs. Indira Gandhi, which is known to surprised everybody has me. It says:-

"August 29—Several members of the Congress Parliamentary Party in the Lok Sabha who are incensed over the forgery of their signatures on a memorandum recommending import licences to some firms, to-day met the Prime Minister, Mrs Indira Gandhi and reiterated their demand for a thorough-going parliamentary inquiry into the affair."

So, Sir, not only that they gave a formal substantive motion for a Parliamentary probe but they also took additional steps to see the Prime Minister so that a thorough Parliamentary probe is instituted. The report reveals:

"Mrs. Gandhi is understood to have told them that a Parliamentary committee would take time to go into

II Re. Question of Privilege

[Shri Jyotirmoy Bosu]

the matter and it would be better to have the matter investigated through the C.B.I. which was already seized of the matter."

We all understand that C.B.I. is a book edition of Mrs. Gandhi. Some Members said that they had been defamed by blatantly false involvement with the memorandum and were anxious that their reputation should be cleared.

Then, Sir. the effect of the Prime Minister's intimidation has produced substantial results. which could be seen from the Bulletin, Part II of 30th August, 1974, Sl. No. 1913, which reads as follows:—

"Withdrawal of names from Admitted Motion.

On 30th August, 1974 Sarvashri Bhola Raut and Ram Shekhar Prasad Singh have withdrawn their names from the motion regarding appointment of Parliamentary Committee to go into Question arising out of replies to Rajya Sabha S Q. No 730 of 27th August, 1974, published against S No. 162 in Paragraph No 1909 of Lok Sabha Bulletin—Part II, dated the 29th August, 1974"

If you read the article of Hindustan Times, it says:

"Mrs. Gandhi has made it clear openly that the C.B.I. was already looking into the matter and there should not be another parallel Committee to hold an enquiry."

It is clear from this that Mrs. Gandhi has left no stones unturned to intimidate and pressurise the Members of this House who may belong to her party and thereby she has committed a breach of privilege. So, my question to you is this. When a motion is found in order and admitted and put in Part II Bulletin, has the Chair got the powers to suo-motu withdraw that without nutting them before the House?

is improper and that it was done under the pressure from the Prime Minister which is regrettable.

SHRI DINESH CHANDRA GOSWA-MI (Gauhati): Sir, I have two points to submit before the Chair. What does Rule 225 say? It says:—

"The Speaker, if he gives consent under rule 222 and holds that the matter proposed to be discussed is In order, shall, after the questions and before the list of business is entered upon, call the member concerned, who shall rise in his place, and while asking for leave to raise the question of privilege, make a short statement relevant therefo:"

Therefore, under rule 225 a person is entitled to make a statement only if the Speaker gives his consent and holds that this motion is in order.

My submission before you is this. I want a ruling from you. In violation of this Rule 225, that is, even before the Speaker holds matter to be in order and gives his consent, are we permitted to enter into a discussion on the question of privilege? I am particularly drawing your attention to one thing. If you look to the proceedings of this august House for the last few days, you will see that day in and day out, we are spending a lot of time on discussion of privilege, without the consent of the Speaker. Therefore, I think (Interruptions). I am asking for a definite ruling on this point.

MR. DEPUTY-SPEAKER. He is only asking for my ruling.

SHRI DINESH CHANDRA GOSWA-MI: Therefore, I think that a final ruling on this should be given. I hope you will give your ruling. On, other issue which has been raised, about privilege, I would submit that we, on this side of the House, do not want to shield this issue. We are equally as anxious, perhaps more anxious as the hon. Members on the opposite that the whole thing should come to light.

DEPUTY-SPEAKER May I MR request hon. Members not to interrupt him We have already had enough excitement Mr Banerjee kindly sit down He is on his legs I would like this matter to be disposed of and I do not believe that it can be disposed of by tempers being frayed and by shouting and counter shouting The three individual Members who have given certain notices have made their submissions Let the other side have also an opportunity Let us hear them Why do you intervene?

SHR' DINESH CHANDRA GOSWA-MI Sil we are most concerned because this issue involves not any Member of the Opposition but about 20 Members of this side and we want that their reputation should be cleared The whole question is about a probe the House had decided by this time on a particular type of probe then of course the question would have been different But, this House has not come to the conclusion whether there should be a probe not to speak of what type of probe should be conlucted to investigate the whole matter and obviously each party is entitled to have its own opinion whether there hould be probe and if so about the type of probe which should be conducted on this particular issue Therefore if the leader of our party has decided that a particular probe by a particular agency may be conducive for the purpose of investigation I do not know how it can be breach of privilege In fact I can assure you that we all will be subject ultimately to the final opinion that this House will express Sir a very serious allegation has been made that the two Members who have asked for withdrawal of their motions submitted under Rule 184 were pressurised These are the two Members who are entitled to-and who can-say whether they are pressurised or not I feel Sir, in this House, each Member is presumed to take decision according to his own judgement and his own free will Pressurisation is a thing which may be known to my friends on the Marxist side On this side of the

House, we members of our party, are never subjected to pressurisation feel Sir if there has been any breach of privilege, the breach of privilege has been committed by the Members who have alleged pressurisation and not by them

MR DEPUTY-SPEAKER I have a note that the Allow me to speak I am not denying anybody anything Why do you want to seize a word out of my mouth' I have a note from the Minister of Parliamentary Affairs that he would like to say something on this matter

KISHORE SINGH SHRI HART (Pupri) Sir before you call upon the Minister of Parliamentary Affairs to say something I would request you to hear us also

MR DEPUTY-SPEAKER I will hear vou a'so I am not saving that I won't hear anybody Mr Baneriee why are you so impatient? Learn a little patience from me I am younger than yourself

Now the Minister of Parliamentary Affairs has a special responsibility in the matter of the business of the House because he is m charge of the business of the Government and therefore when he wants to say something relating to the business I think he should be given priority We should hear him

(Interruptions)

Order please Let us hear him

SHRI PILOO MODY (Godhra) Sir, I am on a point of order

MR DEPUTY-SPEAKER Is it your point of order that the Minister of Parliamentary Affairs is on his legs?

THE MINISTER OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS (SHRI K RAGHU RAMAIAH) Sir. friends opposite levelled grave charge that the Prime Minister and myself have pressurised or coerced some Memiers not to do certain things I would AUGUST. 31, 1974-

[Shr: K. Raghu Ramaiah]

gation is totally unfounded, incorrect and false. There has never been any coercion or intimidation.

BOSU Sir, 1 SHRI JYOTIRMOY rise on a point order.

MR. DEPUTY-SPEAKER Let us understand it very clearly. I am incharge of the House. You are making submissions to me Taking into account the exigencies prevailing in the House I have agreed to listen to you As long as I lend my ears to a particular Member it is out of order for anybody else to intervene can raise your point of order later. It cannot be a point of order m my listening to a particular Member.

SHRI K RAGHU RAMA!AH. Having said that I would like to refer to the second allegation or insinuation that the Government wants to shield and they do not want to probe into matter I would like to say here and now most emphatically that the Government is most anxious to go thoroughly into this matter It is not only because honour and prestige of some of our Members is involved but also because it is our duty to find out what really happened and go to the bottom of the matter There is no question of shielding anybody

Further Sir, as to what transpires between me and the hon Members of my party how does the hon Members opposite expect me to tell them Some of them belong to some party or the Don't they discuss between themselves the pros and cons of certain things coming up before the House and a certain policy to be adopted by their party. Many of the leaders of the Opposition meet among themselves every other day and discuss as to what policy they have to adopt in the House If I am put questions as to what transpired between me and my party Members how democracy can function We have every right to discuss between ourselves and there is no question of insinuation.

MR. DEPUTY-SPRAKER: I had said after hearing Mr. Raghu Ramaish L will hear you. Let us understand.

I would listen to everybody. Hon. Members have made certain submissions and they have all gone into the record and they will go on record, and it is for me to dispose of this business after that If somebody else savs something and then another bon, Member gets up and says that there is a point of order, it becomes a sort of verbal warfare and a sort of free-forall ..

SHRI MADHU LIMAYE. The point of order is addressed to you.

DEPUTY-SPEAKER MR I am noting down all the points that have peen made I am nothing down those points which have been raised by certain hon Members and which require certain rulings from the Chair I have noted down what Shri Dinesh Chandra Goswami has said and I have noted down also what Shri Jyotirmoy Bosu has said not relating to the substance of the whole thing but relating to certain procedural matters Therefore, let not hon Members be impatient They will get everything in time

SHRI JYOTTRMOY BOSU This is the first time when at the time a privilege issue is being discussed, we see that the Minister stands up and renders a personal explanation

MR. DEPUTY-SPEAKER He 15 going back to the subject again

SHRI JYOTIRMOY BOSU. My point of order is very clear I am saying that a certain method 19 being adopted which is not in keeping with the rules and practice of the House. Whenever a privilege motion is raised, the Chair has a right to hear the House

MR DEPUTY-SPEAKER: I amp hearing.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: But your cannot hear that person who is rendering a personal explanation in respect of the person against whom the motion has been tabled.

MR. DEPUTY-SPEAKER, No. no.

SHRI JYOTIRMOY BOSU. My second point is in respect of what Mr. Raghu Ramaiah has said. The Members have of their own free will and choice given a motion, and then they are forced to withdraw it, as we see in Bulletin—part II of today.

MR. DEPUTY-SPEAKER. That is no point of order.

SHRI JYOTIRMOY BOSU. This is a point of order. This is something which is not proper

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA. My point of order is this I had certainly made certain complaints. had made specific complaint of the contempt of the House both by the Minister of Parliamentary Affairs and by the Prime Minister The hon Minister of Parliamentary Affairs was therefore quite in order in coming forward with some explanation order to enable you to come to certain conclusions I do not take any object tion to that But I do take objection to his explaining what happened, so far as the hon'ble Prime Minister concerned The matter of privilege is an issue which relates to the person concerned He cannot take vicarious responsibility on behalf of the hon'ble Prime Minister of India and say something to the House under defence. am taking objection to that.

He has tried to tell us also that it is perfectly open to him and to his party to discuss any issue in the manner in which they like. I do not take objection to that also They can privately discuss any issue but to give publicity to the views means.

SHRI HARI KISHORE SINGH. But is it an official release by the party?

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA:

the whole news is published—yes, it may not be an official release—but all the papers are publishing it. They always give publicity to the proceedings of their own executive committee. I take objection to this. My point is that it should not be upheld by the Chair that they could give publicity to their views which they express in their own party meeting and yet ask us not to take notice of them. The moment they give publicity to their views, we are bound to be seized of it in the House.

श्री सधु लिस्यें भेग व्यवस्था का प्रश्न सरकार के खिलाफ नहीं था, प्रधान मती के खिलाफ था। इसलिए ग्वरामैया जी सरनार की तरफ में कोई वक्नव्य मही देख सकते। प्रधान मती की प्रपनी मफाई देन, चाहिए। दूसरी बात—इन के ऊपर जो दबाव पड ग्हा है उस का नतीजा बुलेटिम में हम लोग देख रहे ह। ग्रखवारों में जा आया है उस का नतीजा हम बुलेटिम मम्बर 2 में देख रहे है।

SHRI HARI KISHORE SINGH It is quite normal for the Members of a party to discuss important matters with the leaders and whips of the party I am sure that this is the practice adopted by the Members of the Opposition also, unless it is denied.

SHRI PILOO MODY We do not perjure

SHRI HARI KISHORE SINGH. On important questions, we always approach our party leader for discussion and guidance On this question, I am in a position to deny definitely and categorically that there has been any pressure whatsoever on us to withdraw the motion or to move anything otherwise.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: You stick to your request to the Chair?

SHRI HARI KISHORE SINGH: Therefore, this insinuation is com-

Re. Question of

Privilege

Re. Question of

19

pletely baseless, unfounded and mischievious.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA What has he said? He has not withdrawn. Does he stick to the request made to you?

MR. DEPUTY-SPEAKER It is his point of view.

श्री एस० एम० बार्जी (कानपुर) : उपाध्यक्ष महोदय. यह जो प्रिविलेज मोशन ग्राया है उस के बारे में मैं भभी भपने विचार नहीं प्रकट करन चाहता ह क्योंकि सवाल यह है कि श्रखबारो मे अगर यह निकल चका है कि प्रधान मत्री ने उन के ऊपर ग्रमर डाला है भीर इस बान को अगर वह डिनाई करती ह तो पार्टी फक्णन करती है देश में, यह अखबार में कमे निकला, क्या निकला यह दूसरी बात है। पार्टी में क्या बातचीत हो रही है इस में हमें कोई मरोकार नहीं है। लेकिन सवाल यह साफ है जिस दिन इस सराल को यहाँ पर उठाया गया, उप-मन्नी जार्च साहब ने, चट्टोपाध्याय साहब के न होने की वजह से यहां स्पष्टीकरण दिया श्रीर उस के बाद ललित नारायण मिश्र, रेल मती ने भी स्पष्टीकरण दिया. उस में पहले ग्राप ने देखा तकरीवन 19 मेम्बरो ने प्रपने ग्रपन भाषण दिए भौर उन्होने कहा कि उन का कोई हाथ उस मे नहीं था. दस्तखत उन के नहीं थे धौर किसी गलत तरीके से उन के दैम्तखत किए गए. तो इन सारी चीजो मे दो मिलयो की प्रतिष्ठा उन की इज्जत का सवाल है- श्री लिलम नारायण सिश्च भौर श्री डी० पी० चटटोपाध्याय और 20 मेम्बर ग्राफ पालियामेट की प्रतिष्ठा का सवाल है। एक मेम्बर पालियामेट जिन्होने दस्तखत किए है वह परार है, ऐबसेट है, मालम नहीं कब भाएंगें। लेकिन उन्होंने तस्लीम किया है कि उन के दस्तखत है ता प्रधान मंत्री सी॰ बी॰ धाई • की जाब चाहती है या नही चाहती है इस का सवाल नहीं है। सवाल यह है कि इस के पहले एक मेम्बर को एक्सपेल किया गया था.

से उन्हें फोर्स कर के उन से रिजाइन कराया गया या भीर उन के बारे में मैं समझता हं कि पालि-यामेंदी प्रोब हथा था. लिहाजा आज तमाम इस पद्गति को बरकरार रखने के लिए और पालिया-मेंटी डेमोकेसी को जिन्दा रखने के लिए और तमाम मेम्बर एक दूसरे की नजरों में यह है न रह जाए कि जो तमाम केरणान के खिलाफ बात करते है, वे खुद करप्ट है, इस बीज की मफाई के लिए पालियामेटी प्रोत्र नेसेमरी है। यह प्रिविलेज मोशन है या नहीं है इस का विचार ग्राप करे। लेकिन सवाल इस का है कि इसके लिए रेजोल्यशन आए है यहां पर श्री भटलविहारी वाजपेयी जी के नाम से या दसरे सदस्यों के नाम से उस के ऊपर वहम हं की चाहिए भीर प्रधानमंत्री भगर महसुम करती है कि मी० बी० म्राई० की एन्क्वायरी नेसेसरी है तो में समझता ह कि वह ग्रपने मेम्बरो को साप करने के लिए और हम तमाम लोगों को कम में कम जनना के मामने फीर्रिश देने के लिए करप्शन के खिलाफ हम लोग सिर्फ भाषण ही नही देते है बल्कि खद भी करप्ट नही है. इस के लिए प्रधान मत्री जा को खद चुड़े हो कर पालियामेटी प्रोब को बैलकम करना चाहिए।

थी शकर दमाल सिंह (चतरा) : उपा-ध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था प्रकृत नियम सख्या 31 के अनसार है। उस मे दिया है -

"A list of business for the day shall be prepared by the Secretary-General and a copy thereof shall be made available for the use of every member".

हमारी जो भाज की कार्य सूची है उस के अनुमार कामो का सिलसिला सुब्रह्मण्यम साहब जो सभा पटल पर रखने वाले थे उस के भनुसार होना चाहिए था। लेकिन बीच मे प्रिविलेज का स्वाल हमारे विरोधी दलों के साथी ले प्राए । मैं इस सम्बन्ध मे एक बात निवेदन करना चाहता ह । कल इस सवन के सामने एक प्रिविलेज का मामला द्याया । हमारे

जनसंघ के साथी श्री ईश्वर चं,धरी जी के सम्बन्ध में और सदन ने देखा. हमारे विरोधी भाइयों ने भी देखा कि कितनी उदारता से हम सब बे उस को सपोर्ट किया कि किमी भी सदस्य की इज्जत पूरे सदन की इज्जत मानी है। तो जिन साथियों के जाली हम्ताक्षर कर के यह जाली काम किया गया है उन के प्रति हमदर्दी होनी चाहिए, उ के प्रति न्याय होना चाहिए, उनके प्रति धपनापन होना चाहिए. मदन की मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए, न कि विरोधी दल के माथी यह समझे कि हम इस की राजनीति का एक खिलवाड बनाएं। प्रधान मही ने हम ने क्या बात की, क ग्रेम ए ग्जीक्य दिव पार्टी में हमने क्या बारे का, हम अपने दल में क्या बाने करने है उस से उन को क्या लेना देना होता है ?हम जो करते हैं उसकें। ये भी मान ने तो इन का भी भला हो जाए। लेकिन ये उन बातो को नहीं मानते हैं। इसलिए में कहना चाहता हं कि हमारे दल की बातों को ग्रलग रखा जाए। . मदन की बाते दल की बानो से श्रलग हन्ना करती है और नियम संख्या 31 के भनुसार मैं भाप से यह अनुरोध करना चाहता ह कि आज की जो कार्य सूची है उस के धनसार कार्य होना चाहिए। हमारे पालियामेटी अफयसं के मन्नी के वक्तव्य के बाद आगे और इस वात को बढाने की जरूरत नही है।

श्री नर्रासह नरायण पाण्डे (गो खपुर) :
उपाध्यक्ष महोदय, विशेषाधिकार का जो
प्रश्न श्री मधु लिमयं जो श्रीर दूमरे साथियो
ने रखा है—यह बात सही है कि मदन के
मामनीय सदस्य श्रीर सदम को मयदा का
पालन होमा चाहिए, लेकिन, मान्यवर, यह
बात समझ में मही श्राती—जैसा कि पालियामेन्ट्री श्रफेश्चर्ज मिनस्टर ने कहा है—पार्टी
के श्रन्दर उसका लीडर उसके मेम्बरो से
क्या बात करता है श्रीर उसका प्रचार श्रीर
प्रसार किस ढग से होता है—यो तो कै बिनेट
की मीटिन के बारे मे बिना बीफिग किये हुए
श्रखवारों मे बारे श्राती है, बहुत सी बाने

ऐसी होती है जो गलन होती है और बाद में उनका हिमाएल करना पडता है, तो आज सदम में बहुत सी बात ऐसी हो रही हैं जिमको सदम की चर्चा का विषय बनाने की कोशिश की जाती हैं जबकि सदम से उनका सम्बन्ध नहीं होता है। में आप से जाममा चाहता हूं कि इस प्रवार का प्रयास कहा नक सगत है?

दमरी वात-यहा हर मामनीय सदस्य की यह हक है कि वह प्रस्ताव रखे। ग्रगर वह यह मनामिब समझना है कि प्रस्ताव रखने के बजाय हमारी मान, मर्यादा या प्रतिष्ठा की रक्षा दसरे नरीके से हो मकती है तो वह उसको वापम भी ले सकता है। लेकिन माननीय मध लिमये जी ने जो प्रस्ताव रखा है और जिस तरीचे में वे दवाव डाल रहे हैं कि विरोधी पारियों के लोग जिस तरह से वे चाहते है उस तरह में ग्राप कार्य वरे तव ता वे उसकी न्याय सगत समझते है अन्यथा मही । यह मही विचारधारा या पद्धति मही है। आज दनिया के अन्दर जिननी भी पालियामेन्टी सिस्टम की पद्धतिया बनाई गई ह-चाहे लांक सभा हो या हाउस ग्राफ कामन्त्र हो. ऐसा कही गही देखा गया है वि कोई माननीय सदस्य कोई प्रस्ताव रखता है और बाद में यदि उसे बापम लेना चाहता है तो मही ले सकता है। मे समझता ह कि इन दो बातो के ऊपर आप को विचार करना चाहिए और सदन का समय व्यर्थ कामो मे बरवाद नहीं होना चाहिए। यह चीज सेदम के ऊपर छोड़नी पड़ेगी कि वह क्या निर्णय लेता है। पालियामेन्द्री कमेटी बनाई जाय या दूसरा तरीका निश्चित किया जाय-यह चीज ग्राप श्रार सदन पर निर्भर करती है। माननीय किरोधी दल के लोगो ने जो प्रस्ताव दिये हैं उनका क्या रूप होगा, यह सदम तय करेगा। लेकिन इस समय यह प्रश्न उठामा-या रोज इस तरह से राज-नीतिक प्रचार के लिये प्रयत्म करना-विरोधी पाटियों के लोगों ने एक नुक्ता बना लिया है। किसी न किसी मत्री या प्राम मंत्री को लेकर रोख प्रचार का माध्य वनाय-यह देश के 23

SHRI SMZHIYAN (Kumbakonam): I share the anxiety of the members of the House that this is a very grave matter which should be cleared. I do not agree with Mr. Goswami that we had already wasted some hours. More precious than the time of the House is the prestige and dignity of the members of this House. I also do not think this can be confined to the narrow tire House is agitated over it. More and more comments are appearing in the papers. The corridors are getting darker and murkier. Today's Hindustan Times saus:

"The fact, as it appears now, is that only seven of the 21 signatures are genuine. The other names were appended by the initators of the memorandum and they had perhaps taken for granted that the matter would never come to light while the purpose of the memorandum would be achieved."

I do not know how far this is true, against the categorical denial certain members on the floor of the things have to be These House. cleared. That is why it has been suggested that a parliamentary probe should be there. The CBI probe is for the convenience of the Govern-They can investigate ment. evidence. but no conclusion collect can be arrived at or decision taken by the CBI by itself, because it is not a governmental matter. It is a matter which concerns the House. More than whether it is a question of forgery of the signature or not, the whole House has been disgraced and discredited in the eyes of the public. So, the basic issue should be gone through by a parliamentary probe.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: It is not a domestic affairs merely because their party members are involved.

MR. DEPUTY-SPEAKER: It is a matter of privilege.

SHRI SEZHIYAN: In 1951 when a similar case arose the then Prime Minister said that it is a matter concerning the entire House. The same view should be taken now.

SHRI INDER J. . MALHOTRA (Jammu): My only complaint is thatour friends of the opposition parties are trying to read too much between the lines from the report. It would be very unfortunate if motives are attributed to the members either on this side or that side. It is stated that the members who gave notice for a motion were pressurized by the Minister of Parliamentary Affairs, who is the chief whip of the party, and our leader, the Prime Minister. This allegation is entirely and absolutely incorrect. I was myself present in that meeting.

All the members who were present in that meeting emphasized categorically that no time should be lost it. completing the enquiry. . (Interruptions) It would be very difficult to say which is the agency in this country I can have on which people can rely. one view and Shri Mishra and Shri Jyotirmoy Bosu can have another view about the various agencies. ultimately, in a democratic country the real judge of every issue is people of this country, whether inquiry is conducted by the CBI or by a parliamentary committee or other agency .. (Interruptions) would once again appeal to the friends of the opposition not to spoil the atmosphere in which this inquiry should be held so that the truth may ultimately come out.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Even if there is a parliamentary probe, the parliamentary committee can employ the agency of the CBI. There is no contradiction between the two But we cannot agree to anything privately being done by the ruling party when it concerns the dignity and honour of the entire House.

12 00 hrs.

SHRI P. G. MAVALANKAR (Ahmedabad): Sir, before I start my submission, I would like you to rule on one point. Some of my friends of the ruling party during the course of their submission have stated that so much time is being wasted in the House. I want a ruling on this point whether time is spent or wasted.

MR. DEPUTY-SPEAKER. It is a subjective matter.

SHRI P. G. MAVALANKAR: Sir, you had pulled me up sometime back, when I was a new-comer, for using that term and I did at once apologize for using that phrase, "wasted"!

MR. DEPUTY-SPEAKER It is their opinion.

SHRI P. G. MAVALANKAR. To say that time was wasted is not right. Now, Sir, you will recall and the House will recall that earlier this week I was one of the persons who had given privilege motion against the notice of Commerce Minister, Professor Chattopadhyaya So, let us be clear on this matter that this is not a party issue It is a matter for the entire House. I do not know why the Minister for Parliamentary Affairs gives us lessons in democracy, when it is a matter for the whole House. If we want lessons about party functioning we will go to him and ask him "how do you function in your party". But here we are not discussing party matters, we are dismatters. parliamentary cussing Secondly, however big the honourable majority of the ruling party in this House, it is only a part of the whole House and a part can never be the whole, however big the part may be. Therefore, they are mixing up party matters with national matters party matters with parliamentary matters. party matters with matters concerning the whole country

MR. DEPUUTY-SPEAKER: As a professor you are getting too professorial

SHRI P. G. MAVALANKAR: This is then the difficulty They are con-

fusing the two. It is against the hon. Prime Minister, who also happens to be not only the leader of the party but also the Leader of the House, that my hon, friend,, Shri Madhu Limaye and other friends on the opposition have brought this notice of privilege. If she is very honest, she should have herself come and told this House what transpired between the members of the same party and assured the House that it had nothing to do with the question of parliamentary probe, which is already before the House and which is under the active consideration of the hon. Speaker.

Sir, you will remember that two or three days back, m reply to a very sharp interruption by the hon. Member, Shri Atal Bihari Vajpayee, who said that the Prime Minister had pulied up the Commerce Minister in her room or in her chamber she, got up at once and said "Ji Nahim" and we were happy about it that the matter was cleared that the hon Commerce Minister was not pulled up by the Prime Minister.

This is a matter which is referring to the Prime Minister herself, as the leader of the House, and not as leader of the party I do not know why the Prime Minister herself has not come and told this House that whatever happened in the party is not contravening the case pending before the House. Therefore, I would say in conclusion that, unfortunately, this Parliament is taken for granted not only by Prime Minister but by most of her senior colleagues They do not take this House and parliamentary matters seriously If they do so, we would not have had this occasion to discuss this matter

Lastly. I remember distincitly, I cannot remember the names, but I remember distinctly that at least two members of the ruling Party, in so many words, supported the demand by us for a Parliamentary prohe under the Speaker's guidance and by an all party Committee, appointed

[Shri P. G Mavalankar]

Now they are coming and saying 'CBI inquiry' and all things I said have my earlier speech two days ago that the CBI enquiry woull not be the right course Why should we depend on a governmental agency to look the charges? We do not want to get a clearance from a governmental agency we want to get a clearance from a Parliamentary committee because that is the only agency which can go into the whole question thoroughly and in an i that is the only dependently agency in which people will put their taith

SHRI JAGANNATH RAO (Chatra-The leader of a party has a Dui) right to advise the members as to what they should do or what they should not After all, what has the Prime Minister said in the party meeting? Even if she has said that the CBI inquiry is already pending and that there i no point in having a Parliamentary inquity by a committee of the House There is no breach of privilege It is open to the Opposition to raise it after the (BI has submitted its report that is brought 'etore the House if the Opposition feels that justice has not been done that truth has not come out then it is open for them to insist on a Parliamentary proble. There is no question of privilege involved in this It is the right of the leader of a party to advise the members and every member is bound to follow the advice of the leader

PROF MADHL DANDAVATE (Rajapur) The Minister of Parliamentary Affairs has almost suggested that since it is an interna party matter the matter cannot come up as a privilege issue Let me submit to you that, as far as the privilege issue the concerned, it transcends all party barriers, it concerns the House as a whole and not merely a party In that case, even the Prime Minister cannot in-Not only that, somehow or tervene other, the report of her advice to the

members concerned has also appeared in the press. I was telling one of my friends the other day when the members who say that they have not signed this document themselves demanded a probe in this House that was afraid probably at a later stage, the Prime Minister herself put her purple robe on the demand for a Pailiamentary probe That was the fear that I had expressed, and that has come true

Another point that I would like to raise is that we are not opposed to CBI inquiries in normal cases. But I wast to raise a Lasic issue and in this I am sure I will be sharing the sentiments of many members who made per onal explanations here Many of them teel why is it that Members of Parliament should be subjected to a (BI mourt at all let there be a par lame itary probe. When we say this we co not want to have a complete han on the CBI coming nto the picture Even when a Parliamentary probe as instituted technical assistance can be given by the CBI for the Parliamen-But the Members of a tary probu overeign Parl ament will not subm t theniselves before the (BI they can submit themselves only before a Parliamentary committee

I wil conclude by quoting one piecedent from the House of Commons There are many aspects of our Parliamentary behavious and Parliamentary life -not only privilege but a number of other aspects also-and we are to be guided by important Parliamentary conventions When the Chancellor of the Exchequer Mr Dalton was walking into the House of Commons in the staricase he inadvertently told his journalist friend, "Well today you are smoking today you can do but I do not think tomorrow you can do it so easily" He took a clue from that that probably the excise duty was going up And because of that madvertent leakage of the budget he appeared before the Cabinet and said, 'I must resign' and he did resign accordance with that grand tradition,

the Prime Minister herself must resign on this important issue. That is my demand.

कमारी निणाबेर पटेच (मावरकाठा) उपाध्यक्ष महोदय, दो महिला सदस्याची ने कहा कि हम ने दम खन नहीं किये। वह काफ़ी परेशाम ई और कहती थी कि हम ने प्रधान मत्री को भी कहा कि हमारा नाम क्यो लिया गया। उन्होंने मी० बी० आई० का भी कह दिया है कि हम न दस्तवन नही किये, श्रीर यह भी कहा है वि जल्दी इनक्वायरी होनी चाहिए। सीठ बीठ ग्राष्ट्रिका जा बरमा है वह तो करेगी हो, उन्ने रालियामड़ो कमेटी पर लोगों का ज्यादा विज्वास होगा जो कि मी० बी० आई० एर मही होगा। इसि ये जो कल तय हुआ है कि सालियामन्टरी कैमेटी को यह मामला भो राजाय वही हाना चाहिए। ग्रोर जिन मेम्बरो न ग्रपना नाम दिया है भीर अब वह विन्दा व न्ते ह पालिया-मेटरी कमेटी में में तो उनकी जगह दूसरे मदस्य रखे जा मत्रत है। इसलिय मी० बो० माई० को यह मामला देवा गलन है भीर पालियाथेटरी कमेटी का ही इस मामल की त करना चाहिए, ऐसी मेरी माग ह।

MR. DEPUTY-SPEAKER Will you all kindly listen to mc quietly?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: You are still a professor.

MR. DEPUTY-SPEAKER No I have left that role long ago The more I see of professors, the more afraid I am of going back . . .

SHRI A. K. M. ISHAQUE (Basirhat) A very correct assessment of professors.

MR. DEPUTY SPEAKER. I shall deal with certain procedural matters first.

Certain points of order have been raised by hon. Members. The first is that of Shri Jyotirmoy Bosu m which he said that after a notice of a motion has been given and admitted by the

Speaker, whether it is in order that the Member should withdraw it without the leave of the House? That is the point be has made. I think the practice here is that unless a motion is moved before the House, the Member can withdraw it on his own, Even in the case of questions, very often the Members withdraw their notices or even when the notices are on the order paper, the Member can say, 'I have no desire to put the question.' Therefore, this question does It is their pleasure and if, in their wisdom, they want to withdraw when there is still time, it is quite in order (Interruptions) dealing with the order of the House.

Now, my good friend, Shri D C. Goswami has raised another procedural matter. He referred to Rule 225(1) in which he tried to contend that unless the Speaker has given his consent, a question of privilege cannot be raised in the House I fully agree But here, we have not reached that stage where the Speaker or Litting in the Chair have decided to give consent or not.

Before the Speaker gives his consent to the matter which is sought to e raised in the House, he must himself be first satisfied prima facie that there is a case. He can do that in his Chamber by calling the members and calling for certain facts and then allow it to be raised in the House Or, sometimes, because of the atmosphere, the circumstances and the exigencies of the situation, that cannot be done and the members are full of the matter. The other day I had occasion to say that when the members are full of a matter, it is easier to pin a napkin to the mouth of the volcano than to try to stop them. When the members are excited, it is very difficult and now we are at that stage of hearing. The Members have made sufficient submission of their points whether I should give consent to this matter to be raised or not. Therefore that point of order does not arise; it does not hold good.

IMr. Deputy-Speaker1

Privilege

My good friend Mr. Shyamnandan Mishra raised an objection that when .a notice of a privilege question is raised against a particular person,-and, in this case the Prime Minister is involved-is it in order for the Minister of Parliamentary Affairs to reply on her behalf, of what happened or did not happen. Well, I think, we have adopted this convention that the Minister of Parliamentary Affairs very often speaks on behalf of the Prime Minister.

SHRI MADHU LIMAYE: Not on privilege matters.

MR. DEPUTY-SPEAKER I am not giving a ruling on it; I am saying about certain conventions and practices and we do this especially in the Business Advisory Committee. business of the House is aften decided by the Speaker in consultation with Leader of the House but the Leader of the House for all practical purposes is the Minister of Parliamentary Affairs because he comes and speaks presumably after getting the clearance from the Leader of the House.

SHRI SHYAMNANDAN Then abolish the office of the Leader of the House What is the need for ita

MR. DEPUTY-SPEAKER: In a que .tion of privilege, whether this is so or not, is a question that can be looked into and I will not venture any opinion and I will not give a ruling on that.

My another good friend Mr Shankar Dayal Singh was very technical. He drew my attention to rule 31 and he said that order of the House has heen agreed to and it must go on like that. If I had that power of a dictator to see that certain things are done in this House in a particular way, this Chair undoubtedly will be the most convenient place to sit on. You cannot run this House that way when things get hot. So, I think, that point of order can also be disposed of that ·way.

Now, with regard to the substance of the question, I think it is a much bigger question which cannot be decided offhand. Many of you have made submissions demanding for a parliamentary probe and you also have drawn attention to the notices of motions which are before the Speaker and myself. I have read them, Mr. Mishra has given, Mr. Madhu Limaye has given a very long motion given a series of things

श्री मधु लिमये : मेने तो कल दोपहर में दिया था।

DEPUTY-SPEAKER: Mr MR Jyotirmov Bosu also. And members from the congress two have withdrawn but six other Members are still there whose motions have been admitted And if my memory does not fail me, when this question came up, sometime early this week, the Speaker had said that we must have a special discussion on this matter. The Table can correct me if I am wrong

SHRRI MADHU LIMAYE. He was more or less inclined to that point of view

DEPUTY-SPEAKER I expect MR this question to come up sometime or other. It is a much larger question question, I would than a privilege only pose certain questions which come out of it for the consideration of the hon. Members. I have no doubt that before coming to the House with anything definite, it will be nice, it will be wise, for the Chair to call the Members and leaders of the House, to discuss this matter, how this thing should be done, naturally, because it is a very complicated question. And I think the Speaker said, he would call them and that some kind of procedure would be evolved, and things like that. Certain questions of course do arise This is a very important question. And I would go with the Speaker that this is a very important question. I would go with the Speaker that I am also very deeply and personally involved in this matter for the simple reason, of the accident of my being the Deputy Speaker of this House.

SHRI JYOTIMOY BOSU: Parliament functioning effectively and efficiently.

MR. DEPUTY-SPEAKER. Therefore, when the names of some hon. Members are besmirched because certain things have happened—the whole country is talking about it and everybody and the Press writing about it—if we are not concerned about it, who will be concerned? ... (Interruptions). Therefore, I feel that we must refurbish the image of this Parliament, we must restore the confidence of the people in this Parliament. Therefore, we must take this matter very seriously (Interruptions).

I am worried about one thing We very often talk about the privileges of the Members of Parliament. Of course, we should be jealous of our privileges But, privileges go along with certain duties and certain responsibilities.

SHRI S VI BANERJEE Why accident, Sir?

MR DEPUTY-SPEAKER Everything is an accident, as somebody said....

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA Deliberate choice

MR DEPUTY-SPEAKER Somebody said, birth is an accident, anything that happens to a person in his life is nn accident the only reality to everybody is death. And therefore when the names of the hon Members are involved, since we are the protectors and cu-todians of this honour. I for one do think that this matter has to be taken very seriously. I have -aid privately to many friends; let governments come and go, let anything happen to this country But as long as the Parliament functions and as long as the people of India have faith in this Parliament, that long the unity of this country and the stability of this country will remain.

SHRI MADHU LIMAYE. This is only a method of exposing wrongs committed by the Government.

2010 LS—2

MR. DEPUTY-SPEAKER: I only pose this question and this will be matter specially for discussion when you meet the Speaker-whether it is in keeping with the privilege, position and dignity of a Member of Parliament when it affects his duty as a Member of Parliament. It does not matter when he does something privately. That to a different matter. But. here, we are concerned with a certain Members of Parliament having exercised or alleged to have exercised their position and done certain things as Members of Parliament, and that is the whole question. When Members of Parliament in the discharge of their duties as Members of Parliament are involved, whether we should abdicate our authority and hand over everything to some other machinery outside the House-this is the question. This is the question which I feel, involves this Parliament and this is a matter which ought to be considered every deeply and would say that this has to be looked into in that light.

श्रो मधुलिमय: ग्राज श्राप हाउस श्राफ कामन्स के स्पीकर की तरह बोल रहे हैं, जिन्होंने 350 साल पहले राजा की इसी तरह से कहा था, श्रीर मैं श्राप को इसके लिए मुबारकबाद देना चाहता हू।

It is a great utterance, a historic

MR DEPUTY-SPEAKER Having said this. I would leave the whole matter there After all the Speaker has to decide this question. The Members have made their submissions. All these things are on the record. That wi'l be taken note of and I believe some consensus and some kind of wise decision will be taken.

Now, with your permission, can we get down with the business?

SHR! SHYAMNANDAN MISHRA: We hail it as a great ruling.

SHRI JYOTIROMY BOSU: We are indeed gratified at your ruling.

PAPER LAID ON THE TABLE

TYPES AND TUBES (MOVEMENT CONTROL) ORDER, 1974

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF INDUSTRIAL VELOPMENT (SHRI ZIAUR RAH-MAN ANSARI): On behalf of Shri C. Subramaniam, I lay on the Table a copy of the Tyres and Tubes (Movement Control) Order, 1974 (Hmdi and English versions) published in Notification No. S. O. 273(E) in Gazette of India dated the 29th April, 1974, under sub-section (6) of section 3 of the Essential Commodities Act. 1955 Placed in Library See No. LT-8364/ 74].

SHRI JYOTIRMOY BOSU mond Harbour). How can he lay it, Sir? It is in the name of Shri Subramaniam.

DEPUTY-SPEAKER I have MR allowed him

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam) The notification is dated 29th April 1974 Why have they taken such a long time to lay it on the Table of the House? No reasons have been given

SHRI ZIAUR RAHMAN ANSARI ! shall check up and let the House know.

12-25 hrs.

COMMITTEE ON PUBLIC UNDERTAKINGS SHRI R P. YADAV (Madhepura): I beg to lay on the Table the following Minutes of the sittings of the Committee on Public Undertakings:-

- (1) Minutes of the sittings of the Committee relating to Fifty-Report of Hindustan Photo Films Mfg. Co. Ltd.
- (2) Minutes of the sittings of the Committee relating to Fiftysixth Report on Indian Drugs and Pharmaceuticals Ltd.

12-25-1|2 hrs.

BUSINESS OF THE HOUSE

THE MINISTER OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS (SHRI K. RAGHU RAMAIAH): Sir, yesterday with the permission of the Chair I made an announcement that the Constitution Amendment Bill relating to Sikkim will be introduced on 2nd and taken up for consideration on the 3rd September. Opinions were expressed that the schedule is too tight. Having taken into account that I would like to say that the Government now intends to take up the consideration of the Bill on the 4th instead of 3rd September. The introduction of the Bill will be on the 2nd but it will be placed for consideration before the House on the 4th September.

12-26 hrs STATEMENT Re. CR.P. FIRING AT COOCH- BEHAR

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI F H. MOHSIN) Sir. August 27, 1974 around 2-00 PM a bus belonging to the North Bengal State Transport Corporation collided with a CRP van carrying CRP personnel in Cooch-Behar town An altercation took place between the CRP personnel and the local people who collected on the spot. In the altercation, one CRP Constable opened fire injuring two persons, namely Shri Shankar Chakrabarty, a teacher and Pradeep Roy, a student-both of Jenkın's School, Cooch-Behar. Chakrabarty subsequently succumbed to his injuries at 8 A.M on August 28, 1974

Immediately following the incident on August 27, 1974, the mob got unruly and went on a rampage. They set fire to the offices of Deputy Commissioner, Sub-Divisional Officer, Central Excise and Income-tax. District Court and S P.'s Office. The extent of damage is yet to be assessed fully. The unruly mob engaged in arson was dispersed by the police who resorted to tear-gas and firing. Curiew was imposed by the District authorities.

town, The cursew has since been lifted.

The C.R.P. Constable, who opened fire, has been placed under suspension and a case registered against him. 73 persons have been arrested for violation of curfew and arson. A judicial inquiry under the Commission of Inquiry Act has been ordered by the State Government to inquire into the incident.

The situation is under control.

(Dia-SHRI JYOTIRMOY BOSU mond Harbour): Sir, there are two very important things. One is that CRP has fired and killed two persons while they were not on duty on behalf of the State Government. Therefore, the whole responsibility comes on the Central Government In that context I would like to know what specific steps they have taken against the persons involved and withdrawal of CRP Secondly, even two representatives of the ruling party have given report to the Chief Minister of West Bengal that they fired indiscriminately and without any provocation.

The other day a judge of a High Court—if I remember right—said in a rublic meeting maybe in Rotary or Bar Council meeting, that the number of firings this Government has resorted to between 1947 and 1974, much more than the Britishers had done in two centuries. Sir, this CRP and BSF have "trigger happy" attitude. There is deployment of Army on the slightest pretext when the Government has totally failed to give the people anything in the shape of food, employment, shelter or minimum requirements of human life.

On the slightest provocation, this Government of the butchers resort to firing and indiscriminate killing. I want a categorical assurance from the Government here and now that they will withdraw all the Central forces from Cooch-Behar at once and, Sir, at the same time, they must come for-

ward before the House and give a clear, categorical reply by the middle of next week as to what steps they have taken against those persons who are acting on behalf of this Government of butchers and dishonest people.

THE MINISTER OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS (SHRI K. RAGHU RAMAIAH): Sir, he has used the word 'butchers'. It is very unparliamentary.

SHRI F. H. MOHSIN: It is very unfortunate that Mr. Jyotirmoy Bosu has chosen such unparliamentary and unsavoury words.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Sir, yesterday they came with an apology for hand-custing and punching on the stomach of a sitting Member of the House. Last week, Mr. Uma Shankar Dikshit came with a list of things and in one Session itself, the Home Minister had to apologise three times. This has how this Government functions.

SIRI F H. MOHSIN: I know Mr.

Jyotirmov Bosu, since a long time
being a Member of the House I canno expect better words from his
mouth

(Interruptions)

MR DEPUTY-SPEAKER. Order please.

SHRI F H MOHSIN . Su, the first question he has asked is that the CRP constable has fired not in the course of discharge of his duties and why no action has been taken by the Central Government. In this connection, I would say that we are yet to receive a detailed report from the State Government whether that incident happened in the course of discharge of duties by the CRP officials or otherwise. Unless we receive a detailed Government, we are from the State not in a position to say what action has been taken in this matter. Another point made by him is that the firing has taken place without any provocation. In regard to this matter also, I am unable to say anything in the [Mr. Deputy-Speaker]

absence of a detailed report from the State Government. We are expecting a report from the State Government on all these matters early.

(Interruptions)

These forces are kept at the disposal of the State Government for their internal security matters. When a law and order question arises, the State Government requests for the help of these armed forces of the Union. Then, these armed forces are kept at the disposal of the State Government. It is the responsibility of the State Government as to where they should deploy them and where they should utilise them. They are placed under the control of the State Government.

SHRI JYOTIRMENT BOSU. The firing did not take place under State Government officials' orders. These forece were not there at that time on duty on behalf of the State Government. What this gentleman says is far from truth. He is following in the foot steps of his Minister.

SHRI F. H. MOHSIN: He has made anoher very wild statement that the number of firings resorted to by this Government are much more than the number of firings resorted to by the British Regime I strongly refute this allegation. The firing is only resorted to as the last measure. Of course, I am not saying this to justify this kind of firing, as judicial enquiry has already been ordered in this particular incident. But, he has made a general allegation about the Government resoring to firing. Firing is generally resorted to only when it is much needed.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: You are creating Frankensteins.

SHRI KRISHNA CHANDRA
HALDER (Ausgram): The news had
appeared in the newspapers that two
persons were killed, one assistant
teacher and one student. The hon.

Minister has referred to this incident in his statement, but there is another incident linked with the Cooch-Behar incident, where Mr. Revathi Bhattacharjee, a CPM leader was murdered by Congress hooligans and one ex-MLA. Mr. Dinesh Dakuka was also seriously injured and he is now lying in hospital in a very precarious condition. This incident took place in Matabhanga in Cooch-Behar district. This incident is also interlinked with the other incident. The hon. Minister has conveniently evaded this incident. I would like to know from whether two persons were killed in the incident which occurred there and another incident occurred in Matabhanga also where one person was murdered and another was seriously injured

SHRI F. H. MOHSIN: About the Cooch-Behar incident, one Mr. Shankar Chakrabarty succumbed to his injuries, and Shri Roy who was a student is still in the hospital We have no reports that he is dead

SHRI JYOTIRMOY BOSU Matabhanga is another place

SHRI F H MOHSIN. Another matter has been referred to which is not related to the Cooch-Behar incident. That was the incident that happened at the Matabhanga town

Regarding this we have not received any authoritative information form the State Government, but from our own sources we have got some information, and I would like to state that there was a c'ash between the CPM and the Youth Congress workers at Matabhanga and in clash two leaders of the CPI(M), namely Shri Revathi Bhattacharjee and Mr. Dinesh Dakuka, ex-MLA had received stab injuries. The former namely Mr. Bhattacharjee succumbed to his injuries, and the latter was admitted to hospital. This is the in-But this does not relate formation. incident. This to the Cooch-Behar relates to the Matabhanga incident.

41 Suppl. D.G. (Genl.), BHADRA 9, 1896 (SAKA) Suppl. D.G. (Genl.), 42 1974-75 1974-75

12.38 hrs.

SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS (GENERAL), 1974-75

MR. DEPUTY-SPEAKER: Now, we resume discussion on the Supplementary Demands for Grants (General);

Yesterday, Mr. Noorul Huda had just started his speech. Today I am told that he has not come.

SHRI S. P BHATTACHARYYA (Uluberia): I shall speak for him.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I am talking of Mr. Noorul Huda.

But they still have their party's time. So, Shri S. P. Bhattacharyya (an speak.

SHRI S P. BHATTACHARYYA: I oppose these Demands for Grants which have led to more taxation. The amount involved in them is more than that in the general budget grant, thereby proving that Government's thinking is not at all rational. They could not imagine it a few months back.

Now, a new thing is happening. Why has this new situation come about? Has some extraordinary event occurred during this period? Certainly not, no new event has happened. Still, Government are taking certain drastic steps to deal with the situation. They are telling us that inflation has occurred in the world and it has occurred in our country also. So, they have to take some steps and some package schemes and various other things. Thus, we have further taxation, wage freeze and so many other things are still in the offing.

Taking for granted what Government are saying, let us see the figures in regard to the price rise and money wage in the various countries. The figures are as follows:

Country	,			Price rise	Money ways
				%	%
Italy				47.5	62.5
U. K.		•	•	45	67.5
Japan			•	40	87.5
West	Ger	many		37.5	40
Canada				35	45
France				32.5	62
Australi	а			30	5
USA		pero	ent	25	37.5
Ingia				125-150	22-30

You are thinking of being a socialist country. Among the capitalist countries, you are the worst of the lot. You must understand this. You are trying for a wage freeze. No other capitalist country has done so They are not so much anti-working class as you are. You are taking the steps to check and control the economic crisis in this way.

You do not see what they have done in the socialist countries, Soviet Russia, China and the East European countries where there is now no price rise, no inflation. But in your country inflation is a permanent feature.

Then you see the fall of money value of the rupee declared repeatedly by Government. In 1949 it was 100; in 1974 it has come down to 28P. Year by year it has been falling. These are the figures: 80.6, 78.1, 72.2, 79.4, 61.0, 57.8, 50.8, 46.7, 48.1, 46.5, 44.2, 42.2, 39.2, 31.6, 31.2, 30.8, 29.9, 29.9, and The value of the rupee is falling regularly and systematically. The reason is that the very economic system you are running is rooted in the devaluation of the rupee. The economy is run in the interest of monopolists, landlords and profiteers This has created this serious situation

[Shri S. P. Bhattacharyya]

in this country of poverty, unemployment, rise in prices and so on which you cannot avoid. It is not the Government that is deciding the economic policy of our country; it is the monopolists, landlords and profiteers who are deciding the policy of this country. The Government is compelled to carry on their dictates. This is the situation. So the country is going more and more towards ruin.

A few days ago there we saw that pressed by the profiteers, Government have been compelled to give up the take over of wholesale trade in wheat and rice. You have given a free hand to the traders to raise the prices. This is the position. So it cannot be believed—no reasonable person can believe—that this Government by these steps is going to solve the problem or check the degeneration of the economy of our country or save this country from this growing crisis.

problems can be Our country's solved but I do not think that this Government pressed by the monopolists, landlords and profiteers can solve our problems of unemployment and poverty. Yet our country requires a problems and our solution to these party and some other parties who are interested in the welfare of the peorepeatedly said that for a ple have solution radical land reforms real should be undertaken. Lands must be taken over from big land owners and such lands must be distributed among the landless poor agricultural labourers and Scheduled Castes and Scheduled Tribes people. Monopoly industries nationalised. must be Wholesale trade must be taken over Prices must be by the Government. controlled thoroughly. Then our industries can be developed and the initiative of our people will develop. People's problems cannot be solved by police forces but by making available to people goods and essential things at proper prices. There are ways to deal with corruption. We do not require goondas. . It is only the people

who can save this country and corruption will ultimately go. The Government is going just the opposite of what it must do; it does not solve the discontent among the people but is utilising the CRP and the Border Security Forces and goondas against the people. This is a warning. You cannot kill the people whatever force you can utilise. On the other hand, the oppressive measures will strengthen their minds. We shall galvanise all the forces which really believe in the cause of people. you will have to change yourself; or else people will compel you to do so. There may be other things but these are the basic things which need to be done. Imperialist conspiracy against the people of the country must end We must solve our problems we can solve them That is the correct way. not the way in which the Government are proceeding You are leading the country more and more to ruin and so I oppose this.

ARJUN SETHI (Bhadrak) In these supplementary demands for grants and additional sum of R. 352 07 crores is being asked for Rs. 125 crores subsidy on foodgrains to maintain 18sued public distribution system an additional amount of Rs. 75 crores for the Defence Forces improvements in the emolitdue to ments of Defence Personnel Rs. 152 10 crores for additional investments in the core sector of the Plan. hardly necessary to emphasise that the country is passing through a serious economic crisis that is unparallelled in the history since Independence. Inspite of criticisms by hon. Members opposite, various steps are being taken by the Government to overcome this crisis.

But it is no use blaming the Government without coming forward with concrete proposals to fight this problem. It is a fact that there are certain areas of uncertainty where distress is prevailing due to the vagaries of rainfall and recent floods. As a result, the suffering of the people are great. In this context, I like to

confine my remarks to the subsidy of shodgrains to maintain the distribution system. In Ordsa, we are haveing both flood and drought at the same time and the situation is very serious. It needs immediate attention to mitigate the sufferings of the people. I quote from a press statement made by our Chief Minister, Mrs. Nandini Satpathy, appeared in the Hindustan Times dated 28th of this month:

"On the prospects of the kharif crop, Mrs. Satpathy was sore that there had been a setback due to delayed rains in the beginning the season and the continuous dry spell for the last eight or nine days. As a result, she admitted, foodgrain prices had increased sharply during the past few weeks. The movement of foodgrains had in the last two days brought down the price of rice from Rs. 4 to Rs. 2.80 per kg. Earlier the same quality of rice was available at Rs. 1.20 per kg."

So, you can imagine situation prevailing there. Rice which was selling at Rs. 4 is now selling at Rs. 2.80. Last year the price was varying from 80P to 1 rupee. The price has gone up because of flood and drought in some districts of Orissa and the public distribution system is not quite adequate to control prices in the open market. The Hindustan Times correspondent also mentions how those areas where there are some industries and people are maintaining their livelihood depending on the industry are facing trouble, because the works being done in June and July are coming to a standstill. In this context, I would like to quote one or two sentences.

The Hindustan Times of 27th August,

"Can drought conditions adversely affect export of iron ore? In Oriesa they have.

As a sequel to the unprecedented drought, the price of rice in and around Paradip port had gone up to Rs. 3.60 a kilo, two and a half times what it was only two months ago. The loaders engaged by contractors to unload iron ore from ore trains and reload into trucks at the Barabanki terminus of the Cuttack-Paradip broadgauge link have deserted the work spots because the price of rice has overwhelmed their wage structure. As a result, some 50,000 tonnes of ore has already piled up at Atharbanki and a good number of ore rakes have been arrested by the jam thus caused."

So, people have left those places in search of food to maintain themselves. The same report says:

"Some 5.5 million people have been affected by drought and the rest by floods."

So, I urge that the Centre should increase the supply of foodgrains to Orissa because the existing supply to the various districts by the State Government is not sufficient. The districts of Balasore and Cuttack, which are being considered the granary of rice, have been affected by the recent floods and there is no prospect of any khariff crop unless the Government take immediate measures to provide seedlings and funds so that they can again raise khariff crop this year upto an extent.

We know how the price of fertilizer is rising from time to time. Because of this rising price the cultivators are not in a position to raise crops which will help them to maintain themselves for the rest of the year. So, I urge upon the Government to maintain the public distribution system in the rural areas of Balasore and Cuttack Districts, which have been effected by the recent floods. The Central allotment to the State should be increased so that the State Government can give more of weekly quota to the various panchayats the flood affected areas.

(Shri Ariun Sethi)

Demand No. 76 on page 25, refers to Rs. 2 crores for Paradip Port to meet the contractual obligations in respect of on-going works and for investing in schemes which are essential for deriving the benefits of earlier investment on works. Paradip Port has recently been connected with the railway network by the opening of the 100 km. Cuttack-Paradip railway link.

13.00 brs.

Sir, this is a press report of Statesman. I would like to quote a few sentences to show how they have neglected the Development of this Port and, as a result, the people in the areas which are inter-linked with this Port and who are mainly dependent on the Port to maintain their linvelihood are in difficulty. The press report says:

"This has reduced its dependence on road transport for carrying ores from the mining areas through the specially built express highway. The full benefit from the rail link will, however, be derived only after the railway network in the port area is completed and construction of the 175 km. Banspani-Jakhpara railway link to connect the mining areas with the east coast section of the South Eastern Railway completed

This line which connects the Paradip Port passes through rich mineral deposits and the hinterland connecting the Paradip Port. It further says:

"Paradip Port has a large hipterland of about 100.000 sq. kilometres rich in mineral resources and agricultural and forest produce. The National Council of Applied Ecconomic Research has made an extensive study of the possibilities of traffic through this port..."

Of course, the Minister of Railways has made a statement to construct immediately the rail link during the Current year so that these most backward areas of Orissa State are developed and the Adivasis and Scheduled Caste

people who are mainly dependent, inthese areas, on this Port, are able tomaintain their livelihood and they can be saved from any difficulty. But we find that there has been no work, no progress, done to construct therail link and connect it with this-Port so that the Paradip Port is developed for our National interest.

Another thing that I would like to say is that in the core sector, they have provided some amount for steel, specially, for the Rourkela Steel Plant. It is fortunate for us that the Government is taking measures to develop the Rourkela Steel Plant though they have not taken any decision to expand the Steel Plant. However, whatever things are prevailing in the Rourkela Steel Plant are not for the interest of the country. It is renorted, recently, in some News Weekly that the management of the Rourkela Steel Plant is hand in glove with certain private parties and, as a result, there have been some Tosses of revenue to the management. Therefore, I would request the hon. Minister to inquire into this matter as to whether the press report is correct, whether the management of the Rourkela Steel Plant is hand in glove with certain private parties so that the only public sector plant, the main Steel Plant, in Orissa does not suffer any more.

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur): Mr. Deputy-Speaker, Sir, I rise to oppose the Supplementary Demands for Grants. Once again the Government has come out with Supplementary Demands for Grants which are to the tune of Rs. 352 crores, which are to be spent under the various heads.

When we discussed the Finance Bill the other day, we made certain suggestions as to how resources could be mopped up without further fleecing the already fleeced people of this country. A race is going on between poverty and employment and I do not know who is going to win in the long run. Even after the so-called

anti-infiationary measures like Additional Wages (Compulsory Deposit), Compulsory Deposit (Income-tax Payees), restriction on dividend and so many things, the price has gone up, even after 6th July 1974. When the question was raised in the other House the other day, whether Government would take steps to freeze the prices, what was the reply of the Finance Minister? I quote from the newspaper of 7th August, 1974:

complete price freeze is 'neither administratively feasible nor economically desirable'. Finance Minister, Shri Y. B. Chavan, said in the Rajya Sabha today. He told Mr. S. K. Raha that the Government recognised the need to control price rise and was aware of the need for price control on cer-· tain sensitive commodities of mass consumption. However, a price freeze was not feasible due to a variety of factors. such as, continuing changes in the costs of inputs, the varying degrees of the essentiality of different commodities to mass consumption and of supply and demand elasticities for them, the need for an efficient distributive machinery for making price control effective and the effects on the long-term allocation of resources."

The Cabinet Secretary was talking to the pressmen when the Compulsory Deposit Ordinance came. thought that the Cabinet Secretary was making this announcement on hiseown when he said that there was no possibility of a price freeze. Now after reading this and after knowing the mind of the Finance Minister we are convinced, at least on this side, that Government has no desire to do it, they are unable to take any step. They have completely failed to take eny steps to freeze the price. This has become a one-way traffic. Government cannot mobilise resources by realising the income-tax arrears, wealth-tax arrears and other arrears and by unearth black money.

Only the poor man has to suffer at the hands of the Government because of the repeated failure of the Government; because of the failure of their wrong policies the poor man has to pay through the nose to buy his essential requirements, he has to dispose of his belongings. This is the condition that we see today. After introduction of the so-called measures which they have brought in the name of fighting inflation or inflationary trend, there was a semi-nar in Bombay. I read from the Hindustan Times of 12 August 1974. There are certain well known economists; we do not call them progressive: they are conservative in their approach, according to us. What dothey say? I am quoting from the Hindustan Times of 12 August, 1974.

"Unless effective steps are taken immediately, prices will go up by 25 per cent in the next 16 months giving rise to inflation in the farm sector and recession in the factory sector.

"This warning has been given by leading economists who participated in a seminar here on 'Inflation with special reference to the stagnation of production in agriculture and industry'.

"Prof. M. L. Dantwala held stagnation in the farm sector as the main cause of inflation. A rational policy in respect of prices of agricultural commodities and an effective system for their distribution alone could cure inflation."

"....None could ignore that commodity prices have shot up by 134 per cent since 1961-62."

134 per cent and this Government shamelessly comes to this House and asks us to vote for another sum of Rs 352 erores. Then, he said that the present policy favoured only the vested interests in the farm sector. This is what Prof. Dantwala says. He is not a believer in Marxism or Communism.

[Shri S. M. Banerjee]

Then 'rrocurement brices were enhanced in spite of a bumper crop'. The worst he said is: 'The Agricultural secutr is beyond economic discipline'. What happened? A particular price was fixed for wheat. In the market what is the price of wheat? In the open market it is Rs. 300 per quintal in Delm. Only last Saturday I was in Bombay. In Bombay rice is being sold at Rs. 7.50 per kg. Salt is being sold at Rs. 2 per kg. There was no question of getting butter or bread. Wheat was sold at Rs. 5 per kg. and in Delhi itself the price of wheat has gone up from Rs. 1.50 per kg. in the open market to Rs. 3 today. Likewise, the prices of all commodities have gone up. I say they were very clear that this is the responsibility of the Government. wholly what happens? As on 30th August 1974 cereals prices have gone up by 41.9 per cent compared to last year. The prices have gone up by nearly 42 per cent Still, we have to believe that the Government is taking measures by which they are able to fight inflation We have to believe that the prices are coming down and we have to believe that this Government are trying to stabilise the prices and if anybody objects to that and if anybody starts a dharna etc., MISA is there to arrest these persons. Here is the hon, Minister, Shri K R. Gathat MISA who demanded should be used against smugglers. He is a Member of the Council of Ministers. But MISA is not used against smugglers and I am sure the Government is not going to use MISA against the smugglers. They thinking over it! A strike was to take place of the railwaymen in the month of May. On the 6th April itself a secret circular was issued by the Home Ministry to the Railway Ministry that MISA should be used against the leaders of the railway employees and it did not take any time to take a decision and a final decision how the strike has to be trushed and how the leaders are to be arrested under DIR and MISA but the not the smugglers

and others who are holding the country to ransom despite the pleas of the Minister. Forget for a moment that we are shouting hoarse. But, here is a Minister who said that MISA should be used. Still, the Government has not made up their mind. Should I take it that the Government is unable to do it? The facts are cruel and are really very bitter because it is said here that the greatest or the biggest smuggler in the country whose name I do not want to mention and it has been mentioned many times, paid hearly Rs. 1 crore during the UP elections to the Congress Party. Whom he did pay I do not know. But the story goes like this that he wanted to pay Rs 2 crores provided the Prime Minister received the money but since it was received by somebodyelse on her behalf, he paid only Rs 1 crore But even if 25 per cent or 5 per cent of that is true, what 18 going to happen to this country? All of us talk of corruption but who is going to stop corruption? Unless the corruption is stopped, the prices will not come down Nearly a thousand Communist Party volunteers have marched for a dehoarding campaign but the Police gets the information first and they inform the hoarders And where is the hoarding, Sir? We were told wagons will be unloaded whether it is foodgrains or any essential things and will be sold through suner market I am yet to see these things being sold in the super market, although the time has elapsed

MR. DEPUTY SPEAKER: Did you pay a visit there?

SHRI S. M. BANERJEE: I have been visiting; my friends are there. Smuggled things are sold but not these things. What happens is this. These businessmen pay demurrage and yet they make fabulous profits. Mr. Qureshi made a statement the other day and we asked, did you take the permission from the Prime Minister, because you ere making such a statement. We congratulated him, That was an offer which was unconditional.

But yet this thing is not implemented. This is really what has happened.

On the 21st August, the position was this. The prices of essential goods rose up by 30 per cent in Bombay. Here it was 22 to 27 per cent. This is the position in the last week of August.

MR. DEPUTY SPEAKER: Some say

SHRI S. M. BANERJEE: I am not an economist, it is for you to judge.

MR. DEPUTY SPEAKER: Some sav

SHRI S. M. BANERJEE: I would hke to quote what my friend Daniel Latifi a member of the Kotnis Committee had to say after visiting China He has said that except kcrosene oil which is dearer in China than India all prices of essential commodities have not increase there since the last 10 or 15 years Somebody may say this r due to regimentation, due to communism and all that We are an independent country and we have got even individual freedom But freedom is in this sense namely freedom to cat or not to eat, freedom to die also in the pavement without any coffin This is exactly the freedom we are having There was sharp rise in the prices of essential commodities. Gram prices rose by 15 to 20 rupees; pulses 10 to 27; edible oil 45 to 100 and sugar by Rs. 50 a guintal. This is the position as on 22nd August 1974.

The Vanaspathi manufacturers' association of India has issued a press note today to the effect that if the oil price is Rs. 9400 per tonne, vanaspathi cannot be produced in bulk at Rs. 8000 per tonne. At the same time, they have also stated that the vanaspathi industry has no decisive influence on oil prices. Even when the industry has not been buying much oil since Jane, oil prices have risen by Rs. 1500 per tonne. They have conveniently forgotten that during this time when the vanaspathi industry has been

on production strike desigte the substantial increases given by the Government from time to time, how much of refined oil and margarine has been sold in the market by the same industry. They are on production strike. They did not produce this. Instead they produced margarine where the profit margin is much more. The paw material is the same. Take for example the biggest of the vanaspathi menufacturers Hindustan Lever Limited. While the industry is claiming heavy losses in case normal level of production is maintained, in fact, the figure quoted for the total vanaspathi industry as a whole is Rs. 8.39 crores per month, it is curious to note that during 1973-74 Hindustan Lever Ltd. has remitted abroad a sum of Rs. 146 02 lakhs by way of dividends does not need a very fertile imagination to note from where this kind of rrofits could have come if the picture painted by the Vanaspathi Manufacturers Association would have been realistic They say they are not making profits: they force Government to increase the prices and so on. But the position is that they remitted huge amounts to foreign countries. It is more than Rs 150 crores in one year Yet they want us to believe they are unable to manufacture at this rate Hindustan Lever was selling only as much as 125 tonnes of margarine in a year in the northern zone and for the last several months they have been producing and selling at the rate of 200 tonnes per month. Also it would be pertinent to note that margarine contains as much as 15 per cent moisture. This has been stated in the Times of India dated 26-8-74. This means, roughly, a margin of Rs. 2500 per tonne.

At the same time. Hindustan Lever, apart from their normal sales of 'Refined Oil' and 'Bulk Margarine' has launched what they call "Hima Cooking Margarine" in the big way in Bombay and other places in 1 kilo pack which increases the margin of profit manifold not only because af the water contents but because of the pricing at which the smaller packs are marketed.

[Shri S. M. Banerjee]

Sir, whenever anything has been given out, union representatives have been victimised by them because they think that the information about them has been given out by them. Information was given by me to the Chief Minister of U.P. for raiding the Ghaziabad Factory of Hindustan Lever. This was found to be correct. This has helped them to unearth 85,000 tins of dalda. As soon as this news was conveyed, Shri Bahuguna acted on it. I should congratulate him for this. He also found that my information was ocrrect. I do not know whether he will be able to retain his job after this. This has exactly happened. I would request the hon. Minister to take this opportunity of immediately nationalising this Dalda industry. This should be immediately taken over. I do not know whether they have the courage or conviction to do it.

Now I shall come to the various Demands. There is a provision for payment of subsidy to Food Corporation of India under Demand No. 8. That is to the tune of Rs. 1.25 crores. What are they doing? Are you able to-probe into the working of it? Their working is very unsatisfactory. many charges have been levelled against the officials. The entire matter is gone into by the C.B.I. What happened to this? I want to know from the hon. Minister why is it that the prices in the open market though show an upward trend yet the Corporation is unable to take stock of the whole situation? You will realise that in rural areas everything is so costlier and the moment the name of the Food Corporation is mentioned, it seems there is something wrong with this Corporation. I would request the hon. Minister to tell something about this. I would particularly like him to tell us something as to what happened to the serious charges that have been levelled against the Hindustan Lever.

Now 2 come to Demand No. 19-Deferme Services-Army. It has been

stated that a classification tribunal is needed to implement the decisions of the Pay Commission. May I tell you in all humility that as regards the entire piece workers who are the backbone of the defence industries-the soldiers in the front and the piece workers in ordnance factories-who are involved in the manufacture of Vijayanta Tanks and the Gnat in Hindustan Aircraft Factory, uptill today the Pay Cimmission's recommendations have not yet been implemented. There are different categories of employees in the Defence who are being paid less. No coordination has taken place in this regard. For example a supervisor in Defence establishment gets Rs. 80 or so whereas in the railways, according to Pay Commission's recommendations, the supervisor gets a pay of Rs. 425. Why is there such a great disparity? We would request you to see that a classification tribunal is appointed for doing this work. Though it was pointed out I am sorry to say that-Shri Shukla is not here but my friend Shri Patnayak is hereso far no classification tribunal has been appointed in Defence. It was agreed from the Defence Pederations side that a classification tribunal with a high court judge on it The Department of Personnel came m the way and they said nothing doing as it will have a repercussion elsewhere. Now a repercussion committee has been formed! I do not know whether, if such a committee will be formed here. it will have repercussion in the Railways as well as in the P & T. I request the hon. Minister and, through him, the hon, Deputy Minister for Defence. Shri Pattanayak who is extremely helpful to the Federation. to convey our feelings to the Minister for Defence that once a decision is taken about this, for appointment of a classification tribunal. he should not go back upon it.

Then. I come to Demand No. 38— Other Expenditure of Ministry of Finance. This deals with the Additional Emoluments (Compulsory Deposit)— Ordinance, 1974 promulgated in July 1974.

Sir, I wanted to say these Ordinances provide for compulsory deposit of additional wages for a period of one years and half of the additional allowances for two years. The Minister has announced one instalment of dearness allowance from 1st April, 1974; another instalment is due from June, 1974 and, I understand, that the third is due from August, 1974. Sir. each additional instalment costs the exchequer Rs. 50 crores. But our suggestion for cheap grain shops for giving subsidised foodgrains was never conceded. They are prepared to give Rs. 50 crores every two months. Furthei, Sir, the second instalment dearness allowance which is due since June but has not vet been announced should not come within the mischief of the Compulsory Deposit Ordinance as the Ordinance came m operation only in July.

Then, I come to demand No. 48 regarding CRP. May I tell you, Sir, in this very House I raised a question under Rule 377 about the sad and tragic death of a Naga girl who was raped by CRP personnel. I placed photostat copies of the statement recorded by the Political Assistant of the Deputy Commissioner of that place. I submitted in original the medical report. The hon'ble Speaker was kind enough to send the same to the Home Minister but so far no statement has come from the Home Minister. Sir she was taken forcibly and locked in a particular room and two people started giving blows on her thighs. She had to open her thighs and she was raped. Sir, no statement has come from the Home Minister I am very thankful to the Press that they displayed the whole news very nicely. Today itself we were told how in Cooch-Behar the CRP personnel killed a teacher. We also know what the CRP are doing in Calcutta and Durgapur. We want the CRP to control the law and order situation but it should not be brutal and so brutal as to murder and rape everyone. Are we not diverting from our own statement that we are safeguarding the interests of the Naga people? Is it the protection we are giving? No girl is safe in Nagaland.

SHRI P. G. MAVALANKAR (Ahmedabad): Sir, I would request you to give guidance in this matter because serious and specific complaints have been made and the things have also appeared in the Press. I would request you to tell the Minister that he should come out with a statement; otherwise what is the use of our making complaints here?

MR. DEPUTY SPEAKER: This question is not raised for the first time. I think, Mr. Banerjee raised it earlier. There are two ways of doing it. One, the person sitting in the Chair at the particular time if he feels it is necessary he can direct the Government to come forward with a statement.

On one occasion I remember, where there were very serious charge against similar atrocities on a large number of Naga girls in Manipur, was in the Chair and I directed the Minister concerned and he came forward with a statement. He admitted that these things had happened; he regretted that these things had happened He said that these were isolated cases indulged in by certain individuals and he also said that the Government had arrested those guilty persons alleged to have committed the crime and that actions were taken I think that had a very good, healthy effect, not only m other parts of the country, but in that part of the world as well, which is very sensitive. Now, in this case, as the matter was raised when I was not in the Chair, I would not issue the direction. But, I should suppose, Government should take note of these things, because if no statement comes forward people can draw their own inferences. One inference is, Government hears these things and does not care, and therefore, people can do anything they like. It will be in the interest of the Government to see what is the real thing, whether these are true or not and if these things

[Mr. Deputy Speaker]

had happened, to take action against those people. But, if they just keep sulent, then, of course, things go on like that and the country reacts in any manner it likes. That is all I can say.

SHRI S. M. BANERJEE: Sir, in this case, I got the photostat copy and I got the original medical report. With all these documents, I made a statement. I never make a statement unless I am sure because they are very sensitive matters, they are very delicate matters. I am told by the Lok Sabha Secretariat that the Speaker, in his own wisdom has sent those papers to the Home Minister and that he has asked the Minister to make a statement. But. I can tell you that CRP goes killing people unabated and unchecked. What happened in Calcutta? Yesterday, my hon, friend Jyotirmoy Bosu read out a telegram from Mr. Utpal Dutt, one of the renowned artists and dramatists. He has enacted certain plays which are the envy of the country. We can be proud of that. If he exposes certain aspects of the Government's policy with regard to CRP and other things. why should we be allergic to that? Are we having a jungle law? That is why, we requested that a statement should be made. About CRP I would request that a statement should be made by the Minister. Sir, today, a statement was made by Shri F II. Mohsin on the incidents in Bengal, Cooch-Behar. What happened there? My heads are hung in shame.

Sir, I am coming to the last itemDemand No. 65—Irrigation and
Power—Power schemes. It has become a matter for us to laugh. Sir,
the power employees throughout the
State have given a suggestion, the
Federation has given a suggestion,
how this could be improved. This
has not been taken into consideration. Shri Rao was there. He was
one of the experts, but, unfortunate-

ly, he is not there in the Ministry now. Now, Mr. K. C. Pant, who is a good friend of mine, is in charge of this Ministry. I would like to know. how this power shortage is likely to be overcome. What is happening today? If there is an agitation in the textile mills, power is restored to them and it is taken away from the jute mills. What is happening in the jute mills? Suddenly, they realise that power has been taken away from them and there is an agitation: power is restored to them. The same power is being given everywhere. Power supply should be increased.

Let us take the case of Rihand Dam in U.P I do not know whether the dam was constructed there at all; not on Bhakirati but on the river called Renu, where there is no water. The Britishers thought that that was a cort of sanatorium a good place for picnic or for shooting and recrea-We have spent the entire money simply to have a dam. power station was established there to suit the convenience of Mr G. D. Birla who is the Chairman of the Aluminium Corporation known as HINDALCO Electricity is given to them at concessional rates. In this company, there was an agreement between the workers and management; this has been there for 25 years. Mr Bahuguna wanted to do something about it. Initiative was taken by the Chairman of our party, Shri S. A. Dange. He said 'We should terminate this agreement; this is an old agreement; why should we have it? He wanted to do something. Immediately, there were certain instructions from the Centre 'Don't clash with Birla; let him enjoy this benefit that he has got; only ten years more; let the people suffer for ten years.' The agriculturists do not get electricity at that rate. They have been clamouring for reduction of the price, but Government have never done it.

In Calcutta, all the industrial units have practically come to a standstill

Police pickets were posted at several places. Army, B.S.F. and the State Police units started patrolling the because of power shortage. In U.P. hardly 48 per cent of them are getting electricity. Many of the units are working with only one shift

So, the power crisis has to be settled, and it has to be settled by having more projects and by having more projects, including nuclear power projects. The hon Minister was very happy when there was a nuclear explosion. We were also equally happy But what has happened after that? Why can we not use it for manufacture of power and for producting power? Unfortunately, even these power units which are already there are not functioning properly. There is surplus capacity but it is not being utilised. Why is that so? We want to know the reasons for this

No doubt, this money will be granted to the Government or to the President in the form of these Grants. It will go into the hands of the Ministers nd Ministries and a gain nothing will be done and the whole thing will be squandered em quite convinced of this that Government are not serious about austerity at all. They talk about austerity. But how are they practising it? They have recently announced that 25 per cent telephone connections have been cut off there are so many unnumbered telephones in the stock exchange Everybody ha e' n telephones, but with no number on them. But by way of telephone bill I have to pay Rs. 10,000, I do not know how t comes to so much, but I have to pay Rs. 10,000 by way of my telephone bill, Rs. 5000 for the Kanpur one and Rs. 5000 for the Delhi telephone. I do not know whom I telephone so much But anyhow, I have to pay it. Even if I do not contest elections, my son will have to make the payment But these people with these unnumbered telephones do not have to pay anything at all. How they do it is something I do not

know. Every telephone exchange has six telephones without numbers. Nobody can go there because it is a protected place or a prohibited area. What is being done, in regard to those telephones? So, I wonder whether Government are serious about austerity at all. They want Rs. 352 crores and they want to fleece the people. But are they really prepared to cancel many of their tour programmes? Mr. Ganesh may kindly tell me how many people had gone on foreign trips during 1973-74 in the name of delegations. The country may go to dogs but delegations must go What is the utility of all this" What is the amount of foreign exchange which has been spent? am told that the maximum number of people have gone abroad. moment somebody has some approach he feels he must go abroad So far as I am concerned, I am unable to go even to a hill station because it does not suit me since I am a cardiac asthma patient, and so I have to stay at Kanpur where the climate remains the same But I find everybody else wants to go abroad for various items of work; some are going for defence purposes, some others are going for this purpose or that purpose and so on On some pretext or the other they must go And why do they go really? They go because somebody's daughter is there or somebody's son is there I agree that it is very important that everybody should see his daughter and son If I had a daughter or son abroad I also would have definitely gone But the question is whether that should be at the when there is cost of the country foreign exchange shortage and then our foreign exchange resources are dwindling

In conclusion, I would request the hon Minister to kindly tell us squarely and frankly whether the prices are going to come down or not If the prices are not going to come down, then there are bound to be agitations. When there is an attack on the working classes, when there is a war on the working classes by

[Shri S. M. Benerice]

means of this compulsory etc., I assure you that MISA or no MISA DIR or no DIR, the workers are not going to keep quiet but they are going to be on the march; under the banner of the AITUC they will march and will explode this myth it is only when wages are increased that the prices increase. Rather it is the other way about; prices increase, we want the wages to be increased. We shall with this slogan, despite the and the DIR. It is for the hon, Minister to convince us that they are serious about bringing down the prices. But I am sorry to state that the Prime Minister and her Government have miserably failed to bring down the prices. Instead in the name of fighting inflation, they want to fleece the workers. I would submit, Sir. that they are not fighting inflation. Inflation is on the increase. Prices are on the increase. They are not fighting inflation at all, but they are cover only their actually trying to failure and miserable failure at that, under the clock of inflation. It May not come to that.

This reminds me of what happened in China during the last stages of Chiang Ka,-shek's regime. I simply shudder to thing of it. Let us not repeat that here. Let us bring the hoarders to book I have yet to see one hoarder being given our exemplary punishment. If in Delhi one hoarder is openly shot dead, things will improve. But they know that they can get away. If Shri Ganesh is against the smugglers, they know that Ganesh is not the main person. There are persons over him They know that over Ganesh and Kartik there is Durga Mata. They know that the Durga Mata is not the Mahishasur Mardini. They know that if they do puja to the Durga Mata, she will foregive them. We want the Durga to act. Ganesh has acted. We want the Durga to act. Only that can bring about the salvation of the country

शी हरि सिंह (खूर्जा) उपाध्यक्ष महीवय बाज देश में बाबिक संकट है उस संबंध पर विजय पाने के लिए हमारी सरकार ने वड़ी गमीरता से बहत ही कारगर उपाव मंतर करम उठाए हैं। हमारे दिल मंदांलय के मंत्री श्री के बार० गणेश जी ने ती तस्कर ब्यापार करने बालों, टैक्स बबाने बालों या नाजायज श्रम्धा करके रुपया कमाने वालों पर बड़े जोरों से बारों तरफ से प्रहार कर दिया है जिस से तम्करी करने वाले लोग तिलमिला उठ है बीर उम का ननीजा बहन प्रच्छा निकला है। करोंड़ों रुपया हिन्दूस्तान क ग्राधिक खजाने में पहच गया है ऐसे लोगों के पास मे जो खब तक हिन्द-स्तान है धन दीलन के साथ खिलवाड करते थे। में इस ग्रवसर पर माननंत्य मनी श्री गणेश जी को दिशंप तीर से मदारकवाद देना चाहना ह भीर भागत करना चाहना हूं कि उन का यह प्रयत्न इभी बहादरी धार हिम्मन के माय जनने रहना चाहिए। इस में हिन्द्म्नान की साणिकः स्रार पाली हानत मे वडा परिवर्तन ब्रातगा, ऐसा मेरा यकीन है। यह भी सहा है कि अगर इस नरह के प्रथमन पहले से किए गाए होने तो यह गर्भार सकट जो हमारे सामने द्याया है थह न स्राया होता। मैं छिपे धन पर छाये सारे अने के प्रयन्तें हो सराहना बरना हं।

श्राप श्रानने हैं कि हिन्दुस्तान के श्रापिक ह में से, एन की श्रापिक नीति में हिन्दुस्तान की खुशहाली में तरस्की करने का जा श्रव से बड़ा राधन है वह है हिन्दुस्तान के किस्पानकी हालन में नरस्की लाने का श्रवर हिन्दुस्तान के किसान की जिया, में पिबान श्राप ती जो हमारा करोड़ों हाया फूड डिस्टू व्यूक्त या फूड सन्मिरी के तीर पर खबं करने के लिए मागा गया है उस की अहरन न गड़ती। किसान को जब भी अहरन ही उस के लिए गार्रटिड बाटर मिलना चाहिए, बीज मिलना झाज चाहिए, श्रवही साद मिलने चाहिए, लेकिन खाद का भाव बहुन ज्यादा हो गया है। साव किसान हिन्मत नहीं कर पा रहा है कि 105

रूपये प्रति कटटा के हिसाब म यरिया खाद लें कर वह इस्नेमाल करे। एक वही पंचीदगा कास शल खड़ा हा गया है कि ग्राज कारन का किसान खाद का इस्तमाल कर गान करे ध्यार किसान इस महरारे व न का इस्तेमाल नहीं करना है ते देवाबार हा क्या हान होगा में इस का ग्रन्दाजा नहीं लगा मकता है। ग्रगर हमारी सरकार का सीवा नरीका हो कि हमारा सबसे बीतटादा काम किमान को मागा ग्रीर उन की ब्रावण्यकतानों को पूरा भरता है तो में दाव के साथ कहना चाहना ह कि हम बाहर से ग्रन्तय मगान की जरुरत नहीं पड़गा। भ्राज बुनियादी सवाल है वि हिन्द्रनान की नवरचना की नीति, उस के प्राम्नाम गाबा मे सही नरीवे से पहचने चाहिए। धाज विमान ग्रगर ग्रन्छ। बीज, ग्रन्छ। फटिलाइजर या इन्से-विटमाइडम् भीर दूसरी दबाइया इस्तमाल करना बाहता है तो उस ये लिए भी पानी की बड़ी मावश्यकता यहती है। हमारे देश मे पारी का माकल इतजाम नहीं हो पाया है। 10 फीसदी किमानो को भी अभी तक हम पानो नही दे सके है। ग्रात्र किमान पान' के लिए तहपता है लेकिन दूनरी तरफ बाह वी महानारी फैनी हुई है। प्रति वस करोड़ो स्पये की सम्पति बाह में नष्ट हो जाती है तो यह जा बाह भी सुखे की बीमारी मानाना भानी है भी? हम मुक बन कर देखन रहते है उम बोर्ट विस्तत बर उस को हर करना चाहिए । नदियो के किनारों को मनवन करना चालिए धार जहा उस में मरस्मत तथा ग्रन्य उपाय किए जान क सवान है उन्हें पुरा करना चारिए। स बचने के जा नरी वे है पूर्व उचना मिलने पर उन को इस्तेमाल करना चाहिए जिसमे बाट से बचा जा सके। साथ ही साथ गावा के घदर माज टयवेल और विजली की सनस्या बनी हुई है। भाज फियान के दयब्रवल का बिजली नही फिलती है लेकिन सिनेमा चलने रहते हैं। धनाज और मुसे की धलग करने वे लिए बिजली नहीं मिलती है और महरों में मनोग्जन धौर दूसरे व्यर्थ के कामो के लिए

विजली मिलती रहती है। में बहना चाहता ह कि मने ही जहर ग्रन्धेरे मे रहे या मनोरजन मे कमी थ्रा जाए लेकिन किसान की विजली की माग को सधरा न छोडा जाए। अगर हिन्दू-म्तान में खशहाली लाना चाहते हैं ना किसान क लिए हमें बहुत मजबती के साथ काम पडगा। उस का हर तरह की सहलियन देती पडगी। स्राज शहरा में जाइए तो हर शहर म निर्माण का कुछ न चलता नजर प्राप्ता । इस से होता है कि कुछ काम हिन्द्रनान म हो रहा भीर यह देख कर प्रसन्नता होती है। लेकिन इन निमाण कार्यों की तरफ जाना चाहिए। गाबो की नरफ इनका रूख होना चाहिए जिस मे गावों के यह महस्म करें कि उनकी तरक्की के काम वैकिये जा रहे है। उनके यहां भी योजनाओं का प्रभाव वीख रहा है।

मधी पिछले दिना प्रधान यजी के बादेशा-नसार एक केश प्रोगाम महक बनाने का चला था। जगह जगह उस ने बोर्ड भी लगे धीर देहातों मे उम से बडा सनाय हथा भीर बहुत सारी महकों का निर्माण भी हुमा । मगर वदिकस्मती में वे सडके प्रध्री रह गई घौर टट गई। देहान के लोगों को लाल च द्या गया। उन बनी बनायी सहका का नोड कर सपनी जमीन मे मामिल वर लेन की एक लडाई बहा चल पडी है। पहन सडक बनान के लिए जमीन लेने की लराई चना ग्रव इसरी नडाई सडक को तोड कर अपनी ज्योन म शामिल करने की चल रही है। नो केश प्रायाम के लिए भी कुछ रुपया सवश्य दना चाहिए नही ना जा भी किया र राया काम हे वह मिरटा में निल जाएवा और फिर से नया रुपया लगा कर नये मिर से काम को शरु करना पड़गा जिन देश में भच्छी मडक होनी है उस देश वा निर्माण ग्रन्छा माना ज्ञाता है। इमलिए ग्रगर कोई प्रच्छी सड़क मपने यहा बननी है एक नया हिन्द्रस्तान बनता है।

सप्लीमेट्री ग्रान्ट के घटर फाजियों के लिए जो ऐडीझनल बेतन विध की मांग की गई है उस

[बी हरी सिंह]

का भी में समर्थन करता ह। मुझे खशी है कि सेना में काम करने वाले नौजवानो के लिए बेतन वधि की सिफारिशे मजर कर ली गई धीर उस के मनुसार उन को वेतन-वृधि देने का इतजाम भी कर लिया गया । लेकिन एक बाद से जरुर कहना चाहता ह कि जो धादमी फौज मे 35 वर्ष के बाद रिटायर हो जाता है उस के पहले सरकार उस को तरह तरह की चीजी को सिखाने के लिए टेनिंग देने में पैसा खर्च करती है, लेकिन रिटायरमेट के बाद एक तो उस का जीवन दूभर हो जाता है, दूमरे वह घर म्रा कर बेकार बैठ जाता है। एक तो अपनी सारी जवानी वह फीज मे बिता देता है भीर जब बापस भाता है तो उस के लिए कोई काम नहीं होता है, तो मेरा निवेदन है कि वैकों में तथा ग्रन्य इसी प्रकार की सस्याग्रो मे जा गाउं इत्यादि की सविमेज होती है जिन के हाथ मे प्रोटेक्शन का काम होता है, उम मर्विमेज मे मिलिटरी के टेलेट का इन्तेमाल किया जा सकता है और उस मे उन के लिए एक कोटा नय किया सकता है कि मिलिटरी के रिटायर्ड ग्रादमियो को इन सर्विसेज मे इतनी जगही पर लेगे। इसी तरह दूसरे बहुत से टेकनिकल काम भी मिलिटरी में वे सीख कर आने हैं। तो अलग से जो मिलिटरी के रिटायडं लोग है उन की भी आधिक सहायता देने के लिए एक मिशिचत कोटा रिजंब करना चाहिए। ग्रगर कोई मिलिटरी का बादमी अपना उद्योग धन्धा कायम करमा चाहता है भीर उस मे वह मिलिटी के एक्विपमेट का कोई सामान तैयार कर के देता है. उस मे सहायता पहुचाता है ता उस के लिये भी श्रलग मे फड रखा जाना चाहिए और वह उस को रुपया देना चाहिए। इस से हमारा फीज मे काम करने वाला नवयवन खण ही नहीं होगा बल्कि हिन्दुस्नाम के जो हथियार है उन मे मेंहफ मिफ्यंसी भी लाएगा। आप जानते है कि हमारे यहां जो टैक की चादर है और फायर गन्स है ये स्टील के होते है और एलाय अर्थात मिले हुए स्टील के बनाए जाते है भीर एलाय स्टील भव भी वाहर से झाता है।

उस में करोड़ो इपया विदेशो म कला जाता है। उसके लिए एक हैदराबाद में झीर एक अन्य स्थान पर एलाय स्टील बनाने की योजना तय हुई है। लेकिन पैसे के अभाव में वह योजना खटाई में पड़ गई। मैं झाग्रह करना चाहता हु कि यह जो करोड़ो रुपया बाहर चला जाता है उसे बचाने के लिए हिन्दुस्तान में ही एलाय स्टील बमाने के लिए हिन्दुस्तान में ही एलाय स्टील बमाने के लिए रुपया जूटाना चाहिए और उस योजना को कार्यान्वित करना चाहिए। उस से हम हिषयार के मामले में सेल्फ-सफिथ्यन्ट हो सकेंगे और प्रति वर्ष जो करोड़ो रुपया एलाय स्टील को मगाने में लगाना पड़ता है वह भी बच जायेगा।

हमारे जिले वुलन्दशहर मे नरोरा वं स्थान पर एक एटामिक एनजी बिजली केन्द्र वम रहा है, जिस के द्वारा वडी मात्रा में विजली > पैदा करने की योजना है। लेकिन दर्भाग्य मे उम पर धोमी गांत से काम चल रहा है, जिम रफतार में काम होना चाहिए, उस रफतार में नहीं हा रहा है। आप जामते हैं यदि यह बिजली बेन्द्र बप गया नो हिन्द्रस्ताम की तस्बीर बदलने मे यह बिजली केन्द्र यहत महायता करेगा। इस केन्द्र के बनने में काफी समय लगने वाला है, लेकिन भाषिक सकट की बजह से यदि रुपय का ग्रभाव चलता रहा तो यह काम बहुत लम्बा समय ले जाएगा। इस लिए में मदी महादय से गुजारिश करमा चाहता ह कि इस केन्द्र के लिए एटोमिक एनर्जी कमीशम को ग्रधिक माता में धनराशि दे ताकि यह जल्दी पुरा हो सके भीर इस के द्वारा हमारा भाषिक सकट भी दूर हा बोर विजली पैदा कर के हिन्द्रस्ताप के कियानों को सहालयत मिल सके।

मेरे जिले में एक लखावटी कृषि कालिज है —यह कालिज उत्तर भारत मे सब से पुरीना कृषि क. लिज है। इस कालिज के पास बहुत सम्पत्ति है, मैदान है, जिल्बा है भीर सारी महुलियते हैं लेकिन यह विश्वविद्यालय नहीं बन पा रहा है। इस कालिज से निकले हुए विद्यार्थी सारे हिन्दुस्तान में कृषि विभागों में काम करते हैं। इस लिए मेरा अनुरोध हैं कि इस कालेज को शीघ्र से शीघ्र विश्वविद्यालय बनाया जाए। क्योंकि उत्तर मारत में जिला बुलन्दशहर खेती का बहुन बड़ा केन्द्र है, एक तरह से हिन्दुस्तान की ग्रेनरी माना जाना है——इस-लिए ऐसे क्षेत्र में इस कालिज का विश्वविद्यालय बनाया जाना बहुत ग्रावश्यक है।

दिल्लो के बन्दर जो दुध की मप्लाई होती है उस का 50 प्रतिगत दुध, खोया ग्रोर दुसरी चीज मेरे जिले से ग्राती है, नेकिन दुर्भाग्य से दुध ना इतना वडा काराबार मरे क्षेत्र मे होते हुए भी वहा दुध में डिव्न नथा दुध की अन्य बस्तक्षों के बनाने का काई कारखाना नहीं है, मेरा तात्पर्य है कि प्रोमिम का काई सारखाना नही है। केन्द्रीय मरकार का ध्यान में इस ग्रार ग्रानियन करना चाहता ह-बहा नित्क प्रोमेसिंग का प्रोजैंक्ट शीध में शीध बनाया आना चाहिये, दिल्ली से 30 मील की दुरी पर दादरी क्षत्र में इस कारखाने को लगाया जा सकता है। इस से दिल्ली की माग परी होगी और किमानों की ग्रामदनी बहेगी ग्रीर वह इलाका खशहाल हागा। दिल्ली की जनता को बाज दूध की जो किल्लन उपनी पड़नी है, वह दर दा अधिगी।

मेरा जिला— ब्लन्दशहर - फोर घार गेहूं के लिये बहुत प्रसिद्ध है। इस जिले के 42 हजार प्रादमी बाज फीज मे है इन के भलावा हजारों प्रादमी बार्डर सिस्पोरिटी फोर्स, रिजर्ड पुलिस धोर दूसरी फार्सज में काम पर रहे हैं। यहां कोई एं के गाव नहीं है जिस के प्रादमी फीज मे न हों। खाज भी हजारों के तादाद में हर महीने फीज दूरा भेज गये पैशन के मनिप्राइंग थाने हैं। एं में स्थान पर मिलिड़ी कार्निक वताने की यहत आवश्यकता है। वहां इस प्रकार के कालिज के लिये हर प्रकार की सुविधा है- प्रकर्ध क्लाईमेट है, हर तरह की सहुल्यन जुटाई वा सकती हैं। मैं मस्वी महोदय से निवेदन करना चाहता हू — जहां धाप क्रिकेस के लिये मारी महूलियतों की व्यवस्था कर रहें है वहा बुलन्दशहर में एक मैनिक स्कूल ध्रवश्य स्थापित करें जिस में हिन्दुस्तान कें मही टेनेंट के आदिमियों को आगे धाने का मौका मिल सकें। आर फौज को सुद्रह भी बना सकें।

इन शब्दों के गाथ मैं इन सप्लीमे-ट्री डिमाण्डम का गमबंन करना ह।

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam): Sir, we are considering the Supplementary Demands for Grants, which have been presented to this House after much discussion, after much persuasion on our part and after a clear ruling from the Chair But I am sorry to note that the purpose of our demand, and the spirit of our demand. has not been followed in this matter The budget is an integrated process. The mere presentation of a Finance Bill or consideration of the Supplementary Demands for Grants, which will result in the Appropriation Bill, while no doubt they form part of the budget, they do not form part of the entire budget. The budget is an integnated protess, and these are only parts of the budget The budget has got a significance of its own If we refer to May, Parliamentary Practice t has been clearly enunciated the financial statement familiarly known as ludget is made when the Minister has completed his estimate of anticipated income and expenditure for the coming year in which the Chancellor develops his views of the resources of the country, communicates his calculations of probable income and expenditure and declares whether the burdens upon the people are to be increased or diminished" Therefore, it is is not a question of taxation or expenditure; it should be proceded by a review of the eresources of the country, of the economic These should not be left situation uncorrelated There should be a nexus between the two, and that is what is being brought in the bud[Shrı Sezhiyan]

Mere presentation of the Finance Bill, entailing the additional taxes to be collected, or giving the Demands for grants wherein they are going to get the sanction of the House for the expenditure, that alone will not constitute the budget Kaul and Shakdher talk of "the financial business culminating in the passing of the Appropriation and Finance Bill" Therefore, the Appropriation and Finance Bill do not constitute the entire budget, though that is a statutory requirement, as far as Parliament is concerned. So, at least when they come next they should bear this in mind. When the Speaker gave his ruling. he said very clearly and categorically "We cannot deny that this is a sort of supplementary or additional budget" Therefore, they should give all the respect which they show to a regular budget.

For example, in this case, if we go through the Supplementary Demands for Grants, the position has not been made very clear. If it is a regular budget, the budget review would have made the position very clear. Here we have to correlate one with the other to find out the sorry state of affairs of the public finance, of the country It is not revealed as a regular budget would reveal

For instance, we have to make a calculation to find out what 15 the deficit. The additional expenditure 15 Rs 352 crores. In regard to DA increase it is stated in paragraph 3.

"As a result of the continuous rise in prices there may be a substantial increase, even on the basis of the current price level, it is estimated that a further amount of Rs 112 crores will be needed"

Probably, they will come with another Supplementary Demands for Grants At this stage, you are envisaging Rs. 112 crores. But even that is not reflected in this Demand. The additional expenditure envisaged in this statement is Rs 463 crores By way of additional taxes you will get

Rs. 123 crores and you are very sure of making economies to the tune of Rs. 200 crores. So, the real deficit comes to Rs. 140 crores. There is already a deficit in the budget that was presented in March That means. if all the calculations go rightly, if they are able to make economies to the tune of Rs 200 croses, the deficit will be Rs 263 croies Even that is not brought out very clearly in the statement of the Minister But in this calculation they have not taken into account how much the DA will go up and how much escalation there will be in the cost of the core projects. They have been saying again and again that these are anti-inflationary measures Whatever it means, I do not know. They tax, they spend and they do not give us a regular Budget This is the slogan that is given again and again

14.00 hrs.

About the deficit part, I am very Previously, the Government have been having the source of revenue from the taxes The taxes formed a major share of the revenues of the Government But now-a-days, other factors are also entering, like and deficit financing have become alarmingly significant part of the resources of the Govern-My first apprehension and question is what is the control this Parl:ament has got on the quantum of deficit financing? At the time of the Budget, they leave some portion uncovered If they indulge in deficit financing only to that extent I can appreciate. There is the tacit approval of the Parliament to that extent But when they announce a deficit at the beginning of the year when the year comes to an end, it becomes threefourth or four-fold After saying, at the beginning of year, that Rs 126 crores is the deficit financing, at the end of the year if it becomes a fair accompli that they indulge in deficit financing to the tune of Rs 800 crores. where is the sanction for the balance of Rs 674 crores? They do not take the approval of Parliament This is also an indirect taxation. This is a

surreptitious way of increasing the resources of the Government without due sanction from the Parliament.

They can say one thing. They will say, "whenever we spend, the expenditures have been sanctioned by the House" It is correct But if you extend the logic, then you do not take any sanction, any authorisation, for the resources You can simply pass only the expenditure said and, for the receipts side, you can do it in your own way The parliamentary procedure has evolved over the twin objects that, on the one side, an authorisation should be obtained for the additional taxes, for the taxation that is, for all the receipts of the Government and, on the other side, for the expenditure of the Government also the Appropriation Bill The lacuna is there as far as the deficit financing and the loans are concerned

The deficit financing with a flood of currency or bank credit is going on, on an unimaginably large scale Often times the House is completely kept in the dark as to what is going on the shape of the printing of the currency In the United States of America, if I remember very correctly, they put a ceiling on the loans The Treasury Department cannot inculge in the amount of the deficit financing to the There is a level that they want. ceiling put If they want to go beyond that one, they should come before the House to get a sanction In India, we do not have that one Therefore, any first plea will be that the deficit financing should also be taken on the same lines as a receipt As the Parliament is made aware as the Parhament's sanction is being obtained, in the same way whenever they exceed the gap that has been indicated in the Budget, they should come before the House and get the approval of the House before they indulge in more printing of the currency or bank credit

About the loans also, I want to say one thing There also, we do not have any control The Parliament does not have any control on the loans raised by the Central Government. Of

course, the States have to apply to the banks and get these things. The Central Government does not have any limitation set upon itself. This is not In the Commona new situation wealth of Australia, the Federal Government is not allowed to take loans in whichever way it likes In Australia, there is the Loan Council which is constituted by the membership of the Prime Minister of the Commonwealth and the premiers of the States Each State has got one vote, but the Commonwealth has got two votes and a casting vote All the applications for loans, whether by the Centre or by the States, are sent to this particular body-Australian Loan Council, It scrutinises them and then only loans are allowed to be raised The rates of interest, quantum of loans, all these things are scrutinised and decided by this Federal Loan Council In India. all the economic policies that are experimented at the Centre usually make an enormous impact, have a disastrous effect, on the State economy, but the States are not consulted, the States are not taken into confidence whenever loans are raised, whenever foreign assistance is raised, whenever deficit financing is indulged in the manner in which this is being done. Hitherto, this has been going on in an unquestioned way In a federal economy, I would suggest, the Parliament's consent and approval should be obtained whenever deficit financing is indulged m beyond the level indicated in the Budget In respect of loans also, it would be better to have a Federal Development Bank or a Federal Loan Council to scrutinise the loan applications of not only the Centre but also the States.

Nowadays much is heard about seizures and searches. I should congratulate Mr K R Ganesh on that. Of course, I am yet to see the results. Still, an enthusiasm has been created in the country that black money seizures and searches are paying some dividends I do not know what will be the quantum, but some hopes have been raised, some expectations have been raised.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA (Begusarai). A Sindhi widow has been caught.

SHRI SEZHIYAN Whether she is a widow or not, whosoever has the black money, that has to be unearthed

MR DEPUTY-SPEAKER They have seized gold bar weighing about 40 kilos

SHRI SEZHIYAN With the present appratus, with the present way of thinking, in spite of all his enthusiasm I do not know how far he is going to succeed

If you see the Wanchoo Committees report there they have calculated the tax-evasion every year, from 1961-62 they have calculated the tax-evasion every year, in 1961-62 it was said to be Rs 700 crores a year And when they came to 1968-69, the annual taxevasion had escalated to Rg 1400 crores, the annual tax-evasion doubled from 1961-62 to 1968-69 All these powers that are now being uti lised by Shri K R Ganesh and that are being given publicity now were there in all those years What were the results of the seizures and searches during that period? If you see page 16 of the Wanchoo Committee's report you will find that over the years 1964-65 to 1970-71 in s en years with all these powerful weapons that the taxation laws have provided them. the Department has been able to unearth only about Rs 7 crores in seven In each year they were able to unearth only Rs 1 crore whereas the tax evaded has been going up from Rs 700 to Rs 1400 crores every year this is evaded tax al ne. I am not talking about black money as a Every year the new money whole that should have been tested and touched, the money that has evaded the nets of the Income-tax Department has been Rs 700 to Rs 1400 crores. And they have beer able to unearth only a crore of rupees a year with all the best intentions and the best laws. Now, Mr Ganesh is having very high hopes and I would not

dampen his hopes. I would welcome if it is going to give the expected results.

Here, I would suggest something because it is a thing which was stated by the Public Accouts Committee also The Public Accounts Committee made a categorical mendation about self-employed persons like doctors, engineers and advocates whether the Tax Department would take the pains to go into the medical register and find out how many doctors are there in the metropolitan cities of Bombay. Delhi Calcutta and Madras and how many advocates are there on the rolls and how many of them have been paying taxes Even this basic information, I do not know, whether they have collected by now When this question was put to them two years ago- this has been reported in the report alsono statistics were available in the Department and I understand that in the year 1964-65 actually a scheme was formulated for bringing self-employed persons like doctors advocates engineers into the fax net and notices were also served to a few of these categories But I am sorry to understand from reliable sources that the scheme was later dropped and the notices issued were withdrawn besides the officers who issued such notices were also made to tender apologies to those to whom notices With all responsibility were issued I am making this charge This thing did not happen at the time of Mr Ganesh Still he will go through the files why in 1964-65 a circular was issued categorical notices were issued but those notices were withdrawn and the scheme was dropped very unceremoniously

I have got only one more point. As per the Demands for Grants that have been raised before us, certain amounts have been spent on new schemes withdrawing amounts from the Contingency Fund of India. This has not received much of the attention of the House I would like to know more information about them because the

information given in these Supplementary Demands has been very scanty and in some places, it is missing. During his reply I hope the Minister will clarify these points,

On page 11 it has been stated that a vehicle belonging to CRP was involved in an accident and the Motor Claims Tribunal passed an award in satisfaction of which a total amount of Rs. 17,000 has to be paid and amount was met from the Contingency Advance. I want to know when this amount fell due because that is a significant date. I may quote some of the rules wherein any amount withdrawn from the Contingency Fund of India, as it has to be given under the Contingency Fund of India Rules, supplementary estimates for all those expenses or advances shall be presented to Parliament at the first meeting of the session immediately after the vance was made So, there is a rule governing these advances and it cannot be postponed indefinitely. would like to know the exact dates on which the amount was withdrawn from the Contingency Fund of India and when the amount has been paid in satisfaction of the decree.

Then on page 13 they have paid a sum of Rs. 3,58,000 together with interest in satisfaction of an Arbitrator's I would like to know when award the Arbitrator made the award and when the amount was withdrawn. Also on page 15 they have made a payment in connection with a suit filed by an employee of Dadra Nagar Haveli. I would like to know when withdrawn exactly the amount was from the Contingency Fund are very vital matters and I hope he will be able to get all these particulars before he replies. This amount should have been recouped at the next session of Parliament. I can quote earlier decisions also. These amounts Contingency withdrawn from the Fund should be recouped during the financial year itself and it cannot go beyond the financial year, because, there is no provision in the Constitu-

tion or rules to make these recoupments legal or constitutional. On this point I would like to know from the hon Minister when he replies. Thank you.

SHRI BISWANARAYAN SHASTRI (Lakhimpur): I raise to support these Supplementary Demands for Grants. The country is passing through a very critical period, very difficult economic period. There is an unprecedented price rise of all commodities. cause of the price rise is for the experts to find out and for the economists to analyse.

As a layman I can say that the shortage of production of all the commodities is the root cause of the un-On the precedented rise in prices. other hand with regard to what is produced, we find, there is no proper machinery for distribution. There are two things. One is means of production and the other is the machinery for distribution. If we concentrate on the means of production the production can rise. Now there is some increase in production of certain commodities but there is no proper machinery for distribution of the commodities. It is also one of the causes of the price rise. I do not know whether the price rise is the cause of inflation or inflation is the cause of price rise. Perhaps both may be inter-linked. There is one thing which is important. The bureaucratic system of administration is responsible for many things. The bureaucracy is one of the things which creates such artificial difficulites. I would like to refer to certain instances in this connection. Take the case of salt. Salt is a common man's commodity. It is consumed by every man in our country. It is consumed in every part of the country. It is used by the poorest of the poor in country. But what we find is salt is not available in Assam and certain parts of the country at a reasonable price. Salt is sold at Rs. 1 or even more per k.g. in There is no shortage of salt production. It is known to everybody.

(Shri Biswanarayan Shastri)

In Gujarat and Saurashtra and in other parts of the country salt is produced in abundant quantities and there are good stocks. The Salt Commissioner sitting in Jaipur does not allot salt to different States at the proper time. If he does not allot salt, wagons are not provided by the Railway for movement of salt. It is rather a conspiracy between the Salt Commissioner and the Railway Board to create artificial scarcity in the country and allow the merchants to reap the benefits of this artificial scarcity.

Similarly the Food Corporation of India is creating various difficulties. In the eastern region of the country they do not give the proper price for the food grain which they are procuring. On the other hand they allow them to rot on the open space. After some time it is declared that they are unfit for human consumption and they sell it in the market. Unscrupulous traders purchase it They mix it with other foodgrains and sell them at higher prices for human consumption. That is the role of the Food Corporation. As soon as the Corporation of India will be abolished, I think, that the situation will improve so far as foodgrains are concerned. I am so bitter against this organisation that I have no language to condemn ft.

There is black money in the country and attempts are being made to unearth this black monely. For the last few days we are reading in the newspapers about certain raids. In certain premises gold and lewellery and hard currencies were recovered. It is a good attempt. If do not know how long it will take place and how far this attempt will succeed.

In this respect, Government should follow a persistent policy of not only raiding the premises here and there but they should also try to find out the manner or method by which the black money is going into the hands of a particular concern or particular

persons. If by the method evolved you cannot arrest the menace of black money or by raiding premises here and there if you cannot arrest it, then, according to my opinion, the Minister will have to consider this problem very seriously and try his best to stop this menace of black money by some other methods.

As regards smuggling, so far as food grain is concerned, we have seen it in eastern region of our there to Foodgrains are smuggled some other part of the country. The machinery is there to stop it. that does not act. If smuggling is not stopped, naturally, the price also increases. Rice is passing through two different ways one by trucks and the other by carts. For one cart load of rice if Rs. 100 to 200 is paid, as gratification to men on check post, these foodgrains can go to some other place; and if Rs. 200 to 400 per fruck load is paid, then that truckload of rice is allowed to go to some other place. I do not know what the government machinery is doing to stop this. This is the common experience of the people. Therefore, I ask the Government to be vigilant and more strict and to keep an eye particularly on persons who are entrusted with the work to stop this smuggling. is no other way of stopping There is shortage of foodmenace. grains-rice, paddy and wheat-in our But what steps are taken country. by the Government to increase the production. I am concentrating my attention particularly on the eastern region of our country. It is common-Assam, Arunachal knowledge that Pradesh etc. are the victimis of the fury of flood. This year flood affected mostly this part of this coun-Every year, flood damage runs to crores of rupees. Damage is caused to cash crops like jute and other crops like paddy, wheat etc. And if that damage caused to a small State like Assam runs to Rs. 30 to 40 croresannually this year that is estimated at Rs. 50 crores-how can our country prosper? We are an integrated country. If a particular state is lagging

behind as compared to the other parts of the country Government should pay special attention for the development of that part of the country Eastern part of the country was neglected during the British regime phically this being far away from centre of the country, not much attention was paid to this part of the country even in past independence period Take for instance irrigation power These are two essential items for the production of crops What is the facility of irrigation in this part of the country? If you take the total mileage, in Assam Meghalaya Tripura or Manipur, the area of irrigation will not be more than 10 miles Altogether. that is. 01 per cent of the total area of the cultivable land

But in other parts of the country it is 10 to 12 per cent and even 14 per cent whereas in the Eastern region it is 01 per cent which is irrigated. It is true there is abundance of rains but it is only in certain months. In the winter season without irrigation facilities crops cannot be grown. Therefore, I urge upon the authorities that irrigation facilities should be provided in the Eastern region of our country.

So far as power is concerned there is only one hydel power project which caters to the needs of the States of Assam, Meghalaya, etc No new unit is coming up there. Unless there is a big hydel project the requirements of this area cannot be met If power is not available no new industries will come up I am informed by a very knowledgable person of the Electricity Board that if the industries are coming up according to schedule by 1977-78 the electricity for domestic requirements will have to be cut and if domestic supply is maintained, industries cannot come up So, this as-So far as pect must be looked into Brahmaputra is concerned it has great potentiality and if its waters can be harnessed it will solve many of the problems and supply power to not only Assam but to entire India Nothing is impossible in the present day of

science Therefore, this aspect should also be considered.

Lastly, I want to refer to certain things regarding border dispute border settlement. There is some dispute or difference of opinion in demarcation of boundaries Assam and Meghalaya and Nagaland also between Assam and Arunachal Pradesh These differences will have to be settled Unless they are settled quickly they may grow into bigger dimensions For instance, in the northern part of Assam that is, in the district of Lakhimpur by the side of the highway, land belonging to Assam is claimed by the Arunachal Pradesh On the other hand cer-Government tain buildings constructed by the Arunachal Pradesh administration are claimed by other people which are presumed to be within the territory of Assam I therefore, urge the Home Ministry particularly to settle this dispute or difference of opinion very quickly for the benefit of all the people and to the satisfaction of all the people living in that part of the country

Lastly, I would like to say there is some complaint about the CRP, CRP people are there Their services are required when there is law and order trouble in different parts of the country. But most of the CRP personnel do not understand the language spoken the people of that area where they are posted It is a big disadvantage. Therefore out of mis-understanding there is some irritation between CRP people and the local people on petty matters For instance, when a CRP person goes to the market to make some purchases he does not underthe language and picks up stand After that to take revenge quarrel other friends of that person come and a big conflict takes place my experience I would urge upon the Government to see that such inciin fuure. dents do not take place There have been more such incidents, which have been referred to by my friend. I do not want to repeat it. [Shri Biswanarayan Shastri]

What I would urge upon the Government is this Of course, CRP is necessary I do not dispute it But, there should be greater discipline in the administration of such forces If a person indulges in mischief, he should be punished severely, he should not be allowed to go scot free

With these words, I support the demands.

श्री मध् लिमये सब से पहने खाद्य मन्सालय की मागो के बारे में मुझे यह कहना है कि दिन प्रति दिन मार्वजनिक वितरण व्यवस्था पर खर्च बढता चला जा रहा है। ननीजा यह हो रहा है कि किसान से या व्यापारी से ये जिस दाम पर झनाज लेने हैं उसको वितरित करपे सनय उसका विकी मत्य बहुत ज्यादा रखा जाता है। यह मही है कि जब देश में ग्रभाव रहता है तो व्यापारी मनाफाखोरी करना है लेकिन जब ग्रभाव की स्थिति नहीं रहती है तब इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि व्यापारियो का जो वितरण का खर्चा है मन्दारी खर्चे की तलना में नगण्य रहता है। क्या वजह है कि सरकार ग्रपने खर्चे को घटाना नही चाहती है? इससे किमाना तथा मधारण जनता दोनों में बहुत झमन्तोष है। झापको मबिमडी इसलिए देनी पडती है क्योंकि प्राप वितरण व्यवस्था पर जो स्नापका स्रधिक खर्चा हो रहा है उसको स्नाप घटाना नही बाहते है। इस देश के जो बड़े बड़े अर्थ शास्त्री है. प्रो० धनजय राव गाडगिल थे. उन से भी मैंने बात की है भ्रौर उन से वता है कि भ्राप दिनिया भर की बात करने हैं लेकिन जो बनियादी चीज है कि मग्नारी वितरण व्यवस्था बहुत प्रधिक खर्चीनी है, उसकी बोर आप ध्यान क्यो नही देते हैं? मैं आप से स्पट्टीकरण चाहता ह कि कौन से कदम माप उठाने जा रहे हैं भाने वाले दिनों में जिससे मैंनेजरी और वितरण का खर्चा घटे और जनता को सस्ता मनाज मिले?

मै सदन में दार बार रोक्सर विरुद्ध के माजिन का साल उठा चुका हु लेकिन मुझे कोई जवाब नहीं मिला। उस दिन चड़ी-पाठ्याय साहब ने कहा कि माननीय सदस्य के द्वारा जो धारोप गिए गए हैं उन से मैं साफ इन्कार करता हु। लेकिन जब घापने उन को पूछा कि सदन यह जानना चाहता है कि पश्चिम बगाल में कौन से ऐसे विशेष कारण थे कि जबकि उड़ीसा मे 80 रूपया प्रति टन मिलिंग माजिन या तो उनको बढा कर पश्चिम बगाल मे 200 रूपया प्रति टन रखा गया ? उसके बाद प्रो० चटोपाध्याय ने कहा कि इसकी मुझे कोई जानकारी नही है। जब किसी चीज की जानकारी नहीं है तो श्रीपचारिक हम से भाप एलीमेशज को बाटने का प्रयास क्यो करने हैं? क्या इस-लिए कि भवबारों में भापकी बाते छाँ? इसारी तो कभी छपती नही है। कल ही . ग्राप देखे कि मालवीय जी का लम्बा चौडा भाषण छपा है भीर यहा मदस्यों ने जो कहा उसमें से एक वाक्य भी किसी ग्रखवार में नही ग्राया। मारूनि का मामला मैंने कल किया। इन्होने कहा था कि 900 टन स्टील मारूति को दिया गया है। इस में से 500 टन ब्लैक में बेचा गया है धोर कम से कम दस लाख रूपया इस पर उभाया गया है। जो बाने कही जाती हैं ग्रगर वे सही सही ग्रखवारों में छपे तो ग्रापकी मरकार हिल जाएगी। निलिंग माजिन के बारे में इतनी दफ बात को दोहराने के बावज़द भी यह सरकार चुण्पी क्यो साध रही है। 7 करोड़ 20 लाख रूपया पश्चिम बगाल की मरकार रोलर मिल्ज को क्यो देना वाहती है? मैंने यह प्रारोप किया है कि 25 लाख रूपया कैश मे श्री मिद्धार्य शक्र रेको मिला है। कुछ काग्रेसी सदस्यो ने मुझे बनाया है कि दो सौ रूपया माजिन नहीं उससे प्रधिक है। मैं नहीं जानता हु यह। यह बात उन्होंने भाज कही है। अब द्माप इसका जवाब दिलवाएगे या कोई निर्देश इनके लिए जारी करेगे ? हम लोगों ने जो कट मोशन्त दी हैं वे पहले से सर्व्यूनेट

हो बुकी हैं और इन लोगों को पहले से तैयार हो कर धाना चाहिये। धाज बस्का जी बैठें हैं। यह हमारा बड़ा भाग्य है। तकरीबन एक डेढ़ महीने के बाद वह मेरे द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रक्तों का जवाब देने वाले हैं। यह बड़ी खुकी की बात हैं। लेकिन फूड मिनिस्टर का क्या हुआ? पहले वाले फूड मिनिस्टर राष्ट्रपति बन गए हैं। उनके बाद फूड मिनिस्ट्री में कोई मिनिस्टर है या नही है? धगर है तो जवाब क्यों नही दिलवाया जाता है?

जहा तक मुरक्षा मन्त्रालय की मागों का सम्बन्ध है एक बहुन गम्भीर वान मैंने कानपुर मी भ्रो डी के बारे में कही थी। वह यह थी कि 550 किलो बास वहा में चोरी हुआ और इस चोरी में वहा के अफमर जामिल वे। बाद में कहा गया कि कानजो पर दिखाया गया है कि माल वारिंग मिना लेकिन वापिन नहीं मिला, किमी ने किजियल चैंक नहीं किया है। जहर में एक पागल मादमी था उसको पकड़ कर लाए और उसको गोलों से उड़ा दिया और कहा गया कि चोरो के गँग का यह सदस्य था। इनने दिन इस आरोग को लगाए हो गए है नेकिन कर्ण ज्याव ही नहीं हो। हा नहीं मरकार इननी वेगमें हमें हो गई है।

जहा तक सुरक्षा दला का मवाल है जो हमार प्रफसर और अवान है वे बड़ी तकलीफ मे रहते हैं। फावंड एरियाज मे उनक लिए मकान नहीं है। वहा मकानो का न होना, यह बात तो मेरी समझ मे आती है लेकिन जब किसी अफसर को फावंड एरिया के बाहर किसी जगह पोस्ट किया जाता है और जब वहा उसके रहने के लिए मकान का इतजाम नहीं किया जाता है तो उमको ऐमा लगता है कि उसके साथ बड़ा अन्याय किया जा रहा हैं। बहु फावंड एरिया मे सब कुछ बरदास्त करने के लिए सैवार है। लेकिन दूसरे इलाको मे तो उनके लिए घरों का इतजाम होना चाहिए। सरकारी नियम और कानृत के अनुसार किसी भी मकान मालिक से उसकी बमीन या मकान को सात माल के लिए रिक्विजिशन किया जा सकता है लेकिन ग्राजकल चुकि मकान के दाम, कस्ट्रक्शन कास्ट बहुत बढ़ गई है इसलिए कोई भी मकान मालिक सात माल के लिए मकान देने के लिए तैयार नहीं होता है। भाप तो नियम के बंदे हैं। नियम में परिवर्तन कीजिये और तीन साल के लिए देने के लिए तैयार हो ता नीन साल के लिए श्रीर दो साल के लिए देने के लिए तैयार हो तो दो साल के लिए ले लें। इस तरह से नियमों में परिवर्तन करके कुछ तो बाप फीजी ग्रफमरो के लिए इतजाम करे। मैं मैरीड परमनल के बारे में कह रहा ह। सरकार को ग्रपने मकान बनाने का कार्यक्रम भी हाथ मे लेना चाहिए।

मिग एयरकापटन के बारे मे कुछ दिन पहले मैंने यह कहा था कि उनकी रिपेयर भीर ग्रोवरहाल के लिए तकरीबन 70 विमान रूस मजे गये हैं। मली महोदय ने मुझ से कहा कि 70 नहीं, उसमें कम भेजे गये थे। मैंने पुछा कम माने कितने ? 69. 68 या 65 ? कोई जवाब नहीं स्राया। सीर सगर साप मिश विमान बना मकते है, खुद तैयार कर सकते हैं तो ग्राप उसको रिपेयर नहीं कर सकते हैं? क्या रूस के साथ आप ने कोई ऐसी सीकेट ट्रीटो, मीकेट ऐपीमेट किया है जिसके तहत मोवर माल रिपेयर के लिए माप को वहा भेजना पड़ता है ? इस प्रश्न का कोई सीघा सादा उत्तर नहीं आता है। यह बात मेरी समझ मे ही नहीं भाती है कि जो देश मिग विमान तैपार कर सकता है, खुद बना सकता है क्या उसमे उसको रिपेयर करने की शक्ति नहीं है? भीर एक समय धगर मत्तर सत्तर विमान आप रूस मे रिपेयर के लिये भेजेंगे धीर देश के ऊपर ततकाल कोई हमला करेगा नो हम लोगो की क्या स्थिति [की मच् लिमये]

होगी ? लेकिन इसके बारे में भी कोई जान-कारी हमें नहीं वी गयी।

इसी तरह डी॰ जी॰ ए ॰ ऐंड डी॰ के द्वारा सुरक्षा मजालय के लिए बहुत सारा माल खरीदा जाता है स्टोसं एक्विपमेट वगैरह, उसके ऊपर डिफेंड कसल्टेटिव कमेटी में मैंने सवाल किया था कि क्या यह बात सही है कि जो सप्लायसं यह माल डी॰ जी॰ एस॰ ऐंड डी॰ को देते हैं उसमे इनका साठ साठ फीमदी प्राफिट का माजिन हैं । सचिव को यह स्वीकार करना पडा था कि यह बात सही है। एक प्ररसे से मैं माग कर रहा हू कि इसकी जांच होनी चाहिए, प्राफिट माजिन की, लेकिन कुछ नही हो रहा है। तो सुरक्षा मजालय की ग्रोर से मुझे उम्मीद है कि ग्राज इन बातो का खलासा ग्राप करेगे।

श्रव मैं भ्रपने मित्र श्री देवकान्त बरुधा जी के मंत्रालय पर बोलना चाहता हुं मौर सब से पहले मैं जिक्र करना चाहता हूं इस वात का कि हमारे नाविक दल को इनके द्वारा हायर विस्कोसिटी वाला तेल दिया गया। उसके बारे में एक अरसे से मैं सवाल उठा रहा हू। ये कहते हैं कि हमारे पास ग्रलग इंतजाम नहीं या तेल की सप्लाई करने का (व्यवबान) . . . हा, पुरानी बात हो गई, दो साल, तीन माल की बात है, तो मुझे यह बताया कि मदास रिफाइनरी के पास कोई अलग इतजाम नहीं था इसनिए तेल सप्लाई गलती से हुई होगी। खैर, यह तो ठीक है लेकिन मेरा मुख्य प्रश्न है जिसका जवाब ये भी नहीं देते और मुरक्षा मंजालय भी नहीं देता। श्री सी० बाई० राव का एक टेलेक्स मैंने पकड़ा श्रीर श्रापकी खिदमत मे वेश किया। उस टलेक्स से माल्म होता है कि इंडियन स्टेंडर्ड इंस्टीटयूट की सम्मति के बिना बाप ने 90 सी एस विस्कोसिटी वाले तेल की सप्लाई चालू कर दी। इतना ही नहीं उन्होंने अपने टेक्स के द्वारा 100 विस्कोसिटी

वाला तेल बानू करने की खूट दी है। वह टेलेक्स मैंने आप को दिया है। अब मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस अफसर की आप ने सस्पेंड किया? क्योंकि उस ने दो गलतिया कीं। एक तो इंडियन स्टेडर्ड इंस्टीटयट की इजाजत लिये बिना ही इस प्रस्ताव को कार्यान्वित किया भीर दूसरा, जो भाप का निणंय ही नहीं हमा था, 90 विस्कोसिटी का निणय हमा या तो उन्होने 100 विस्कोसिटी के बारे मे उन्होंने टेलेक्स कैसे दिया ? यह मैं एक सीधी मी बात कह रहा ह। लेकिन ससद के अधिकारों का कोई मतलब ही नहीं है ? यह जो गलत काम करने वाला प्रफसर है क्या उसको मस्पेंड करके उसकी जांच की गई ? पब्लिक ग्रंडरटेकिंग्स कमेटी में मामला भेजा गया? मैंने इन लोगो का चेहरा तक नही देखा, न मैं कभी अफ सरो से मिला ही ह, न कभी मैं इनको चिट्ठी लिखता है। मैं मंत्रियों के माफंत ही सारे काम करता है। तो मेरा उसमे कोई व्यक्तिगत देख नही रहता। यह सच्ची बात है, उसे समझ लीजिये । जब भी में कोई मामला यहा पर उठाता हु किसी मती या अफमर का ती में रा उसमे कोई व्यक्तिगत देव नहीं होता। मैं केवल राष्ट्रीय हित में कहता है। कभी कभी धाप की बुरा लगता है।

पैट्रोलियम घोर रसायन मत्री (श्री वेयकाम्स बच्छा): नहीं, बुरा नहीं लगता है। मैंने कभी नहीं कहा ऐसा।

भी मचु लिमवें तो इसको कीजिये माप।

ग्रब मेरे दो प्रश्न है। ग्राप को याद होगा कि ग्रविश्वास के प्रस्ताव पर जब मैं बोल रहा या तो मेरे कांग्रेसी मिलो ने बड़ा हल्ला किया, मैंने कहा या कि 1 मार्च, 1974 को खाद के लिए नाफ्ता बचे,—यह इनके शब्द है—इसलिये इन्होंने पैट्रो कैमिकल इडस्ट्री के लिए नाफ्ता का दाम 13 सौ रुपया प्रति टन बढ़ाया । हजार था, 23 सी कर दिमा ती नेट इन्कीज 13 सी रुपये हथा श्रव 26 दिन के बाद इन्होने उसका घटाया। मै जानना चाहता ह कि मत्नी महोदग का और मजालय को हाश था या नहीं तब उन्होंने बढ या? इतना बडा निर्णय साच ममझ कर ही किया होगा ? आप इतन बद्धितीन हैं ऐमी ता हम कल्पना भी नहीं कर सकते। नो सोच समझ कर ग्राप निर्णय करते है और 26 दिन में इतनी जबदंग्त गफतलाल, यनियन कार्बाइड श्रीर साह जैन करते हैं कि जिसके फलस्वरूप ग्राप दामा को गिरा धब देखिए डेढ महीना हो गया है, जवाब नहीं माया है। मैंने यह बात नो-काफिडेंस मोणन के समय कही थी . . .

भी देवकान्त बक्खा: मुझे कहने का कभी मौका नहीं मिला, ग्राज मैं बता रहा हु।

भी मणु जिसमें . प्राप किसी दिन भी परमनल एक्स लेनेशन दे सकते थे। हर दिन हमारा समय इसमें खराब होता है।

श्री देवकान्त वदशा भाजनो मैं भापको बनारहाह।

श्री मधु लियमे ठीक है, देह महीने वे बाद नोद नो खुली।

मेरा यह कहना है, यह मर। सपनी जानकारी है मैं ने यह नहीं कहा कि मनी की ने स्रपना घर भरने ने लिए पैमा लिया है, स्राप मेरा उस दिन का भाषण पढिए, नेकिन स्राप लोग क्या करने हैं कि स्रापके हाथ में इतने जो डिस्कीशनरी रावमं है, इन विवेकाधीन स्रधिकारों का दुरुपयोग करने स्रपने दल का सना में विराजमान रखने के लिए, स्रधिकार में बनाए रखने के लिए इन लोगों में पैसा लेते हैं। (स्थवचान) व्यक्तिस्म मेरा किसी में मतलब नहीं है, यह कोई

देवकान्त बस्धा की घरेल बात नहीं चप रही है। यह मार्वजनिक जीवन की बात मै कह रहा ह। कम्पनी डानगन का ग्रन्छा विकेल्प हडा ग्रापने । मैंने यह नहीं कहा था कि अ.प न अपनी जेव में टाला, या अपने मन-इन-ला का दिया, तो भ्राप नाराज क्या हा रहे हैं ? मैं यह कह रहा हं कि कम्पन। डानेशन का हमने खत्म श्या किया? किस उद्देश्य मे किया ? इसीलिए न कि सार्वजनिक जीवन जो दुचित हा रहा है उसकी मुधारा जाय। सब ग्राप ग्रपने विवेशाधीन ग्रधिकारी का इंग्नेमाल करके, काला धन जा वना रहे है, उसका एक हिरमा लेगे राजनैतिक कामो के लिए तो मैं ममझना ह कि यह बात श्रन्छी नहीं है। तो प्राइमाफमी जो बात है वह मैंने धाप के सामने रखी है।

दूसरा डी० एम० टी० वाला मामला है। उम दिन विन विश्वेयक पर बोलते हुए थी चव्हाण ने सुद ही बाकडे दिये और यह कवल किया कि 16 हजार रुपया इडिजिक्स प्राइस है। मैं तो समझता था 18 हजा र स्वये. मैंने उसको ग्रहर-ग्स्टीमेट किया था, मैं समझत, था कि इडिजिनस ही एम टी अ की एक्स-फैक्ट्री प्राइस 18 हजार रुपये प्रति टन ब्राप ने रखी है लेकिन चव्हाण साहब ने कहा कि 16 हजार रुपये है एक्स-फैक्ट्री प्राइस । 25 प्रतिशन मेरे कहते के बाद उस पर उन्होंने एक्साइन न्यटी नगाई तो वह हो गया 20 हजार स्रोर रूम मे जो साता है बह उन्होंने कहा कि 38 हजार रुपये प्रति दन बिकता है। ये चन्हाण माहब के बाकडे हैं। स्रोग फिर उसके बाद कहने है कि ब्हेयर इस दि प्राईस गैप े खुद कह रहे है कि 20 हजार मे तो इडिजिनस बिकता है श्रीर रूस से भाषातित 38 हजार में बिकता है, तो 18 हजार का गैप नहीं हमा[?] इन म्राकटो का भी खलासा नहीं हुआ है।

श्री देवकान्त वरुद्धा झाउ मैं झाप को देरहाह। श्री अधु लिसचे ' यह आप को बहुत पहले करना चाहिए था।

श्री देवकान्त बरुझा श्रापको पूरे कागज देरहा हु। ग्राप देख लीजिये।

भी मधु लिमये श्रव श्रध्यक्ष महोदय, ये बार बार बीच मे बोल रहे है तो इन्ही को मौका दीजिए। मैं नैठ जाना ह।

की चलिका प्रसाद (विनया) माननीय उपाध्यक्ष महोदय, देश ग्रांत्र श्रायिक पकट की स्थिति से गजर रहा है, उसका मख्य कारण भाज पावर गार्टेज है। हमारे गहा उत्तर प्रदेश मे पाबर का दो-तिहाई हिम्सा थमंत पावर स्टेशन से बनता है योग ग्व निहाई हाइइल से बनता है। ग्रगर वरसात नहीं होती है तो हाइरल से पावर नहीं नननी है जिससे सारे प्रदेश मे पावर की णार्टेज हो जाती है। दूसरी तरफ कोयले के न मिलने के कारण, जैमे रेलो की हड़ताल हुई, श्रमंत स्टेशनो पर कीयला नही पहचा, इसमे भा गावर जार्डेज हई-जिसने उत्तर प्रदेश की हालत की बिगाउ कर रख दिया है। हमारे दिरोधी पार्टियों के भाई कहा है कि देश में महगाई है, परेशानी है। मैं मानता ह-लेकिए यह महगाई और परेजानी किसके बारण हुई? रेलवे की हडताल के कारण कोयले का न पहचना इसका कारण है जिसके लिये वे स्वय जिस्मेदार है।

14.51 hrs

[SHRI DINESH CHANDRA GOSWAMI in the Chair]

इस महमाई को दर करन हे लिये, मुद्रान्फिति को दूर करन के लिये हमारे वित्त मत्री महोदा ने घनको घध्यादेण जारी किये, जिनको सदन ने घभी पाम किया है। इसके लिये मैं घपने वित्त मत्री जी को घन्यवाद देता ह, वे इस गम्बीट्ट स्थिति का मकाबला करने के लिए पूरी कोशिश कर रहे है। राष्ट्र के जीवन में ऐसी संकट की वडिया झाया करती हैं, हमारे देश के नेनाओं ने हमेशा ऐसे सकटकों का मुकाबला किया है और झागे भी उमका मुकाबला करेगे।

हमारे देश के अन्दर श्राज नक्सलयादी आन्दोलन आरम्भ हा गया है। यदाप यह मजदूरों की लटाई है, नेकिन हमारे प्रदेश के वाबू लोग कहने है कि यह नक्सलवादी श्रग्दोलन है। मजदूर यपनी मजदरी के लिये लड रहा है, भेगी समझ में नहीं आता कि यह कैसे नक्सलप'डी आन्दोलन है। इसमें प्रदेश सरकार कुछ नहीं कर रही है, उनकी तरफ में स्थित स्पाट नहीं की जा रही है। मैं चाहता हू कि केरदीय सरकार इसने बार म स्थित स्पाट करें कि यह नक्सलपथी आन्दोलन है या मजदूरों की लटाई है। इस सम्बन्ध में गह सभी जी वा बयान शीछ आना चाहिए ओ अभी तक नहीं आगा है।

पिछले विधान मभा के चुनाबों में हमारे क्षेत्र में प्रतिक्रियावादी शक्तियों ने पर्णलग ब्यापण कवजा किया था। हम ने इस सम्बन्ध में इलेक्शन कमीशन और राज्य मरकार के पाम रिपोर्ट भी कराई थी तथा अनरोध किया था कि इसके बारे में जाच करा कर उचित कार्यवाही की जाय लेकिन मुझे खद के साथ कहना पड रहा है कि अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की गई। मैं चाहता हू कि जिन्होंने बन्म पर बच्चा कराया था, जनके खिलाफ इलेक्शन कमीशन की मार्फत या वानून के सहारे जाच कराई जाय और एमें लोगों को 6 साल के लियं हिवार किया बापे ताकि लोग इस सरह के अवैधानिक काम न कर सके।

केरल मे प्रामीण मजदूरों के लिये क नून बना हुआ है। हम चाहेंगे कि भारत सरकार उसकी गाइड-साइन ले कर, उसके मीडल पर कानून बना कर हर प्रदेश में उस कानन को पास कराये ताकि हमारी अनधार्मेनाइज्ड लेक्ट आर्गेनाइज हों सके। 20 वर्ष पहले उनको जो मजदूरी मिलती थी, वही मजदूरी आज भी चल रही है, इस महगाई मे उनकी कठिनाइया और परेशानिया बढ़नी जा रही हैं। मैं चाहना हू कि इस सम्बन्ध मे शीघ्र में शीघ्र कदम उठाये जाय नाकि उनको राहत मिल सके।

उत्तर प्रदेश की सरकार के बजट मे धन के अभाव के कारण विकास कार्यों के लिये पर्याप्त धनराणि नही रखी गई है। हमारे यहा भाज न सडके है, दूसरे साधन हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश बाढ भौर सुखा दोनों से प्रभावित है। मारी फमल बरबाद हो गई है। वहां 6 महीने बाद रबी की फमल ग्राने की भी उम्मीद नहीं है। ग्रगर प्रदेश सरकार उधर ध्यान नहीं देती भौर भारत सरकार भी कुछ नहीं करती तो भखमरी व्याप्त हो जायेगी, नव स्थिति को समालना मधिकल हो जायगा। इस स्थिति को मिटाने के लिये हम चाहेंगे कि भ्राप कैश-श्रोग्राम को चला कर उनकी मदद करे। गरीबो की परचेजिंग पावर को बनाये रखे ताकि उनको राहत मिल सके।

मेरे केंद्र में मिनि स्टील प्लाट लगाने के लिये भारत सरकार ने माजा दी थी, लेकिन पावर की कमी की वजह में वह स्राज तक रुका हुमा है। हमारा "स्रोवरा" का पानी जो म्राप दूसर प्रदेशों को देते हैं, उगके बदलें में भ्राप उनमें बिजली लेंग ईस्टर्न यु० पी० को दे ताकि इस पिछने क्षत्र में कुछ उद्योग धन्धे लग सके।

हमारी गण्डक कनाल में तमाम रूपया भारत मरकार का लगा हुआ है उममें दो हजार क्युमक पानी बेकार जा रहा है। हमारा निवेदन है कि अप्रैल, मई और ज्न में, जो पानी बिहार नहीं से रहा है, ईस्टनं यु० पी० में सिकाई के लिये दीजिये। यदि आप ऐसा कर दे तो जुलाई में जब बाढ़ झाती है, उससे पहले फमल तैयार हो जायगी झौर उस क्षेत्र के रहने वाले लोगो को झोजन मिल सकेगा झौर कुछ कमाई हो सकेगी।

हमारे यहा जो बिजली पैदा होती है उसका उपयोग नकरिंग गृड्म में न करके आवश्यक चीजों के उत्पादन में होना चाहिए । किमानों के लियं छाट छोटे उद्योग धन्धे खोलने के लियं बिजली दी जानी चाहिए, इससे लोगों को काम मिलेगा और बेकारी की समस्या का समाधान हो मकेगा। बिजली की बचन के लियं ग्रांप एग्रंप-कण्डीशान जंबन्द कर दे, गैरजकरी चीजों में उसकी खपन को रोका जाना चाहिए ताकि उसका उपयाग मही चीजों के उत्पादन में हो सके।

हमारे प्रदेश मे विजली की ट्राममीशन शाटेंज बहुत ज्यादा है, 20 प्रतिशत है। हमारे इजीनियमं का कहना हैं कि यह शाटेंज 6-7 पर्रमेन्ट मे ज्यादा नहीं होनी चाहिए। यह जो वेस्टेज होती है, चोरी होती है, यह रोकी जानी चाहिए। यदि हम इसको रोक सके तो इसमें बिजली की काफी हद तक कमी की पूर्ति की जा मकती है।

मम्पूर्णानन्द मेडिकल कालेज बनारस मे खुला हम्मा था। उसमें लडको से 16 हजार रुपया डोनेशन लेकर भरती किया गया. लेकिन 27 लडको में डोनेशन तो ले लिया गया लेकिन उनको भरती नहीं किया गया। म्रब न डोनेशन वापस करते हैं और न उनको भरती करने हैं। या तो उस कालेज को मान्यता दी जाय या उन लडको को मन्य कालेजों में भरती कराया जाय या ईस्टर्न यू० पी० में मेडिकल कालेज खोलन के लिये जनता को इजाञ्ज दी जाय।

हमारे यहा ईस्टर्न यू० पी० से कोई आयुर्वेद कासेज नहीं है। हमारे यहा जो लडके हिल एरियाख से आते हैं उनके लिये लखनऊ मे और दूसरी अगहो पर रिजंबेशन

95

[श्री चलित्रका प्रसाद]

है, लेकिन ईस्टर्न यू० पी० और सेन्ट्रल यु० पी० के लिये कोई रिजबंशन नहीं है। इसलिये हमारा अनुरोध है कि हमारे यहां आयुर्वेद कालेज खुलना चाहिए। यदि नहां खोलते हैं तो उनको अन्य कालेजों मे रिजबंशन देना चाहिए। जिस तरह में हिल एरियाज के लिये रिजबंशन दिया गया है उसी तरह से इनको भी मिलना चाहिए।

हमारे यहां पूर्व क्षेत्र में गाजीपुर में एक श्रोपियम फैक्ट्री है जो प्रति वर्ष करोड़ों रुपये का फारेन-एक्सचेन्ज कमाती है, लेकिन आज उसको उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। मैंने कई बार इस प्रश्न को उठाया, लेकिन समझ में नहीं झाता कि भारत सरकार की नीयत क्या है, उसको तोड़ना चाहती है या कायम रखना चाहती है। कई बार कहने पर भी संबी जी वहां जाने का प्रोग्राम नहीं बना सके। यह श्रोपीयम का कारखाना श्रंप्रेजों के जमाने से चना का रहा है, वह कायम रहना चाहिए, इसले ईस्टबं यू० पी० के लड़कों को काम मिलेगा और वहां वेकारी दूर होनी।

ईस्टनं यू० पी० मे 90 प्रतिशत किमान ऐसे हैं जिनके पास एक एकड़ या उससे भी कम भूमि है। हमारे यहा जमीन उपजाऊ है, किसान बहत मेहनत से काम करना है, पानी है लेकिन दूसरे साधन उपलब्ध नही हैं। प्राप ने फर्टिलाखर का कारखाना गोरखपुर मे खोला हुआ है लेकिन ईस्टनं यू० पी० को फर्टिलाइखर उस कारखाना से नहीं मिलता है। यह कारखाना ईस्टनं यू० पी० मे स्थापित है, इसलिये में बाहना हूं कि प्राप ईस्टनं यू० पी० के मिये फर्टिलाइखर की परमेन्टेज फिक्स कीजिये ताकि वहां पर किसानों को फर्टिलाइखर मिल सकें।

हमारे यहां कृषि की समस्याओं के समाधान के लिये एक कृषि विश्वविद्यालय की बहुत धावस्यकता है। यदि सरकाए मीघ्र कृषि विश्वविद्यालय खोल दे तो किसानों को खेती के मामले में सही जानकारी मिल सकेगी भौर वे कृषि से सम्बन्ध रखने वाली धपनी समस्याधों का समाधान कर सकेंगे। इससे उनको पैदावार बढ़ाने में बहत मदद मिलेगी।

प्रो॰ एस॰ एस॰ सक्सेना: (महराज-ग ब) : माननीय उपाध्यक्ष जी, पिछले बजट में खाण्डमारी पर कोई इयटी नहीं बढ़ाई गई थी. लेकिन बजट पास होने के बाद एक एकजी-कर्याटव ब्राइंर के जरिये मरकार ने इयटी द्गनी कर दी। मझे ग्राप्चर्य हुन्ना कि बजट में यह मामला क्यों नहीं लाया गया, बाद में उस को क्यों बढाया गया । मैंने विस मती जी जी से कहा है कि यह बहत बड़ा घन्याय हुआ है। खाण्डसारी सुगर गरीव बादमियों की शगर है। महात्मा गांधी कहा करते थे--ह्याइट मुगर पाइजन है, जहर है। लोगो को खाण्डसारी शगर इस्तेमाल करनी चाहिये। यह इक्ण्डस्ट्री हमारे यु0 पी0 की सब से बड़ी काटेज इण्डस्ट्री है, इस पर लाखों किसानो की रोजी निर्भर है। इस का एम्प्लायमेंट पोटेन्शल भी ल्लाइट श्वर के एम्प्लायमेंट पांटेग्शन के मकाबले दस गुना है। जितने मजबूर 1 टन ह्याइट श्राप्य बनाते हैं, उस के दस गुना मजदूर । टन खाण्डसारी चीनी बनाते है । ग्राज जब कि इमारे देश में एम्प्लायमेंट की लडाई चल रही है ऐसे समय मे ऐसी इण्डरदी जी बहुन ज्यादा लोगों को एम प्लायमेट दे सकती है, उस पर इयटी लगाना भन्याय है। खाण्डमारी के उद्योग श्रविकत्र गावों के अन्दर हैं, इस इयटी के लग जाने से देहानों की जो खुशहाली है, प्रोसर्परिटी है वह खन्म हो जायगी, क्योंकि जो गरीब मजद्र स्रोर कारीगर वहां काम करते है वं बेकार हो जायेगी।

15.00 hrs.

मुझे ग्राप के द्वारा मंत्री जी से प्रार्थना करनी है, उन्हों ने वायदा भी किया वा कि इस पर विवार करेगे लेकिन अभी तथ उन्होंने कोई कार्गवाही नहीं की है, मैं आशा करना हू कि बजट पास होने से पहले व इस बाप या ऐनान करेंगे दि खाण्डनारी पर जो डबल इपटी की गई है वह नहीं रहेगी।

मब म वडी बान यह है कि णगर इडम्ट्रो का काई कियोटोटर नहीं है क्यावि यहा पर फारन गगर नहीं ग्रा नक्ते। है। इस का एक ही व स्पादीरर है और वह है खण्डमारी शगर । वह चाहन है ि मी नरह म खण्डमारी शगर की इडस्ट्री ममाप्त हो जाये। इसा वजह स सरकार पर प्रेशन पडता है कि इयट। बढाई जाय केन मेस बढाया जाय नाकि इस का समाप्त विया जा सके। मैं वहना चाहना ह कि यह मरकार जा भ्रपन का गरीव किमाना की सरतार बहुनी है उस का चाहिए वि एसा न कर। ग्रमर बह चाहता का मल की मुगर पर इयटी बट दे उस म बई बागड मपए भी मिल जायग लेकिन खण्डमारी प र इयर्ट। बढान से सिर्फ दा कराइ ही मिलेग--- इब्ल एक्साइ ग करन सं। मरकार का चाहिए वि मिल मालिको के प्रेमर का मकाबला करने जा प्रानी इयटी थी उसी वा रख।

किशाना के निए गन्ना बड़ा बून है।
जहा पर फैक्टरीज नहीं है बहा पर खण्डमारी
के लिए ही गन्ना इस्तमाल किया जाना है।
यदि यह इण्डस्ट्री ममाप्त ह जाउगी ना वहा पर
किशाना को बह गन्ना जलाना पड़गा। विशयकर
वन्पर काप के राइम में जब कि तन मिली पर
ही निभर बरते हैं खण्डमारी का उद्योग
सण्टा बाल्ब का काम बरना है किसार अपन'
गन्न बहा बेच मकत है। इस नरह में हर
प्लाइन्ट आफ व्यू म यह बहुत ही आवश्यक
है कि खण्डमारी पर जा डबुल इयटा को गई है
जम का ममाप्त रिया जाये।

THE MINISTER OF PETROLEUM AND CHEMICALS (SHRI D K BOROOAH) Mr Chairman Sir I shall be brief as I usually am I would only reply to some points raised

by Mr Madhu Limaye because they relate to my Ministry I had requested Mr Limaye to stay on and also listen to my reply But like in the Bible when he asked Jesus Christ, What is truth? and he did not care to listen, he also put the question and he did not consider it proper to listen to the reply I am not really concerned about that

Sir he raised three points and in fact he had raised them earlier also He had raised them on or casions when I had no opportunity to reply was on the No-Confidence Motion when the Prime Minister had to reply and, naturally she could not reply to all the point, raised by all the Members Next time he raised some of the prints on the Finance Bill and the Finance Minister replied to one or two things that he had raised Now this is an opportunity for me to reply to the points he had raised sometimes in this House and sometimes I have seen in the press also

I am one of those who believe that public acts of Ministers should be discussed publicly and that is the basis parliamentary Government because m the ultimate analysis Parliament is based on sovereignty of discussions Therefore, I am always grateful to hon Members when they raise any point any criticism or even whatever they have to say in respect of any policy any action taken by the Minister and particularly in respect of my Ministry From that point of view I am really grateful to Shri Madhu Limase Earlier also he had raised one point and I had found him to be constructive and I took action on that He is aware of that

First I would start with the point about caprolectum. Today he mentioned that he had raised that earlier But I had no opportunity to reply to him

Caprolectum is not a controlled commodity, neither the price nor the end product is controlled. It is produced in this country by the Guiarat [Shri D. K. Borooah]

State Fertiliser Corporation, lt 15 again a misnomer to call it so because it is in the private sector and not in the public sector. They fix the Price in accordance with the market trend. I will now come to the price of imported caprolactum. The import was about 10,800 tonnes. The highest price during the period 1973-74 was Rs. 12,480 c.i.f from Hungary The quantity imported from 1-4-1974 to the end of May 1974—the price had risen in the meanwhile, I have got this figure from the STC; it does not come under my Ministry-was 2,100 tonnes; the maximum price was Rs. 21,500 plus 75 per cent customs duty; the landed price, ie, the selling price was Rs. 37,000. The GSFC started producing caprolactum from 4 August 1974...

श्री सब्बु लिसये: सी चार्ड एक प्राइस भीर सेनिय प्राइस में फर्क हैं।

श्री देवकास्त बरुधाः मै कह रहा हूं सैडेड प्राइस जो है प्लस 75 कस्टम डयूटी।

धी मधु लिलये: What about STC's charges?

SHRI D K BOROOAH. I will come to that I am now coming to something more interesting than that

The GSFC started producing caprolactum from 4th August 1974 and they have produced till now only 200 tonnes, and out of that quantity, they have sold only 70 tonnes, Therefore, there was no question of making any deal with the businessmen either for political purposes or for other purposes They have sold only 70 tonnes, and they started producing only from 4th The landed price of im-August 1974 ported caprolactum during the period 1-4-1974 to the end of May 1974--the latest, the costliest lot-was Rs 37,000 The GSFC's price which they have fixed excluding the excise duty at 50 per cent, is Rs 26 320 a tonne in bags; the excise duty is 50 per cent; it comes to about Rs 13,000; therefore, the price of caprolactum to the consumer is The selling price of STC Rs 39,500 and the selling price of GSFC are.

more or less, the same, because they watch the market trend. There is hardly any difference in the selling price. And the quantity sold was so small as 70 tonnes. Therefore, I do not think there was any chance of making any deal for that, This is the position,

Certainly there has been a delay and it is not a good thing. But, so far there was no control in the private sector. But the fact remains that the price of caprolactum produced, whatever be the quantity, and the price of the imported material is more or less Certainly, we wrote to the same Mr. Chavan that it should be increased and one of the members said something but ultimately these things are done at the governmental level. You may ask how Mr Chavan knew. The officers might have brought it to his So, this is a decision for notice which the credit goes to the Government and Shri Madhu Limave, to the extent it goes to him, also gets thecredit for it This is about enpro-**Iactum**

Next is DMT As you all know the production of DMT is also under no statutory control The price is fixed by IPCL which is a public sector Under the rules under which it functions it is their responsibility to fix the price The prices of DMT like the prices of all other petroleum Therefore. products are erratic there has been a lot of change in the prices from 13-4-1973 when it was Rs 6000 per tonne and ultimately it was Re 18 000 per tonne on 2-3-1974 to 6-3-74 and from 27-7-74 it has been reduced to Rs 16 000 per tonne They also watch the market What about the imported prices? It varies from time to time and also from country to country He said that the price of DMT has reached an all-time high of Rs 38 000 .

SHRI MADHU LIMAYE. This was Mr Chavan's figure.

SHRI D K BOROOAH. I do not know whose figure it is, but from what I gather from STC, it never went that

101 Suppl. D.G. (Genl.), BHADRA 9, 1896 (SAKA) Suppl. D.G. (Genl.), 102 1974-75

high. The maximum price paid by STC was m fact only Rs. 10,200 landed for a 200 tonne lot in June 1974. At that time, the IPCL's prevailing price was Rs. 12,000, higher than the highest landed cost when the highest price they paid was Rs. 10.200 Two offers of DMT are under consideration now at an average price of Rs. 15,800 against the IPCL's excise-exclusive price of Rs. 20,000—Rs. 16,000 price and the excise duty of 25 per cent...

SHRI MADHU LIMAYE What is the customs duty on the imported stock?

SHRI D K. BOROOAH. The same 75 per cent.

श्री सच्च लिसये: तो फिराग्से टी० सी० चार्ज मिला कर कितना होता है

SHRI D K. BOROOAH It is the same The landed cost always includes the customs duty When I say Rs. 15.800 is the landed cost it includes the customs duty of 75 per cent There is hardly any difference The price bas been changing As I said, the price started from Rs 6 000 went up to Rs. 18 000 and came down to Rs 16 000. Again, as I said this depends upon the imported price and the market trends which have been changing from time to time and fluctuating

So, there is a watch which is kept This is entirely an uncontrolled commodity And ıf the price fixed by the ICPL it is an autobody and they do 30cording to their decision Neither in the DMT nor in the caprolactum there is basic variation between imported and indigenous price It stands to reason that there is no question of making any deal with industrialists in this thing I will add one thing move We have now decided that substantial part of DMT would be given to cooperative sector. In fact we have al-51 per ready floated the company. cent shares would be held by Government and 49 per cent would be by cooperatives. This company is being floated and polyester filament things would be produced. Substantial part of DMT will go to them. It was inaugurated yesterday by Mr. Shinde and Mr. Kulkarni. There is no chance that industrialist will take benefit out of this DMT

श्री सथु लिससे: जे० के० के साथ इस में कोई टैक्निंकल वालबोरेणन किया गया है कार्ल फिणर टैक्नालाजी के बारे में? यदि हा, तो उस के टमंस सदन के सामने रखिये।

SHRI D. K. BOROOAH. This is a cooperative venture which has come into being I cannot cover everything. I can show all the papers to you if necessary.

SHRI MADHU LIMAYE: I am prepared to see them. I am a one-man Public Accounts Committee; I am prepared to see

श्री जनन्नाय राव (छनरपुर) जरूरत नहीं है।

श्रीसमृत्तिमधे: जरूरन क्यो नही है।

SHRI D K BOROOAH You come from the tradition of Nana Fernaves who keeps all his accounts, I am not so capable; I come from a tradition no accounts were kept You will be better in accounts

The other point made was about the reduction in price of naphtha used ior non-fertiliser use We keep the price of fertiliser low, which is the end product Therefore we keep it low That is to say, we do not increase the price across the board for certain items. Take kerosene and diesel and other common use items. They were not increased to the extent they could have been had it been under across-the board formula Bit we thought that whatever is used for non-fertiliser use, for petro-chemical and chemical etc. it should be increased on that basis. And we increased the nrice It 103 Suppl. D. G. (General), AUGUST 31, 1974 Suppl. D. G. (General), 104 1974-75 1974-75

[Shri D. K. Borooah]

came to Rs. 2320 per tonne. That is, from 1,000, it went up upto 2320. As soon as it was increased we received lot of complaints. I will briefly mention about them. The first one were from the industries because the plastic industry was dependent upon them. Plastic industry needs substantial parts of high density and low density polythelene which is made out of naphtha cracking They brought this point. The State Government of Karnataka said that so far as they are concerned the sharp increase in naphtha price has made serious crisis with the high-density polythelene bags and other plastic industries. The Maharashtra Chief Minister came here. he said if you don't do it, all their plastic industries will go to rum they have to be closed down etc About 300 thousand people were involved in Maharashtra, in general and Bombay I think I am correct in particular. statistically.

All these people who came to see us were from Maharashtra. I asked them how is it that the prastic industry of even the drug industry is located only in that part of India? They said that it was because of the availability of raw materials that go into the manufacture of plastic goods. So, a large number of people came from this area

If we increase the production naphtha, the end-products from it will be very high. We sent for the study of it one gentleman from the Bureau of Industrial Costs and Prices. I think his name is Shri Marathe; he is the Chairman of this Bureau went into it himself and gave us a The study made by the Bureau of Industrial Costs and Prices revealed that on the basis of the revised price of naphtha which is selling from Rs. 189 to 400, the cost of the end-products will be going up by Rs. 200 or so. The small scale industry has a large share in the plastic industry because there are a number of educated youths and unemployed engineers who took to this kind of industry for which the Government gave encouragement. It was based on availability of raw materials such as high density polyester and low density polyester. What we are very much concerned about is with regard to high density polyester which is made use of by the small-scale industrialists—the manufacturers. That is why we sent it to the Bureau of Industrial Costs and Prices for a study to find out the result

What we did was this. We went to the Finance; we consulted the Finance Secretary Shri Yardi who looked into this carefully Then we sent it to another committee presided over by the Cabinet Secretary-I shall give out his name In view of the very wide problems involved in this, the Ministry of Petroleum and Chemicals, in consultation with Finance submitted a paper which was considered at a meeting presided by the Cabinet Secretary on 18-7-74 wherein the Secretaries of Finance, Petroleum and Chemicals, Chief Adviser of Bureau of Industrial Costs and Prices and an OSD of Prime Minister's Secretariat were pre-There it was decided at that meeting

श्री सथु लिसये प्राडम मिनिस्टर सेकेटे-रियेट हर चीज मे होना ही चाहिए।

श्री देवकांत बरुद्धा यह तो रूल्म आफ विजनेस में है।

When you become Prime Minister, you can change it

श्री सथु लिलये ठीक है। मैं ये सब बाते समझ रहा ह।

SHRI D. K. BOROOAH: There it was decided to reduce the price of naphtha used for fertilisers production from Rs. 2,000 to 1,000 per ton That was also considered at a joint meeting on the 25th March of the Cabinet and Political Affairs and Economic Affairs Committee.

श्री सथु लिनवे . आप के नहने से लगना है कि इस का जो असर प्लास्टिन या दूसरी इडस्ट्रीज पर पडेंगा, उस पर आप ने विचार मही किया दास बढ़ाने से पहले । यह सरकार कैसे चलनी है । 10, 15 रुगये का मामला नहीं है, यह ता 1320 प्रति टन का मामला है ।

दूसरी बात यह है कि श्राप ने छोटी इडस्ट्रीज, वर्नाटक और महाराप्ट्र ये सब नाम लिये। मैं जानना चाहना हू कि मफन लाल, यूनियन कारबाइड और माहू जैन ने मीधे या श्रप्रत्यक्ष ढम से मेमोरेण्डम श्रार लाबाड म के द्वारा एप्राच निया या नहीं '

श्रीदेवकांत वरुद्धा इम नाभीमै स्रापका बताना हु।

The manufacturers, IPCL, produced a number of petro-chemicals That is the reason why their cost of intermediate products went up With that their cost of end-products too had gone up Then, there people came to the office I do not know whether they came in deputation They came to the Secretary but they did not come to This should be done in a proposal form The Secretary told them that all these would be certainly taken into account As I mentioned already. the industrialists were there We were more concerned with the manufacturers- the small scale industrialists the unemployed voungmen the engineers who were encouraged by the Government to take up this job Therefore, we took abundant precaution to see that no improprieties were committed and it was done strictly in accordance with the business rules and took into account all the advice available to us

श्री सम्भू लिमचे: इस पर मेरी टिप्पणी श्रास जरबेणन केवल दलता है कि पाण्टिचेरी पार्टीज को लाइसेल्प रेने में थीं तलमोहन श्रम का रोल है श्राप ने छोटे-छोटे उण्डस्ट्रि-प्रेलिस्ट्म का नाम लिया है। श्री देवकांत बदशा इस में नहीं है। ग्रापके वहने से क्या होगा। (व्यवधात)

श्री मचुलिमये: जब ये वील रहेथे ती मैं मुक्त रहाथा मैं ने कहा है कि बड़े बेनिफि-णियेरी ज ये तीन है इस में भ्राप द्वार नहीं बर मक्ते।

SHRI D K BOROOAH Certainly, they would be beneficiaries and alongside them IFCL also will be a benen-The Agriculture Ministry also wrote to us that the price of the insecticides will go up and, as such, they said price should be requeed. BHC is also a product of naphtha. Naphtha is used in the manufacture of many drugs If naphtha prices go up prices of so many things go up. We did not do it at the instance of big muustries but we did it at the instance of the Government of Karnataka, Maharashtra, small scale industrialists and IPCL If because of them others are benefited it cannot be helped So, if Mr Limaye makes any insinuation of that type I repudiate it I am not using harsh words but I would say certainly Mr Limaye has done no good to anybody by making these allegations which are of a wild nature. As the facts he had raised deserved reply, so I was sitting the whole day here to give a reply /I have held Mr. Limave in great respect because he brings facts before us and I have taken a lot of interest in whatever he says But I would submit in all hum h's that we are co-workers in Parliament and should not start doubting each other's bonafides. It does not help us

I am prepared to place all the facts before Mr. Limave Let him lock into them and tell me this is the mistake here I am a humble person and all the wisdom of God has not gone into mv head. If I make mistakes I have the courage to correct them and if I am held guilty of them I plead guilty.

[Shri D. K. Borooah]

Sir, the first question he raised was about oil supplied to Defence Ministry. Sir, this is a matter which took place at a time when the whole country was engaged in a life and death struggle. This is a matter which the Defence Ministry could say whether whatever oil they used was suitable or not. If I am not mistaken the Defence Minister has issued a statement that whatever oil was received was suitable and there was nothing shady about it. He issued a statement also on this. Since Mr. Madhu Limaye has raised this question again, I will certainly take it up. I will let the hon. Member know and the House know all the But, Sir, befacts that we have. cause the Defence Minister issued a statement, a public statement, thought that the issue has been closed and there is no point in my raking it up. But if the hon. Member wants that I should look into this question again, I am willing to look consultation into this question, in with the Defence Ministry. If he thinks it proper, certainly, I will look into it.

SHRIMATI PARVATHI KRI-SHNAN (Coimbatore): Mr. Chairman, Sir, speaking on the demands, I want first to refer to this demand Ministry of Irrigation and of the Power where we are being asked to vote a certain sum of money for new power projects that are being brought up. Sir, this chronic power crisis in our country, which we see year after year, is crippling our national economy and hitting also at the earnings of the workers year after year. But, I find that Government's policy as regards power is just not changing at all. Time and again, we, from our side of the House, have been raising this fact that industrial development is getting inhibited; workers' earnings are affected; there is loss in production year after year because of power crisis and power shortage. Sir, this year, the power shortage has caught up all imagination and we have already, on the floor of the House, discussed this whole matter. This is a culmination of years and years of defective planning. When, Sir, is the Government going to settle down to examining this in a dispassionate and logical manner and work out a Central. Grid and Central Electrical Authority? the absence of these two that are leading to these repeated shortages and repeated power crises. There has been bungling year after year throughout every scheme, that has been put on the map. Again, we are being asked now to sanction more money for new schemes. What is the guar ... that " me bungling is not going to continue? We have seen this. Every time when 11.00 Minister and ottention statements and other statements, he just answers in his usual generalistic vay and usually his answers go on pretty long, but, nothing practical has emerged either from his answers or actions of the Government. That is why, nothing seems to be happening in the world of power within this country, except that this in-built system of corruption is flourishing. If there was time to go into it, one could detail tales after tales, how corruption is rampant, right much from the lowest to the highest echelon; in the construction work that is carried on and even in such matters as for instance, collecting of arrears. For instance, the arrears are increasing year after year. Now, in the name of fighting inflation, Government comes forward with Bills such as the Compulsory Deposit Bill and they are going to collect Rs. 450 crores through this. But, nothing is done for collecting arrears of moneys that are already due. These arrears are going up year after year and the arrears get accumulated as electricity tariff is concerned. The accumulated arrears in, for instance, provident funds etc. go on increasing year after year. There is the question of tax arrears. I think Mr. Ganesh would know better than I. Certainly, tax airears that are outstanding are far more than the Rs.

Rs. 450 to Rs. 500 crores that you expect to get from this hair-brained schemes that has already been thrust on Parliament's throat. Then, Sir, there is also, as far as irrigation and power is concerned, delay m amending the obsolete provisions of the Electric Supply Act of 1948. Time and again the Electricity Workers' Federation put forward this and pointed out how this delay leads to many States refusing to yield to any Central authority or to any planning at the Centre and insisting on their own policies and insisting on carrying on whatever they want, with the result. there is no coordination; there is no cooperation. For instance, when there is shortage of power in Tamil Nadu, a great quarrel takes place between Tamil Nadu and Mysore in regard to the discharge of water. This goes on. Meanwhile, factories remain closed, workers out of jobs and production is affected.

Since this is a sort of seasonal disease that the country suffers from suddenly when the production picks up again the workers are called upon to increase production. Every time production goes down it is the worker who is responsible and not Government policy, not the bankrupt policy particularly where are power shortage is concerned. Therefore, this matter of electricity policy and policy towards building a Central grid in this country is a matter of tremendous urgency.

Another reason why I am constrained to talk about this issue here is that when the crisis is already there West Bengal, in Tamil Nadu, in one State after another, and sheeding of power is taking place and rationing of electricity is there, and factories are not working throughout the days of the week and the workers are being laid off for some days of the week, when this critical situation is there, the Elec-Workers' Federation pointed out how they are also being meglected, and since their voices and their demands have fallen on deaf

ears, we are today faced with the possibility of a strike on the 18th strike in order to press for their absolutely just demand. What is the September, an all-India one-day demand that they are pressing for? The prices have been rising for the past two years long before even this wonderful hair-brained scheme of compulsory deposits was thought of, and they had raised the question of the irritional system of wages existing among the electricity workers, at the same time demanding that wage negotiations should take place since the wage board recommendations were going out of date. Therefore, the Labour Ministry in its wisdom had set up a certain machinery; a wage guidelines committee was in the process of carrying on discussions. But now because some State Government was opposed to this and some State Government said 'We do not like this' or somebody else does not like it, or they are allergic to this, that or the other. attempt is being made scuttle these very important negotiations. I am not going into the question of whether the workers are going to get their wages or not, because both the Prime Minister and the Finance Minister have said that that price of legislation was not gonegotiations. That is ing to affect all right. Then, why is this attempt being made to scuttle even the negotiations, because the electricity being paid workers are different scales m different States, apart from the fact that the workers of this very important industry in our country are also paid very depressed wages? That is why it is extremely important that Government should immediately take up these negotiations and see that a success is made of the Wage guidelines Committee so that no crisis comes up, and the existing power crisis does not further degenerate into a labour crisis in the field of power.

As regards Demand No. 76 relating to Shipping and Transport, there is a problem that has been there in [Shrimati Parvathi Krishnan]
the ports, particularly in the Madras port for a long time. The problem is that the Port Trust has not accepted the code of discipline; therefore, they have got their own peculiar way of choosing whom they will recognise or whom they will not recognise. This is not conducive to smooth industrial relations and not conducive to settling the grievances and problems there at the shop or floor level itself.

For instance, these unions who got their representatives on to the Port Trust Boards as a result of verification are not recognised by the Port Trust with the result that their del mands cannot be discussed with the Port Trust authorities, and so, they go on strike. Then, it has to come to Delhi: in spite of all the talk of economy, they prefer to have the strike and when this is taking place. they have to pay the air fare for the representatives of the workers who are on strike to call them to Delhi and settle the demands and so on. Why all this? When can the Port Trust not immediately recognise the union that has shown through verification process that it has got a majand that it has a right to ority recognition.

Today take, for instance, the Mardas Port United Labour Union The President of that Union is a member of the Port Trust. But it is not recognised The demand for recognition has been pending year after year and it continues to be ignored. These are the small irritants that militate against industrial peace and against the worker throwing his all into th, national effort, because all the tim Tre are this sort of humiliating tact.cs of the employers, particularly Government. After all, Government should be the model employer, but unfortunately model employer, Government is a whether it be in the Railways, ports and docks or electricity, only to not a model emgenerate strikes, ployer to show how industrial relations si ould be built up and how the

workers should be taken into confidence and given the facilities to play their fullest role in building our national economy.

I would like to say a word on Demand No. 38. It is very strange that the Ministry of Finance which talks of curbing inflation today comes before the House asking for money which will be required for the implementation of a measure which is supposed to be for savings. It is Rs. 70 lakhs for the remaining part of the year for administrative work that hasto be carried on this wage freeze scheme of Government: Rs. 70 lakhs only Government are going to spend; over and above this. Government alone for their administrative work have to spend, I would like a calculation as to is going to be spent by the private sector employers throughout the country who will also have to do a. certain amount of extra accounting and so on, unless of course they choose not to do it and run away with the money which most of them are capable of doing. Therefore, in the name of fighting inflation, create another head of expenditure-strange logic of which only this Government is capable.

With these few words, I thank you for the patience with which I was heard.

श्री सृखदेव प्रसाद वर्मा: (नवादा):
मभापित महोदय, में धनुपूरक माणों का
समर्थन करना ह भीर घाएके माध्यम में
सरकार के सध्मने कुछ वाने रखना चाहना ह ।
में सरकार ना ध्यान विहार की बाह और
अकाल की नरफ खीचन के पूर्व कुछ ऐसी
वानों की नरफ खानियन करना चाहना हू और
वन्ना चाहना हू गि देण की जनना टैक्स वढ़े
इससे घडडानी नही ह, घयड़ानी इस बान में
है जि जो हम पैसा देने हैं उसका मदु योग
होता है गा नही। इसकी नरफ उसका ध्यान
जाना है। सरकार ने बड़ा ही कारगर कदस
उठाया है मुन्यों की बृद्धि को रोकने के संबंध

में भीर काले धन के संबंध में भीर इसका धन्छा ससर होना चाहिए था। इसमें कोई सदेह नहीं कि सरकार का यह प्रणमतीय कदम है। किन्तु भ्रमी तक जन-मन्तम पर भ्रसर नहीं पड रहा है इसका कारण क्या है? मैं सम्बता हूं इसका मुख्य कारण है कि काले धन के लिए हम छापे मारते हैं, परड़ने है लेकिन इसरी तरफ काले धन का जो हमारे प्रणामनिक पत्नों के दारा वहावा हो रहा है उमकी तरफ ध्यान नहीं है। उनका परफ इन्हें ध्यान देना चाहिए। ग्राज देण के श्रन्दर बड़े वड़े काम होते हैं लोक निर्माण विभाग मे, सिंबाई विभाग में तथा ग्रापूलि विभाग में, उनमें कुछ इस तरह के काम होते हैं जिनके जिंग इन विभागों के अफनगन, इनके इजीनियर इत्यादि काले धन को बढाबा देने में बड़े मददगार सिद्ध हो रहे है। ग्राप भी जानों होंगे कि जो काम हते हैट विभागों के द्वारा चाहे वह सडक निर्माण का काम हा, सिवाई की योजना का राम दो या भवन निर्माण का काम हा, जा एस्टामेटेड कास्ट इसकी हाती है इसके 40 प्रतिणत ने अधिक उन बामों में खर्च नहीं होता है और 60 प्रतिणम उसका ठेकेदारों के हाथ में, इजीनियरों के हाथ में भीर भन्य ऐमे ही लोगों के पावट में चला जाना है। यह भो एक प्रशार का काजा धन है और इस्पे काले धन की वृद्धि हानी है। तो जहा छापा मारने का काम करते है वहा दुसरी स्रोर साप के स्रपने प्रण'र्म नक पत्रां के द्वारा जो काले धन की विदि हा रही है सरकार का ध्यान इस तरह जाना चाहिए। देखना चाहिए कि वस्त्रस्थित स्वमन में क्या है और इसको हम कैसे रोत सनते है ? इसके लिए कारगर कदम उठाने की प्रावश्य-कता है।

श्रव में विहार की श्रोर सरवार का ध्यान ले जाना चाहना हैं। विहार इस वक्त बाद में, सुखें में श्रीर धान्दोलन में प्रस्ति है। सपवर बाढ शाई है जैसी कि पुराने नाग करते हैं कि सैवडों वर्षों में कभी नहीं शाई थीं श्रीर

इस तरह की वरवादी कभी नहीं हुई थी। र हान बरवाद हो गये, फमल बरवाद हो गई. रारे संधन वरवाद हो मये । विहार सरकार की प्राधिक स्थिति ऐसी नहीं है कि इस बाउ ने हुई अति का मताबिला वर सके। इस्ला नहा तावाल राहत पहचाने की ग्रावण्यकता है उनके खेतों में प्रगती फमल बोई जा सके इसकी शक्ति लाने का प्रयस्न करना है। लेकिन विहार स्पार की जीका के बाहर की यह बात है। 4 कराइ रावा बिहार सरकार ने इसके लिए दिया है और केन्द्र सरकार की भ्रमी नक टीम जा रही है उसका मन्याकत करने के लिए। ग्रमानं न न नो एक छटाक भ्रनाज दिया गया है न एक पैना वहा के लिए दिया गरा है। इतनी वडी भयकर बाद और प्रकाल की स्थिति वहा है और विहार सरकार तथा बिहार की जनता की हालन यह है कि यदि केन्द्र की सरकार में महायना न मिली ता वे कैम इसका मुकाबिला बरेगे और इनकी क्या हालन होगी, यह एक विचारणीय पण्न है। मैं निवेदन करूरा मरकार से कि विहार की स्थिति की वह देखें। बिहार हिन्द्रमान में राव में पिछड़ा हुआ राज्य है। धाज उसकी परकैपिटा आमदनी को देखिए ग्रीर देखने के बाद मोचिये कि जहा मरीबी की रेखा में नीचे 60-70 प्रतिजन लाग वसने हो वहा इस प्राकृतिक विपदा के मकाबिले में भ्रापका क्या करना चाहिए? विहार की स्थिपि को देखने के लिए आप ने टोम ग्रभा भेजी है साथ में पैसा भेजने की भी जल्दी व्यवस्था नरे। बाद में ग्रस्त हो कर इन बेचारे अस गों ने मडकों पर शरण ली है, वरोडां द्वादमी इस तरह से क्षतिग्रस्त हैं। तो म वडे जोरदार शब्दों में माग करूंगा कि वहा सहायना पहुंचाने में विलकुल विलम्ब ग्राप न करें।

में एक बात और निबंदन करूगा कि बिहार में बाढ और मुखाड एक स्थायी चीज बन गई है। प्रशिवर्ष बाद ग्रानी है ग्रीर मुखाड भी होता है लेकिन मरकार चाहे वह राज्य

[श्री सुखदेव प्रसाद वर्मा]

सरकार हो चाहे केन्द्र की सरकार हो, उस बाढ और संखाढ से बचने के लिए स्थायी रूप से क्या करना है इसकी तरफ कारगर कदम नहीं उठाती है। मैं बिहार के दक्षिणी हिस्से से आता ह जो बराबर सखाड में रहना है श्रीर आज भी है। लेकिन आप को सून कर धाश्वयं होगा कि वहा की चार योजनाए सखें से बचने की प्रथम पच वर्षीय योजना से इन्बेस्टिगेशन में हैं-अपरसहरी रिजुर्वायर. मिलंगा डाइवर्शन, महाने रिजवीयर और नार्थ कोयल ये चार स्काम लम्बे ग्राम मे इन्बेस्टिगेशन में है। विहार सरकार के मख्य सचिव का भीर मिवयों का हमारे पास पत भाता है कि 31 दिसम्बर 1973 नक सभी योजनाए दिल्ली, भारत सरकार के सिवार्ट विभाग के पास जाच के लिय भेज दी जायेगी। फिर पत्र ग्राया कि 31 मार्च 1974 ठक जरूर चला जायगा। फिर पत्र आया कि 30 जन 1974 तक निश्चित रूप में चला जायगा। लेकिन नहीं ग्राया। ग्रव कहा जाता है कि 30 नवस्वर 1974 नव जरूर पहच जायगा । इस नरह में बिहार सरकार ने भाज तक इन याजनामां का भारत सरकार के सिचाई विभाग के पान नहीं भेजा। इन योजनाओं मे बिहार के दक्षिणी हिस्से के गया पटना, नालदा, भीरगावाद नवादा, भन्नमा जाहाबाद ग्रादि जिलो को स्थायी रूप ने सिचाई दे कर सुखे से बचाया जा मक्ता है। परन्तु ये योजनाए अभी तक भारत सरकार के पास नहीं बाई हैं चार योजनाए समाप्त हो गई और पाचवी योजना से भी इसको इन्क्लड नहीं कर सके है। मैं माननीय मत्री जी स पूछना चाहता हू वे बनाये कि इन योजनाओं के बारे में वे क्या कर रहे हैं? इसरी तरफ केन्द्रीय मनकार की झोर से यह तय किया गया था कि जो पिछडे हए राज्य हैं जन को प्रधिक से प्रक्रिक प्राधिक सहायता देकर विकसित राज्यो के मकाबले ये बढ़ा करने की कोशिश करेंगे। विहार

एक पिछडा हुंचा राज्य है जो खास कर सुखाड का क्षेत्र है, जहां केवल बिजली पर ही निमंद किया जा सकता है। महम बिजली बोर्ड से कहा या कि तेनुवाट में जो कोयला क्षेत्र के मध्य में बसता है और जहा पानी की भी सुविधा है, एक बमंल पावर स्टेशन लगाये जो केन्द्रीय श्रोजेक्ट में हो। लेकिन ग्राज तक उस का निर्णय भ्राप का बिजली विभाग नहीं कर मका है। में निवेदन करूंगा कि माननीय मत्नी जी भ्रपने उत्तर में इन योजनाधों के सम्बन्ध में बतलायें तथा यह भी बताये कि तेनुधाट धर्मल पावर स्टेशन को केन्द्रीय श्रोजेक्ट में लेने जा रहे हैं या नहीं।

धाज कोयले की बमी है धनाज की क्मी है-- यह बात मही है। लेकिन में ग्राप के माध्यम से निवेदन करना चाहना ह---भ्राप बार बार यहा कहने है कि काम भीर मीडियम क्लाथ बनाने के लियं हम मिलो का ब्रादेण देते है लेकिन वह फिर भी नही बनना है। जो बनना है, मैं पूछना चाहता ह---वह वहा जाता है। बाज हमार यहा गरीबो को एक मीटर कपड़ा भी कन्द्रोल के दामो पर नहीं मिल रहा है। मेने इस सम्बन्ध मे अपने यहा के जिला अधिकारी में तथा ग्रन्य ग्रधिकारियों में पूछा, लेकिन वे लोग भी अपनी असमयंता दिखाते है। बाज इम दण की यह स्थिति है कि जिन की जरूरत है, उन को जरूरत की चीब भी हम नही पहचा सके है। हमारी वितरण प्रणाली इतनी दाषपूर्ण है कि की ज जनता तक पहच ही नहीं पानी । भ्राप को इस ममस्या पर गम्भीरता से विचार करता चाहिए । यदि वितरण प्रणाली में सुधार नहीं किया गया तो वे बीजें काले-बाजार मे जायेगी ग्रीर काले धन की बढाने से सदद करेगी।

इन शब्दों के साथ में इन अनुपूरक मायों का समर्थन करता हूं।

श्री श्रोंकारलाल बेरवा (कोटा) : सभापति महोदय, यह जो अनुदान की मांग 352.70 करोड़ रुपये की सदन के सामने पेश है, म इस का विरोध करने के लिये खडा हुआ ह । मुझे नो ऐसा लगता है जैसे घर की मुर्गी दाल बराबर--जब चाहो पका लो, खा लो । जब रुपये का घाटा हम्रा, जब जरूरत पडी, फौरन सप्लीमेन्टी डिमाण्ड पेश कर दी, क्योंकि वहमत ग्राप के पास है, जितना चाहा निकाल लो, जितना चाहो रख लो । में जानना चाहता ह कि यह घाटा क्यो हमा ? मितिरिक्त मार्गे लाने की यहा क्यो जरूरत पड़ी ? स्राप ने चुनाव में देखा होगा--पिछले प्नाव मे 70 कराड रुपया लगा दिया, 300 जगहा का उदघाटन करन के लिये प्रधान मन्नी जी गई, क्या उन मे पैसा नही लगता है ? जनता बेचारी क्या जाने, विदेशी मुद्रा क्या है सीर देशी मुद्रा क्या है। जब दैक्स लगता है तब मालम पडता है कि सरकार क्या कर रही है।

इस में लिखा है कि 125 करोड़ रुपया खाद्याचा की नई प्रणाली के लिये रखा गया है। हमारे शिण्डे साहब ने कहा था कि हम खाद्याच्य की एक नई प्रणाली बनाने जा रहे हैं। अभी जो प्रणाली बनी थी उस में यह था कि 105 हपय क्विटल के हिमाब से खरीदों और 165 के हिमाब में बेचा। में सरकार में पूछना हू कि यह 60 हपये का फर्क किस बान का रखा गया है, किन ना खर्चा अनत है? क्या इनना चर्चा रखा प्रणात है वा चूहे खा जाते हैं या खाद्य निगम वाल खा जाते हैं, कीन इनना पैसा खा गया, कैसे इतना खर्चा है कि 60 हपये का खर्चा कैमें बाता है?

जहातक लेवी का सवाल है--- प्रभी पुलिस की चर्ची हो रही थी बेतन वृद्धि के लिये वैसारका है। बहु बही पुलिस है जो घाप को सलाम करने के लिये रखी जाती है। कही हड़ताल हो तो मजदूरों को उण्डा मारने के लिये काम में माती है, लेवी की वसूली करनी हो तो किसानों को उण्डा मारने के लिये है, इसी लिये म्राप उन का पैसा बढा रहे हैं। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस म्राप को सलाम करने के म्रलावा भीर कौनमा काम करती है। ठीक है—पैसा बढाइये, म्राज कल महंगाई इतनी ज्यादा है कि पैसा बढ़ाना ही चाहिये—लेकिन उन का उपयोग क्या है?

रोजाना अखवारों में काले धन की चर्चा बाती है, फला जगह इतना धन मिकला. फला जगह इतने वोरे ग्रनाज के निकले, इतने बोरे सीमेन्ट के निकले, लेकिन वे कहा जाते है ? क्या मूपर म. केंट मे जमा कराये गये, उन का क्या हुआ। ? मैं तो यह समझना ह कि ये जिनने मिनिस्टर बैठे हुए है इन्होंने ही सारा काला धन दवा रखा है, इन के घरों में दबा पड़ा है, लेकिन इन की बान कौन करे ? जैस मिनेमा के पर्दे पर दीखने वाले. गाने वाले ग्रीर देखनेवाले नीनो अलग अलग रगो से सामने आते है वहीं हाल इन का है-वाहर में कुछ है और अन्दर से कुछ है। कभी कहते है सी का नोट खत्म करो. कभी कहते हैं कि परिवार नियोजन का सिक्का निकालो. कभी कहते है कि खादान्न स्थिति खराब हो गई है, कभी कहते हैं कि व्यापारी घोखा देता है, कभी कहते है कि पौपूलेशन बढ़ गई । धरे, कही तो झा कर ठहरी। यही कहो कि पापुलेशन इनने करोड बढ गई या हमारा खाद्यात्र घटता जा रहा है क्योंकि हमारी नीति गलत है।

मै कहा तक गिनाऊं भाप ने खाद धौर बीज की ऐसी-ऐसी एकेन्सिया दे रखी है कि भाज किसान को खाद 300 रुपये क्विंटल में मिलता है, जब कि वह भाप को भ्रपना स्टाक 105 रुपये में देता है। लेबी में क्या होता है—आप ने 35

[श्री फोंकार लाल वेरवा]

किलो के हिसाब से लेबी लगाई है—पहले पटवारी जाता है वह वसूल करता है, फिर वी 0डी० ग्रो० जाता है—कहता है, नहीं तुम को 10 वोरी ग्रीर भरना होगा। उस के बाद कलैक्टर जाता है—नहीं तुम को इतना भीर भरना पडेगा, क्योंकि उस की सारी जमीन का ठेका ग्राप ने लिया हुक्का है। कभी ग्राप ने यह सोचा कि वह किस तरह से पैदा करना है—10 वी ग्रे जमीन में कितनी खाद लगेगी, कितना बीज लगेगा, किस कीमत पर खरीद कर वह इन बीजों को लगायेगा, कभी ग्राप ने हिमाब लगा कर देखा है? यह सब इम लिये है कि ग्राप ने कोई नीति नहीं बनाई है।

खाद को ही ले लीजिये—रातो गत भाव बढ गये—50 रुपये से 105 रुपये हो गया, पाटा खा 30 रुपये थी, कोई पूछना नही था, लेकिन ग्रंब 65 रुपये हो गई। पानी का रेट इतना बढा दिया कि मेरे स्थाल मे ग्रंब किसान सिचाई भी नहीं कर मकेगा। यह बडे अफसोस की बात हैं यहा चार दीजारी के अन्दर बैठ कर ग्राप सारे कानून बना देते हैं, कभी किसानों से भी पूछा है कि तुम किस तरह से काम कर रहे हो। ग्राप कहते ह कि 400 करोड़ रुपये का खाद बाहर से मगाते हैं, किसान ग्रंपने ग्राप खरीदेगा। क्या ग्राप ने सोचा कि उम में 105 रुपये मे लेगे लेकिन खाद पर ग्रीर दूसरी चीजों पर उम की क्या लागन ग्रा रही है।

एक ब्रोर नमाणा है— किसान को कहते हैं कि हम तुम को मीमेंन्ट देगे, लोहे की चहरे देगे । किसान ब्रमाज देना है ना उस को रसीदे पकड़ा देते हैं कि तुम को 4 चहरे मिलेगी, इतनी बोरी खाद मिलेगी, इतनी बोरी सीमेंन्ट मिलेगी । यह बेचारा उन चीजों के लिये 15 दिन तक क्लक्टरी के चक्कर जगाना है, चक्कर लगाते लगाते उस की रसीद गस जाती है— न उस की चहरें मिलती हैं, न खाद मिलती धौर न सीमेन्ट मिलता हैं। हमारे खाद्य मंत्री जी तो ग्रंब राष्ट्रपति वन गये—कौन देखता है कि उस की क्या हालत हो रही है। जो भी इस महकमें में ग्राता है नाकामयाव हो कर जाता है।

भाव कीन बढाता है--बनिया बढाना है या भ्राप वहाते हैं? पालियामेट में भी मिलता है पहले सान रूपये किनो लेते ये श्रव 25 रूपये किलो मिलता है--क्या यह मृत्य हमने बढाया है। रेल के किराये क्या हमने बढाये है, तेल, माबन का दाम क्या हमने बढ़ाया है। जब म्राप खद 105 रूपये में लेकर 158 में बेबोगे नो क्या दकानदार का दिमाग खराव है जो ग्रापकी नीति के पीछं चलेगा । पहले ग्राप दाम बढाने है नब द्कानदार बढाना है। ग्राप एक पैसा बडाने है नो द्वानदार भी एक पैसा. या श्राधा पैसा बढाता है। शोर मच जाता है कि बाज दाम वहने वाला है वह प्रानी चीजो के दाम भी बढ़ा देता है। ग्राप इतना तक तो कर नहीं सकते कि जो पुरानी चीजे है उसकी तो पराने भाव पर विकवा सके। प्रभी इदिरा जी गजरात में जा कर 5 करोड़ रूपया ले आई, चनाव के लिये नैयार हो जाओ । कैसे मृत्य घटेगे । जो रियनि है उसमे ग्राप कैसे मल्य घटा मकोगे ? आपकी फैक्टरिया चल रही हैं. भ्रापकी एचा एमा टी० घडी पहले 138 मे मिलन थी लेकिन ग्राज इसकी कीमन 168 हपा है। यह नो श्रापकी श्रपनी बनाई कम्पनी है। मन्य वृद्धि तो धाप स्वय कर रहे है। फिर सरकार कहती है कि सरकारी बाजार में हम मल्प वृद्धि नहीं कर रहे हैं। धापने कभी दवाई की दूकान देखी है ? जो कैंप्सूल पहले 6 पैसे में ग्राना था आक वह 15 नैने में मिल नहीं रहा है। जो सरकारी फैक्टरिया है उनका यह हाल है। नो मृल्य वृद्धि कभी घट नहीं सकती है प्रारं न खाद्य रियनि ही मुधर सकती है।

भापने निवाई नाधनों के लिए 125 करोड़ रखे लेकिन राजस्थान वालों से क्या कहा कि जम्म कश्मीर के नीचे कोई बांध वन रहा है उससे राजस्थान को विजली देंगे। श्राप वहा की बिजली उत्तर प्रदेश वालों को ही दे दीजिए, राजम्थान नो वहा से बहत दूर है। यह भापकी योजना है। भ्राप कहते है चम्बल बाध बना रहे है वहा से राजस्थान को विजली मिलेगी । हम कहते हैं राजस्थान मे एटामिक पावर स्टेशन बना हमा है, चम्बल बाध है वहा से बिजली नहीं मिल रही है। 14 माल हो गए बाप लिफ्ट इरींगेशन भी नहीं कर पाये। वहां की भाग्नी जमीन पानी के वर्गेर मुखी पड़ी हुई है। वहा पर लोग बाढ के लिए चिल्ला रहे थे लेकिन राजस्थान का तो ऐसा एरिया है--बाडमेर, जैसलमेर, जोधपुर की सरहद पर-जहां लोग एक एक बद पीने के पानी के लिए तडप-तहप कर मर रहे है। ग्राप लम्बी-बौडी बानें करने है कि इनने बाध बनवा देगे, इतने कृये बनवा देगे लेकिन राजस्थान में लिएट इरीगेशन के इतने माधन होते हुए भी वहा पर विजनी नही बनेगी, श्राप कहते है जम्म कश्मीर मे बाध बनवा रहे हैं वहा से बिजली देगे।

इसी तरह से मैं श्रापको बताना चाहता ह कि हमारे यहा कोटा का जो पूल है वह टट बका है और सारा टाफिक ग्रापके बाध पर होकर जा रहा है, कोटा डैम के ऊपर होकर जा रहा है। धगर एक पूरा ट्रक जाता है तो पुलिया धरीनी है, गजनी है। इसलिए आप जल्दी में जल्दी उसकी बनायों नहीं तो कोटा रैम भी राम राम कर आयेगा । ग्राप राजम्थान सरकार को टेलीगाम मे या किमी तरह में कहिए कि जन्दी में जल्दी इस पुलिया को बनाये । प्रगर इरीगेशन वाले बनायेगे तो उमको कोई नकमान नहीं पहचेगा। लेकिन उस नहर को, उस बाध को बनाने से पहले धगर राजस्थान कैनाल को बना दें तो वह हम सभी को पानी दे सकती है। इतनी लम्बी-बोडी छलांग मारने में काम नहीं चलेगा, राजम्बान कैनाल किनने दिन से प्रापके ऊपर धास बहा रही है लेकिन भापने कुछ नही किया।

भी चन्द्र भास मनी तिवारी: (बलराम पूर) : समापनि जी, ब्राज इस बहम में भाग निने का अवसर मेंझे मिला इसके लिए आपका धन्यवाद । मेरा निवेदन है कि ब्राजकल की प्रयं व्यस्या इतनी जो विगढ गई है, उसके कारण क्या हैं. क्या इसकी तह में जाना हमारी संकार का कर्तव्य नहीं है ? इसमें ग्रमो तक सरकार क्यों फेल रही है ? ग्राप तमाम इन्तजाम कर रहे हैं. प्रबन्ध कर रहे हैं. नेल बना रहे हैं लेकिन मेलों में क्या कुछ खर्चा नहीं लगेगा ? भवश्य लगेगा । मैंने एक 8 पेज की किताव मन्त्री महोदय की सेवा में भेजी थां, जो मैं सभी टेबिल पर भी रखना उसमे हमने निवेदन किया है कि किस नरह से जो ग्राजकल ग्रयं व्यवस्था विगड रही है उसको मुधारने के लिए कदम उठाये जायें। मैंने उसमें लिखा है ग्रहमारे जो करेन्सी नोटम हैं उनको विदडा करना चाहिए। जिनने भी पैसे वाले हैं उनके काउन्ट वैक में हाँ। साथ-माय उनकी जो बैक खाते की किताबे हैं उसमें उनके फोटो होने चाहिएं जो कि मटेस्टेड हों। इस प्रकार पैसा निकालने श्रीर पैसा खर्च करने का हिसाब किताब बैक में रहेगा भोर बैंक का पैसा चैक में लोगें को दिया जाये। वितरण प्रणाली में भावको चेज करना पडेगा। यह सारी वाने मैंने उस किनाव में मेशन की है। मैं समझता ह इस प्रकार का रास्ता ग्रंपनाने से जो ब्लैकमनी बढता जा रहा है उसमें बहत बडी रुकावट ग्रायेगा । हम कराधान मे जरूर उनको खोखला करना चाहते है लेकिन कराधान से जो होशियार वर्ग के व्यापारी हैं वह वच जाने हैं भीर जो ईमानदार व्यापारी हैं वही नही बचने हैं। नतीजा यह होता है कि गरीब और गरीब बनते जाते हैं तथा अमीर और अमीर बनने जाने हैं। मेरा श्रापमें निवेदन है कि जो श्रापको रिजवं बैक है उसकी शक्ति में इस देश की ब्लैकमनी को रोकने के लिए कदम जडाये जाये जोकि मैंने उसमें निवेदन किए है।

मैंने घभी घपनी कास्टीटुएन्सी में रेड कराया था। हमारी क्वां ब्यूरोकैंगी है वह कहा

[बीमोंकार लाल बेरवा]

तक ईमानदारी से काम कर रही है उस पर भी झापको गौर करना है। हमने जो रेड करवाया उसमें लाखों रुपए की सम्पत्ति मिली लेकिन मैंने इनकम टैक्स झाफिसर, उत्तर प्रदेश से पूछा कि क्या धन मिला तो उन्होंने कह विया धभी बताने की क्षमता मुझम नही है। दस रोज हो गए झाज तक जन्होंने मुझे कोई जवाब नही दिया है। क्या मतलब है, क्या वह भी गोलमाल करना चाहते है? (ब्यवधान) भेरा निवंदन है कि हमारा इनक्म टैक्स विभाग, सेल्स टैक्स विभाग जो घपलेवार्जा कर रहा है जिससे ब्लैकमनी रोज बना जा रहता है उसके लिए सरकार उनको चेतावनी दे और सक्ती में उनको इमानदारी से काम करने के लिए वाध्य करे!

हमारे देण के कुछ हिम्मों पर नैपाल की सरहद पडती हैं। हम तो अपने देण मे अनाज के लिए, कपढे के लिए तरमते हैं, ऐसा लोग कहते हैं लेकिन हमारे जो वस्टम अधिकारी नेपाल बाडर पर वैठे हैं वह मालामाल हो रहे हैं। दूकों से लदी हुई चीजे, कपड़ा, गल्ला और दूसरी जरूरम की चीजे रोज नैपाल को जा रही है लेकिन ईमानदारी में चेकिम नही होती है। मैं निवेदन करूगा हमारे जो सरकार के कमंचारी हैं वे इस पर ध्यान दे।

एक बान मैं और निवेदन करना चाहता हुं कि एम० पीज० का कि सेन बनाया जाये, यदि मरकार मुनासिब समझे, जोकि हर तरफ अपनी निगाहें रखे। जहा वह मुनासिब समझे, सरकार को डाये क्शन दे और सरकार उस पर मुनासिब कार्यवाही करे। इस बात को मैंने पहले भी कहा या लेकिन आज तक इसका कोई प्रबन्ध नहीं हुआ। व्यूरोकैसी के कंधे पर यह बीज रखी गई है जो हमेगा हमारी सरकार को बोखा देते रहें और हमारी सरकार कुछ पता महीं क्या कर रहां है, कैसे उसके कदम हैं कि बह उनको बाच की नृहीं कर पाता। हमारे वेस मे रेसवे लाइन के किलारे की जो जमीन पड़ों हुई है उसको हमारे स्वर्गीय सास्त्री जी ने भूमिहीनों में बाटने के लिए कहा या लेकिन अफसोस है कि आज तक वह सारी जमीन नहीं बंटी है। सगर कुछ जमीन झाप बाट भी पाये हैं तो वह रेल कर्मवारियों के हाथ में ही गई है जिनको कि उसकी भाव-भयकता नहीं थीं। हमारे जो गजटेड झाफिमर्स हैं उन्हीं के पास वह जमीन गई है। इमलिए छोटे किमान जोकि झाज भुखमरी के शिकार हैं उनके पास वह जमीन जानी चाहिए।

मैं यह भी निवेदन करना चाहता हु कि
जो हमारे वार्डम है जहां से इस देश के लिए
खतरे की घंटी बजती है वहा पर टेलीफोन
और वायरलैंस की मुविधा होनी चाहिए।
हमारा नैपाल का वार्डर बहुत बडा वार्डर है उत्तर लेकिन वहा पर सरकार ने टेलीफोन
और वायरलेंस की मुविधा नहीं दी है।

स्त्री सच्चु लिसवे : ग्राप जानते है ग्रापका उत्पादन का जो कार्यक्रम था उसमे विलम्ब हुग्रा ।

भी वेबकान्त बच्छा: वह तो है।

श्री सधु लिसवे: ग्रगर मैं ड्यूटी का सवाल नहीं उठाना, उधर किसी का ध्यान नहीं जाना तो 50 परमेन्ट ड्यूटी भी नहीं होती।

श्री चन्द्र भाल मनी तिचारी : कृपया इधर मनी महोदय का ध्यान जाना चाहिये। हम जो देश में काला धन निकालने के लिये प्रयत्न कर रहे है क्या उस में हम को ग्रामातीत लाभ हो रहा है ? नहीं हो रहा है। हम ने वित्त मनी से यह मांग की थी कि देश में कितनी करेन्सी है वह बताये। उन्होंने जो फिगर दी उस का चलना उन को एंस्टीमेंट कर के बताना चाहिये था कि हमारे कागजों से कितना है। जो कागजों में नहीं है वह ब्लैक मनी में है। लेकिन कस्पैरिटिव चार्ट क्लि मंग्री। महोदय में नहीं दिया। वह बताये।

125 Suppl. D.G. (Genl.), BHADRA 9, 1896 (SAKA) Suppl. D.G. (Genl.), 126 1974-75

एक बात और अन्त में कहना चाहता हूं कि इस देश में काले बाजारियों ब्लैंक मनी कमाने वालों को मामने पकड़े जाने पर जूट किया जाना चाहिये, ऐमा कानून बनाना चाहिये। अन्यथा देश में पौरल की काफी कमी हो गई है जिस की बजह से मुधार नहीं हो रहा है। इस ब्लैंक मनी बनाने वाली परम्परा से देण को बनाये।

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF DEFENCE (SHRI J. B. PATNAIK): Certain points were raised by two hon. Members regarding the functioning of the Defence Ministry. Shri Madhu Limaye and Shri S. M. Banerjee are not present in the House now. Even then I would like that these points raised by the hon. Members should not go unanswered.

Shri S. M. Banerjee has raised the issue of setting up of an experts classifcation committee for Defence civilians. A decision was taken by the Government in this regard many months ago. He has raised a doubt that the formation of this mittee has now been shelved. I want to assure this House that there is no question of shelving the formation of this committee. There has been some delay in receipt of the names of the representatives of the federations and of the official representatives Secondly, a panel of Retired Judges from which one is to be selected for appointment as Chairman has yet to be called for from the Department of Justice under the Ministry of Home For these two reasons, the formation of the committee has been But I would like to assure the House that within two to three months' time this committed would be formed.

Shri Madhu Limaye has raised a number of points. His first point was about an alleged theft in COD, Kanpur. I would like to make it clear that there has been no theft in COD, Kanpur. On 21st March, 1974 it was reported that about 700 kgs of brass was missing. After a thorough search

of the surrounding area with the help of the security staff, this brass was found and the quantity was located and it was purely a case of misplacement.

PROF. MADHU DANDAVATE. (Rajapur): Where was it found?

SHRI J. B. PATNAIK: In the surrounding area in a sub depot. It was replaced in the store. There was nocase of any that there. It was a case of misplacement.

He made an allegation of theft. He said, a lunatic was brought insidethe depot and was shot, This is also not correct. On 4th May night a Defence Security Corps Sentry was on patrol duty; he was in no man's land lying between the road and the mner perimeter of the depot He noticed some intruder who ran and climbed the inner perimeter of the fencing with a view to avoid arrest by the challenged Sentry. The Sentry the intruder and since there was no response fired at him. The second shot fired by the sentry hit the in-truder in the leg He was apprehended and handed over to civil police. The matter is under investigation by the local police So there is no question of a lunatic being brought inside the depot and being shot etc.

He said, wagons were taken away by conspiracy of some people from the depot

PROF MADHU DANDAVATE:
About the lunatic having been shot
at, this item appeared in the Press. In
that case, why did you not contradict it? It appeared in the Press.

SHRI J. B. PATNAIK: I am making contradiction now.

PROF. MADHU
Events took place some time back.
These news-items press. Why was it not contradicted earlier?

SHRI J B PATNAIK Every news item need not be contradicted We need not contradict every item appearing in the press. Because it was raised by the hon Member here I am contradicting it on behalf of the Government

Wagon No CR 54069 was received in the depot on 5-6-74 The endorsement 'seal of ane side of the wagon was knotted' exists on the wagon check list of that date It was presumed someone had tampered with the seals and depot therefore did not unload the wagons nor did it reseal it. as it was require i to be unloaded in the presence of railway staff On 7-6-74 the orderly officer of the depot found that wagon was being drawn out from depot by the railway pilot engine when it was not included in the drawing out list of loaded wagons for that date Actually along with this wagon 53 other wagons of which 33 were lying loaded and 20 empty were being taken out The guard who was interrogated by the orderly officer admitted that he has connected this particular wagon by mistake with the others mentioned in the drawing The matter was brought to the notice of concerned railway autho rities

He raised the issue of residential accommodation for the married offi cers in the armed forces In fact a decision was taken in the Emergency Committee of Cabinet on 9-12-65 that married, separate families accommodation for defence services should be bui't up in a phased programme, over a period of 15 to 20 years Accord ing to this phased programme since 1966-67 to 1973-74 married accommoda tion has been built for the forces As a result of this construction of accommodation the percentage of satisfaction has gone up to 64, in the case of officers and 53 for others in the army It is 42 for officers and 51 for others in Navy It is 69 for officers and 89 for others in Air Force. Even then the situation is not

satisfactory There are number of officers and number of others who are not finding accommodation. For this purpose we have made budget provision this year. But as the House is aware we have to function under certain financial constraints. I am afraid the 1965 programme would not be fulfilled if these financial constraints continue to operate. Even then accommodations are being provided.

Officers are permitted to hire mar ried accommodation of their own and to claim reimbursement of the differ ence between rate of accommodation and the rate that would have been recovered from the officer had he occupied a Government accommodation

Beside, this JCOs and others of the army and equivalents in the Navy and Air Force are also allowed to hire mairied accommodation and then claim compensation in lieu of quarters Besides this it has been decided that in A-class city accommodation has to be found out for the officers terms of construction of hostels These are the means by which we try to find out accommodation for those officers and men who are not finding accommodation because of the factors stated by me earlier

Shri Limaye again raised the issue of higher viscosity of furnace oil This has been clarified to by the hon Shri Borooah. As far as Defence Ministry is concerned, he had correspondence with the Finance Minister. He must have got the answer from him. He raised one point to-day. He said that the Navy was using higher furnace oil—furnace oil of 100 c/4 viscosity.

भी मध् लिससे यह मैंने नहीं कहा। मैंने कहा कि श्री सी० बाई० राव ने टेलेक्स मेमेज भेजा बा सौर उस मैं 100 विस्कोसिटी का सायल भेजने के लिए कहा बा। नेबी के लिए मैंने नहीं कहा। 129 Suppl. D.G. (Genl.), BHADRA 9, 1896 (SAKA) Suppl. D.G. (Genl.), 130 1974-75

I have given you a copy of the documents. I do not know why you are not replying to the matters raised by me point by point?

SHRI J. B. PATNAIK: You do not patiently hear me.

SHRI MADHU LIMAYE: Have you got the document?

SHRI J. B. PATNAIK: I am replying to the points. So far as Defence Ministry is concerned. a reply has already been given to the points raised by you by the Defence Minister He has also replied to the same in his letter to you.

So far as the Navy is concerned, there is no question of their using furnace oil of a higher viscosity than prescribed

श्री सघुलिसये उस वक्त तिःस विस्को-सिटी का तेल आरप इस्लेमाल कर रहे है।

SHRI J. B PATNAIK I have told you that you do not have the patience to hear me I said that at present Navy is using furnace oil of 80 C.S. viscosity which has been prescribed by the I.S.I. and not more than that. He raised another point regarding sending of our MIG aircraft to the USSR for overhaul and repair. Construction of MIG aircraft was undertaken in the early part of sixties. But the overhaul facility was not immediately available. That was created in late sixties and, by 1970-71, Hindustan Aeronautics Ltd. was in a position to undertake overhaul of the aircraft and they have started their overhaul works. Of course, m the meantime, there was some accumulation of MIG 21 series for repair and a few MIG 21 aircrafts have been sent to the Soviet Union for repair work. I think I have answered the questions raised by the hon. Member.

SHRI P. G. MAVALANKAR: Mr. Chairman, Sir, when this debate on supplementary demands....

2010 LS-5.

MR. CHAIRMAN: Mr. Mavalankar, you please be brief because the time for the Independent Members has been exhausted. Have only fifteen minutes.

SHRI P. G. MAVALANKAR: When this debate on supplementary demands involving a sum of Rs. 352.72 crores is going on. I see that the attendance is very thin partly because this is the week-end, a Saturday, on which the House is sitting and also because already various severe objections by the Opposition have been effectively voiced. I do not want to repeat all those arguments. I have also moved several cut motions, and one of them is about the Government's failure to control effectively and efficiently the inflationary spiral in the economy.

I came across an article recently written by my friend, Mr. Dandavate, which has appeared in the magazine 'States' of 31st August, 1974 wherein he has given interesting facts, namely, in other countries the rise in prices is accompanied by a rise in wages. If you take many of these western countries, you was find that if there is rise m prices there is a corresponding rise in wages too. In our country, however, I am sorry to say that not only the rise in wages is not corresponding to rise in prices, but that the Government have instead come forward with a Bill-unfortunately, already passed -whereby all extra things they get by way of wages will have to be deposited compusarily for a period of one to two years. This is very unfortunate and it hits adversely the labour and the working classes and the middle classes. Further, Sir. India according to the International Monetary Fund's statistics of December 1973 happens to be the third country in terms of largest rate of inflation, the first two being Chile and Vietnam.

I am sorry to say that in our country today, the food situation, the flood situation and the scarcity situation have all become very critical, and I wonder sometimes how we all are

131 Supply D.G. (General), AUGUST 31, 1974 Supply D.G. (General), 132 1974-75

[Shri P. G. Mavalankar]

carrying on in this great country inspite of this critical situation. Now, even if people have feelings of despondency and helplessness, I should Government cannot go on remaining helpless. Recently, the Prime Minister has been making a number of trips to various States. She visited Gujarat on 2nd and 3rd August. Nobody disputes the right of the Prime Minister to go to the various parts of the country with a view to exploring the augmenting of agricultural production, but I would like to ask Shri Ganesh or the Food Minister whether such visits of the Prime Minister to various States are bringing any appreciable concrete results, or are they merely explorations in some other activities than agriculture? There is also the defective public distribution system In Gujarat, for example, one finds not only the system is defective but the grains supplied are madequate and the quality is of much lower quality. That is very unfortunate If you really believe that the economically backward people must be given foodgrains then surely it must be adequate and of at least modicum quality.

I have two points to make about floods and river projects. What is happening to irrigation network? Are Government spending enough in terms of massive control of floods? The other day Dr. Rao was complaining about it but he complained only after he had laid down his office Let us know what the Government is doing for having effective flood control.

In regard to power, there is the atomic power station at Tarapur which gives electricity both to Maharashtra and Gujarat Although this power station is financed jointly by Gujarat and Maharashtra, I find recently there is a move to divert some electricity supply to Andhra Pradesh. If electricity goes to Andhra Pradesh we are happy, but it cannot be at the cost of Gujarat and Maharashtra, especially

when Tarapur plant is jointly financed and put up by Gujarat and Maharashtra. For a long time Gujarat was paying 5.8 paise per unit. Then Tarapur authorities wanted Gujarat to pay more, so from 5.8 paise per unit it was raised to 6.27 paise per unit.

But, they want eight paise. Ultimately, Sir, there were some negotiations, I believe, between Gujarat, Maharashtra and the Centre and the Tarapur plant authorities were csked to compromise at 7.8 paise per unit. But, they are refusing to do it; they are insisting on eight paise Therefore I would like the hon Minister to tell us something more about this matter as to why should Gujarat and Maharashtra suffer, especially Gujarat, because the switches are in Maharashtra? Since the switches are in Maharashtra, it can really stop the supply Sir, Gujarat is thue kept in particular predicament, which I think is very wrong and unjust, especially when we know that Gujarat is very short of power suprly We do not have yet the Narmada Project, and we do not have other sources of generating power. It is difficult and more expensive to get coal from the distant areas of Eastern Region have to depend on this source. Therefore, Sir, I would like the Minister to reply to this point

Sir, since my time is limited. I would mention only two more points before I sit down. One is about scarcity and drought I shall have an occasion to speak about this in a little more detail, when I shall be able to speak on the Gujarat Budget But, I do wish to make it clear that it is not a point concerning only Gujarat. Sir, unfortunately, today, we find that -some Members mentioned about it; Mr Sethi made a reference to it-Orissa and Gujarat are particularly hit with floods on the one hand and scarcity on the other. It is a very terrible irony of the situation that some areas are flooded with water and vast areas of State have no water at all! Most of Guiarat has not

water, and according to the metereological experts, Gujarat is now in the last category of rainfall, i.e., below 5 inches, and since more than half the monsoon is over, there is no possibility or likelihood of any appreciable rains coming. Therefore, Sir, Central Government's massive financial assistance must come forth for those States which are hit by such unprecedented scarcity conditions. I would not like the Government of India to take shelter under the recommendations of the Sixth Finance Commission. It is particularly tragic that the first year of operation of the recommendations of the Sixth Finance Commission should coincide with the first year of drought and floods in Gujarat and Orissa. Therefore, Government of India cannot say 'because of the recommendations of the Sixth Finance Commission, we are not able to help you and , you must depend on your own resources'. But, where are the resources? If we are to divert annual plan resources to expenditure on scarcity relief works, that can be done. But, that will be a very small percentage, a drop in the ocean. We just cannot stop the schools; we just cannot stop other projects; the projects which are about to be completed cannot be kept hanging. Therefore, we have to depend on financial assistance for the State from the Centre, and I hope Shri Ganesh will do that.

Finally, I wish to say this Ganesh has been continuously, not once but repeatedly coming to us before the House and talking about his helplessness to stop smuggling. I am prepared to accept his sincerity, that he is sincerely concerned about the problem of smuggling. But, if a Minister of State of Finance of the India comes re-Government of peatedly before this hon. House and expresses his helplessness all time. I would like to ask, is this Government? It is we, on this side, and the country and the people at large who can feel helpless in this mater. But, if Government also begins to say We are helpless; we cannot do anything', then, it is not helplessness, but surely there is something "wrong in the State of Denmark". We begin to suspect; we begin to have our own inferences. Therefore, let the hon. Minister not come again and a air with this attitude of helplessness. Then, Shri Ganesh talks about his idea of 'Satyagraha'. Of course, it it a good idea. But, let him leave this to the opposition parties and the people. As part of the Government, let him take effective steps in this matter, and not just offer 'Satyagraha'.

Before I conclude, I would also something on the delike to say There shall have to mand-Police. be very sincere and honest efforts with regard to proper understanding and relationship between the police and the public. Sir on the 8th and 9th August, in Ahmedabad, 25 newsmen were lathi charged at the residence of Mr. Sarin, Adviser to the Governor. Since that day, the Gujarat journalists, unanimously, have been demanding a judicial enquiry into this incident. But what the Government did was to appoint Shri Chandramouli, one of the Government Officers to conduct the enquiry. I am told that he has not yet started that enquiry. But, we are not going to have an enquiry by Governmental agencies for acts of Governdepartments. We want, mental therefore, a judicial enquiry and I support this demand for a judicial enquiry, made by the journalists, and I hope Government will do it. I say this because I feel distressed even after 27 years of Independence. the relationship between the public and the citizens on one side and the Police on the other, is far from satisfactory and far from what it should be, in a democratic set up. In a democratic set up, people have a right to protest peacefully, democratically and forcefully. As long as they are not violent or unconstitutional in their protest, the Police must be trained to behave in a manner which is in tune with the conditions that obtain and that ought to obtain in a democratic set up.

भी माम राम मिर्का (नागीर) - आज देश के हालात काकी चिन्ताजनक हैं भीर इन को सुधारने के लिए सरकार काफी प्रयत्न कर नहीं है। इस सिलसिले में उसने इस साल वो बजट पेश किए हैं भीर दूसरे बजट मे पहले से भी ज्यादा टैक्स लगाए है। पहले वाले मे 212 करोड़ के लगाए थे छौर इसरे वाले मे 232 करोड के लगाए हैं। कुछ महीने निकल गए हैं इसलिए इस में कुछ कम मिलेगा। भ्रगर टैक्स लगाने से समस्या हल होती हो तो टैक्स जरूर भापको लगाने चाहिये। मैं मरकारी पार्टी मे बैठने वाला सदस्य हु इस वास्ते मैं बहुगा कि कुछ सोच समझ कर ही धापने टैक्स लगाए होगे । जो टैक्सो से भ्रापक पास पैसा श्राएगा वह खर्च कैसे हागा यह भी धापने बताया है, कुछ तो तनस्वाही मे जना जाएगा, कुछ महगाई भत्ते मे चला जाएगा कुछ कोर सैक्टर मे खर्च ग्राप वरेग विजली बढ़ाने के लिए करेंगे, खाद का उत्पादन बढ़ाने में करेंगे पानी के बाध बनाने में बरेश इरिगेशन बढाने पर वरेग । इम्पार्टेट मैक्टर जो हैं जिस को कोर सैक्टर कहते हैं उसमे आप खर्च वरेने यह दिशा ठीव है। ग्राज के हालान में प्रधान मनी जी ने सब लागा का कहा कि निराम नहीं होना चाहिये। मैं भी समझता ह कि मिराश नहीं होना चाहिये। लेकिन हालात ऐसे हैं कि मैं जहा वही भी जाना ह चारो तरफ लोगा में उत्माह हा गेमा मझे विखाई नहीं देना है जी उत्माह लीगों में हीना चाहिये वह नजर नहीं झाता है। इन मारे हालान को देख वर निराशा ही होती है।

आपने कुछ आडिनेन्स निवाले टैक्स की लगाए। पहले आप ने कहा था वि अवाल पड गया, बगला देश की लडाई हो गई, अरणावीं आ गए इसलिए मुद्रा स्फीति हो गई। लेकिन अब हम क्ट्रोल करेंगे। उसके बाद आपने टैक्स लगाने गुरू दिए और नब बह सकता बंदा कि कुछ होगा लेकिन वह भी नहीं हुआ। योनाओं को ठीक खलाने से हमारी अवस्था सुघरेगी, ऐसी आशा भी आपने व्यक्त भी लेकिन वह भी पूरी नहीं हुई।

यह बाप मधी स्वीकार करते हैं सरकार भी करती है कि देश की दशा की, देश के हालात को सुधारने के लिए सब से पहले जरूरी बीज है कृषि उत्पादन बढाना । कृषि का उत्पादन बढाने के लिए हमारी दशा जिनती साफ होनी चाहियं नहीं है। किसान की हालन क्या हो गई है। खाद के भाव पहले से दुग्ने हो गए है, सिचाई के रेटम मब जगह बढ़ गए है बिजली के दुगने हो गए है और इस मब के बाद यह कहा जाता है किमान को कि भ्रापके द्वारा पैदा की गई चीजो के दाम नहीं बक्तयेग । दुगना खर्च करने वे बाद भी अगर भाव यहां रहना है ता विनान क्या ज्यादा पदा बरेगा और विशय पर तब जब उसको मालुम हा उसमे बसूल की गई वस्तुमा वा डिस्ट्रीव्यूणन भी इसी तरह से हाना है सार वसली की नीत भी यही रहनी है। वृषि उत्पादन करने बाला ता विभान हो है चाह छोटा हा बडा हा मध्यम दर्जे का हा । उसका कही भी कोई सरटनटी नजर नहीं आती है। आपने उसके दिए बानून बनाया है और वह विचन दिन के 170 है काई नहीं जानता है। वई तरह के उनके बार मनारे लगाए जाते है। एक विचित्र मा वातावरण किसान के बार में नार दश में बना हुन्ना है। उसको सभी चीजे महगी मिले लेकिन उसकी उपज सस्ते में जाएगा यह यहा तक उचित है। फिर विजर्ला जो देश मे है उसका दस प्रतिशत ही बार्जा ान का दिया जाना है खेती के काम के लिए और वह विअली भी कभी राप का दो घटे के लिए दी जाती है वभी दिन के समय दा घट के लिए दी जाता है भीर कभी विल्कुल भी नहीं वी जाती है। फिर उसके दाम भी दुगने हैं। इस सब के बावजद आप दूध बढ़ाने की बात करते हैं, मछली बढ़ाने की बात करते है मांस बढाने की बात करते हैं. बाकी सभी चीजी का उत्पादन बढाने की बात करते है। यब इन सब का उत्पादन बढ़ाने वाला तो किमान ही है चाहे बह गरीव हैं, छोटा है या बडा है। हमने कृषि ग्रायोग में बैठ कर बाठ दस रिपोर्ट दी हैं। ब्रब यह जो विषय है यह गज्य सरकारो का है। कोई इन रिपार्टी के बारे मे मोबता ही नही है, विचार ही नहीं करता है उन प्रावधानों के बारं मे जा रिपोर्टों मे दिए गए हैं। भ्राप टैक्स लगाते है, रेट्स बिजली इत्यादि के बढाते जाते है लेकिन ग्राप मे तथा राज्य सरकारो मे भी यह क्षमता नहीं है कि लोगों को छाने प्लाज मे इनबास्व करे, उनको ग्राप दिशा नहीं दे महते हैं। अब आप देखें कि उनको कडिट नहीं मिलता है। खाद के भान ग्रापने दुगुने कर दिए है । पिछले साल ग्रापने 28 लाख का खाद दिया था धीर इस माल 30-32 लाख का देगे । लेकिन खाद खरीदने बाना भाषको नहीं मिलेगा । जिस तरह में केंडिट फैमिलिटी ग्राज किमानो के पाम नहीं है। बोई मोबता ही नहीं है। डीजल, कृड ग्रायल के भाव दुग्ने हो गए है, विजली नहीं है। कुड ग्रायल भीर डीजल से चलने बाले पम्प जो हैं वे मारे के सारे बन्द रहेंगे।

राजस्थान के पाच सात जिलों में भय रर भाकाल की स्थिति है। डेजर्ट बढ़ना मा रहा है। डबर्ट को बढ़ने से रोकने के लिये ग्रापको रिपोर्ट भी दी गई है। न योजना मायोग का न धापका और नहीं राजस्थान सरकार का इस बारे में दिमाग साफ है। पाच जिलो पर भापको करोडो रुपया खर्च करना पडेगा. जमे फालन रेन को फेकने है, बसे ही ग्रापको खब करना होगा। लेकिन कही पर कोई सुझ-बा नहीं है। किसान को उससे फायदा मिले इसके बारे में कोई तालमेन नहीं है। ग्राप कहेंगे कि फाइनेस कमिशन ने दस करोड़ रूपया राजस्थान सरकार को इस काम के लिए दिया है। लकिन इसके लिए 30-40 करोड की बरूरत है। प्रकाल जो राजस्थान मे है उससे निपटने के लिये भी उसकोपैसा चाहिये। भाप द सकत है लिकन दे नही रहे हैं। योजना जो बाती है मज़र नहीं होनो है। ऐसे किस तरह दश का काम चल सकता है ? कही भी तालमेल बना करके जो पसा लगाए योजना बनाए और उसे खब करन की ब्यवस्था करे ग्राखिर उनका लाभ उन किसान के पास पहनकर उत्पादन बढता है या नहीं यह भी कभी प्रापन बेखा है ? हमन माजिनल कामर के लिए दुध की योजना बनाई, मर्गी पालन की भीर शीप की योजना बताई, इन सारी योजनाओं को ब्रायोग ने मजर किया है लेकिन इसका कही नामोनिशान देश के किमी हिस्से में में नहीं देखना ह। मित्रमडल के लवेल पर भी उन की कल्पनाए उन रिपोर्टों के बारे मे नही है जिन को योजना झायोग ने स्वीकार कर लिया है। इन बातों में तो उत्पादन बदया नहीं और उत्पादन नहीं बढगा तो कीमते नहीं गिरेगी। भाप जिनना टक्स लगाएगे कीमते उननी भीर ऊवी चर्ना जाएगी, भाप कहेगे कि रिजन्ट देर मे भ्राएगा तो हम कितने दिन इनजार करे. दो, चार, पाच या सात साल, ग्राखिर कब तक?

यहा पर सारे मली जिन की बठ कर धपने महकमें की बात मुननी चाहिए, उन मे से एक भी नजर नहीं माता। एक स्रकेले गणेश साहब क्या उत्तर देगे ? सिचाई मती हैं। उनसे मैं राजस्थान कनाल के बारे मे कहना चाहना हु। इस बकाल में राजस्थान के सारे जिले मखे पडे है, बाढमेर, जसलमेर, जालोर, पाली. बढोदी इत्यादि । राजस्थान कैनाल के लिए माप रुखा बढ़ाए। मभी केवल बाठ ना करोड दिया है। लिफट योजनाओं के लिए उन कनाल पर काम करवाइये । उनका मबैं कराइये । पानी होगा तो स्रकाल से बच सकते हैं। दस पद्रह साल की योजना हमते बताई। उन सारे कामो को भारत सरकार मबर करती है, दिशाए मानती है पर उस दिशा मे कोई काम नहीं करती।

गांव में घापने लोहार को बेकार कर दिया, खाती, तेली, चयार सब को बेकारकरदिया। छोटे ग्रीरमोटे काक्स-

[भी नाब् राम निर्मा]

कार को जमीन में लबा दिया। हुआ कुछ नहीं। रूरल इडस्ट्रीज की हालत देखें। हैडलूम बाले रो रहे हैं, धामा नहीं मिल रहा है। धाम रोज कहते हैं कि हम दे रहे है लेकिन बुनकर रो रहा है, लुहार, खातीं, तेली धादि सब रो रहे है। न कोई कुटीर उद्योग है, न कोई धधे है।

ग्राप कहत है कि किसान वडा मालदार हो गया है। चल कर देखें कि किनने किसान मालदार हो गए है। भाप में बड़ा कनफयजन है। लालटेन ले कर दिन मे भी धम और देखे कि किनने किसान मालदार हो गए है। आप है कि किसान कूलव हो गये। कुछ लागा ने ना एक भाषा ही ऐसी बना ली है इस देश के 80 कीसदी लागों को ब्रापग में लडाना चाहते हैं। सिर्फ पोलिटिकल मोटिव सिद्ध बरना चाहते है। कोरी राजनीति में पेट नहीं भरने वाला है इस महगाई में जमाने में खाग्रोंगे तो धान भीर उसको पैदा करने वाले कौन होगे? देश के अदर सब से मश्किल काम खेती का है। बेत मे खड़े खड़े किसान के एडी चाटी का पसीना एक होता है तब जा कर उस में से धनाज उपजता है। (यावधान) मैं आप से निवेदन करना चाहता ह वि इदिरा जी को चिन्ता हो रही है भीर उन्होने कृषि आयोग की इस बात को स्वीकार कर के दौरा भी शरू किया है, लेकिन सभी भी उस की हलबल मित्रमहल में नहीं आई हैं। पजाब मे, हरयाणा मे, बगाल मे, बिहार मे, उडीसा में हर जगह मेने देखा कि नीचे कही पर उम का परकोलेशन नही है। अगर यही हालत इस देश में कृषि उत्पादन की रहेगी और यही इनपुट्स के दाम रहेगे, यही केडिट की व्यवस्था रहेगी तो कमे देश मे दूध बढ़ेगा, कैसे धान बढेगा, कसे भाव नीचे भाएगे भौर कैसे जनता को राहत मिलेगी ? यह बडे घहम सवाल हैं। मैं निवेदन करना चाहता ह कि जरा इम्प्ली-बेंटेशन में लोगों का इन्वाल्वमेट करने की झमता अपने यहां पर भीर राज्य सरकारों

के लेवेल पर राजनेताओं में पैवा करें। गाज राजनेता ठण्डे पडे है और कोरे ग्रफसरो से इस देश की जनता का इस मैं इन्वाल्यमेट नहीं हो सकता और नहीं कोई मसला हल हो सकता है। इस तरह से कोई योजना आगे नहीं चल सकती। इसलिए उस वातावरण को बनाने की ग्रावश्यकता है जिस मे उन का इन्वाल्वमेट हो । बाकी टैक्स तो जितना भी भ्राप ने लगाया है, भ्रगर नहीं वाम चलता है उस से. ग्रीर लगाना चाहते है ता ग्रीर लगा ले । प्राप की मुश्किलात हैं वह मैं समझ रहा हू फारेन एक्सनेज की दिक्कत आप को है कर्जा च काना है, ब्याज चकाना है तेल या दाम ज्यादा देता है। ग्राप की हालत बड़ी मश्किल मे है। लेविन इस के तिए राजनाम्नी का झकझोरने की जरूरत है ताकि चनता को माय लं कर कुछ काम करवान की क्षमना पैरा हो। केवल कारे नारे देन से काम नहीं जनेगा।

मरी प्रायंना है कि राजस्थान के प्रकाल के क्षेत्रा की तरफ मिचाई मती जी ध्यान दे। राजस्थान कैनाल का युजकुलकाम सरकार जा पैमा दे उस से उस याजना के बदर वाम हा। बाप देखें कि लाखा कुए बने बहे है जिन का विजली चाहिय। लेकिन श्रापके पाम एत्यमिनियम का तार नहीं है। भ्रापने राज्य सरवारों का कहा कि बताओं कितना काटा ग्रापका द। में पूछता ह. दो महीन हा गये, कितना काटा भाप ने दिया, कितना तार बना भीर वब उन कुथा का बि-जलीकरण होगा राजम्थान मे 35-40 हजार कुए बिजली के बन पड़े है। पचास हजार कुए हरयाना में है, इसी तरह पजाब, बिहार, उडीमा हर स्टेट थे पहे हैं। लेकिन इन के पास विजली का तार नहीं है। एल्यमिनियम नही हैं। फिर कैसे कृषि का उत्पादन बढायेंगे ? मेहरबानी कर के बिजली दीजिये उन कुछो के लिये भीर कृषि के लिये जो दस प्रतिशत बिजली मिनी है उस मे कमसे कम 8-10 बहें तो विजली संगतार उन को वें जहां कुएं विजली से अहे हुए हैं

सीर जहां नहीं जुड़े हैं वहा जोड़। तब उत्पादन बढेगा। आपके पास बीज नहीं. बाद नही, केडिट नही, पैसा नही, कुछ भी तो नहे ह। दैश्स ही लगा ले, लेकिन उस से काम भाप का बनेगा नही । उत्पादन बडेंगा नही, कीमने वढ जायेगी श्रीर मद्रा मफीति चलर्ता चली जायगी । क्यों कि माखि खाने वाले जो है. वे तो जब भाव बढेगा तो फिर कहेगे कि लाग्रा पैसा। तो न ट छ।पन चलं जाए श्रीर माल बहेगा नहीं. देश की हालत चिन्ताजनक रहेगी। इस-लिये यह एक ब्रहम मोना है। जो याजना श्राप बना रहे हा, कुछ ना उसका इस्पली मेटेशन सही हो आर उम का पयकोलेगन हो. मही चीजा म प्रायारिटी हा। मं तो आप से कहनाह कि दो नार मत्रालय आप रखे आर बाह मत्रालय का खत्म म आप का हरम मान कर इसी वक्त बंठ जाता है।

सिचाई भौर विद्यत विभाग मे उपमंत्री (भी सिद्धेश्वर प्रसाद): मभापति जी श्री नाथराम मिर्धान र्राप आयाग के अध्यक्ष के रूप में स्वय इस दग की कृषि की क्या स्थिति है उस के सबध में बहुत विस्तार से सारी बाता पर गार किया है ब्रार जैसा कि उन्होन स्वय बताया ऋषि ग्रायोग ने विभिन्न मदो पर अपनी सिफारिणे भी सरकारको दी है। उनमें से सभी में केवल एक सिफारिश का यहा जिक्र करना बाहगा जिस का सबध राजस्थान की मरूभमि को विकसित वरने से है। उनकी लिपोर्ट पर ग्रीय मला लय धीर सिचाई मदालय के जो विशेषत है वे परी गभीरता से बिचार कर रहे है। उसमें उन्होंने यह भी मुझाब दिया है कि सभी जो राजस्थान नहर बन रही है उम नहर का जो एलाइनमेंट है उस में भी फेर बदल किया जाय । दोनो मजालय इस कात पप भी राजस्थान सरकार ने विचार विसर्थं कर के कोई सन्तिम फेसला करंगे कि कहा तक इस की सभावना है कि इस में फेर बदल कर के इस को धौर लाभदायक बनाया जा सकता है। मैं एक ही बान इम मोक पर कहना चाहूगा कि हमारी वित्तीय स्थिति या उत्पादन के जा दूसरे क्षेत्र है उन में हम किठनाई में हैं लेकिन इस का मनलव यह नहीं है कि स्थिति बिलकुल निराशाजनक है भीर हम मा मिल कर भाषिक स्थिति में जा मुधार लाने का प्रयत्न कर रहे है उम में कहीं भी आणा की किरण नहीं दिखाई दती। ऐसी बान नहीं है —

प्रभी माननीय सदस्य ने बाढ स्मिचाई प्रीर विजना के सबब में जा बाने उठाई हैं उन में से में दानान बाना की खीर सकेत करना चाहगा।

पिछले वष की तुलना में दिल्ली मे वित्रनी मप्नार्ट में नाफी मुधार हुआ है। इसी प्रकार स दासोदर घाटी निगम का उदाहरण ले ता पिछले वर्ष की तुलना मे दामादर घाटी निगम की विजली सप्नाई में राफी मुधार हुआ है । वर्मचारियों की दरिट में देखें ता पिछल वर्ष की तुलना में इस वय देश के मश्री मुबा में काफी परि-वर्तन हम्रा है। यदि मै फिर दिल्ली का उदाहरण दू ना धभी कछ महीने पहले दिल्ली में जो विजली का उत्रादन करने वाले कमं-चारी है उन की युनियन ने इस बान का फैसला किया कि वे एक मान तक किमी प्रकार की इडनाल नहीं करेगे अपने नाम की ठीक से करेगे । माथ ही उन की बहत सी बात जो श्रधिकारियों के मामने बहुत वर्ष से पड़ी हुई थी उन को हल करने के लिये काफी तेजी सं कदम उठाये गये हैं। सरकार इस बात का प्रयत्न भी कर रही है कि विजली उत्पा-वन करने वाले कर्मचारियो भीर अधिकरियों मे किसी प्रकार संबर्ष न हो, बातबीत से या समझौते के द्वारा समस्याची को सुलझाबा

[की नाष् रांग मिर्चा]

जाय-इस काम में भी काफी सुखार हुआ है। बाज हमारे देश में विजली का उत्पादन बढाने की जरुरत है। हर योजना के झन्दर विजली उत्पादन का लक्य पिछली योजनाओं की तुलना में दगनी रखने की कोशिश की है। पांचवी पंच वर्षीय योजना में हम चाहते हैं कि चौथी योजना में विजसी उत्पादन के काम में जितनी बढि हुई है उस की तलना में तीन गना विजली ज्यादा पैदा करें। इस उद्देश्य की पुर्ति के लिये ग्रावश्यक है कि जो विजली उद्योग है उस का पूनर्गठन करें। हम ने विजली उद्योग का पूनगंठन करने के लिये फैसला लिया है और ग्रभी हाल में देश के सिचाई और विजली मंत्रियों का जो सम्मेलन हुआ। काउस में देश के विजली भीर सिचाई मंखियों ने इस बात की स्वीकार किया है भीर हम ने उन के मामने सिफारिकों भी भेजी हैं। मैं माननीय सदस्यों का ध्यान इस बात की भीर भाकुष्ट करना चाहता ह कि विजली उद्योग केन्नद्रीय सरकार के हाथ में नहीं है। राज्य सरकारों को ही उन के पूर्नगठन के लिये भाषस्यक कदम उठाने की अरूरत है। लेकिन जहां तक केब्रद्रीय सरकार के विजली और मिचाई मन्नालय का सम्बन्ध है, हम ने इस बात का फैमला कर लिया है भीर हम एक सैन्टल प्रथारिटी बनाने जा रहे हैं, इस के साथ साथ सैन्द्रल बाटर एड पावर कमीशन को भी पूनर्गठित करने जा रहे हैं। इस के ग्रलावा जो इलैक्टि-सिटी सप्लाई एक्ट है उस में संशोधन करने का हम ने फैसला लिया है। उस संशोधन का क्या रुप होगा, इस पर विचार करने के लिये हम ने ला मिनिस्टी को कहा है उस का इ.क्ट क्या होगा इस पर वे विचार कर रहे हैं और हम उम्मीद करने हैं कि बहुत जस्दी सदन के सामने इलैक्टिसिटी सप्लाई एक्ट का संशोधन करने के लिये बिल भायेगा । इस समय मैं इस सम्बन्ध में ज्यहा विस्तार से कुछ नहीं कहना चाहता है।

SHRIMATI PARVATHI KRI-SHNAN: I Will the Bill that you referred to, cover the question of all India central grid?

थी सिद्धेश्वर प्रसाद : जहां तक ग्राल इण्डिया पावर ग्रिड का सवाल है उस के लिए किसी प्रकार संशोधन की जरूरत नहीं है। बौधी योजना में ही भारत सरकार ने इस बात का फैसला लिया है कि जहां जहां इन्टर स्टेट टांसमीशन लाइन के बनाने की जरूरत है. उस को फाइनेन्स करने का काम गर्बनमेंट धाफ डॉण्डया करेगी, लेकिन इस के लिए सेटल ग्रथारिटी की जरूरत नहीं है। जहा स्टेट लाइन बनाना चाहते हैं. जिन जिन स्टेटों के बीच में वह इन्टर स्टेट लाइन पड़ेगी वहा केवल इलैक्टिमिटी बीई इस काम को करेंगे। धगर विसी वजह से स्टेट इलेक्डिमिटी बोर्ड तैयार है न हो तो हम यह भी सोच रहे हैं कि हम कोई ऐसी सैन्टल एजेन्सी रखें जो इन्टर स्टेट लाइन को बनाये।

Different rates are there. For instance HINDALCO of Birlas are given electricity at a concessional rate, leading to a loss. Should there not be a central authority which lays down certain policies whereby this kind of distortion does not take place?

सभापित जी, जैसा कि सभी मैंने बतलाया है— बिजली का पूरा काम राज्य सरकारों के हाथ में हैं। अपने प्रपने राज्य में बिजली की जो दर वे तय करते हैं उन्हीं दरों पर वहां के उद्योगों की बिजली की जाती हैं। यहां तक एलूमिनम का सवाल हैं, में हिण्डात्कों के मामले में बहुत विस्तार में नहीं जानना चाहता हूं। एलूमिनम उद्योग आज सारी दुनिया के प्रस्टर एक महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं, इस लिए हमारे देश में भी उस को ग्राधिक प्रोत्साहन देने के लिए सस्ती बिजली दी जाती है। जहां तक हिण्डात्कों का सम्बन्ध हैं, जिस समस्य वहां बिजली बनाई गई थी उस बिजली का कोई खरीवार नहीं था, इस लिए उसके साथ खास तरह का एशीमेंट किया गया। सेकिन सब जो नये एप्रीमेंट किये जा रहे हैं उन में किसी भी सूबे में किसी भी उपयोग को उन की जो कास्ट ग्राफ प्रोडक्शन है उस से कम दर पर नहीं देते हैं उस समय हिण्डाल्को के साथ जो एप्रीमेट हुमा थ। वह 25 साल के लिए किया गया था, ग्रव उसको बदला नहीं जा मकता है।

16 56 hrs

[SHRI NAWAL KISHORE SINHA in the Chair].

ध्क माननीय सबस्य वह इस ढग का लिखा हुमा है कि उस मे तबदीली की जा सकती है।

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद प्रगर ऐसा सुझाव है तो उसर प्रदेश के मुख्य मती को विचार के लिए भेजेंगे । लेकिन जहा तक भ्रभी बिजली के उत्पादन में मुधार का सवाल है, विभिन्न राज्यों में बिजली के उत्पादन में जब तक पर्याप्त मधार नही होता, चौथी योजना मे जो लक्ष्य रखे थे उन की पूर्ति के लिए हम तेजी मे कदम नहीं उठाने भौर जब तक पूरी तरह से हमारे यहा बिजली की सप्लाई सतीय-जनक नहीं हो जानी, तब नक एलमिनम जैसे जबांग केलिये. जिन में विजली की काभी जररत पहती है, हम पूरी माला में बिजली नहीं दे या रहे है। इसी लिये हमारे यहा विभिन्न उद्योगों के लिये जितने एलमिनम की जरूरत है उस में कभी हो गई है। हम कोशिश कर रहे हैं भीर हम ने विभिन्न राज्य सरकारों के साथ इस सम्बन्ध में चर्चा की है कि जहां नक ही सके एल्मिनम उद्याग को इसी प्रकार के जो घन्य महत्वपूर्ण उद्योग है जैसे डिफेंस के उद्योग, फटिलाइबर, रेलवे ट्रेक्शन के उद्योग, स्टील इण्डीन्द्रीज श्विन की हम ने प्राथमिकता दी है, उन ख्योगो की भी प्राथमिकता देने की कोशिश की जाये।

ग्रभी श्री मावलकार जी ने सवाल उठाया कि प्रधान मती जी विभिन्न राज्यो का दौरा कर रही है. वे किस उद्देश्य से कर रही है। शायद माननीय सदस्य को पता नही है कि मंत्री महल ने एक उच्चाधिकार समिति बनाई है जिस की प्रध्यक्ष प्रधान मत्री जी है। यह समिति देखेगी कि कैसे हमारे देण में कपि का उत्पादन बढाया जा सकता है। इस लिये विभिन्न राज्यों में जा कर स्वय प्रधान मती जी इन बानो को देख रही है। भीर इस सम्बन्ध में वहां के मख्य मिलयो, दुमरे मुतियो, उच्चाधिकारियो विशेषको से चर्चा कर रही हैं कि कैसे उन राज्यों में कृषि का उत्पादन बढाया जा सकता है। जिन राज्यों में बद्धि हो मक्ती है, लेकिन किन्ही बारणों में नहीं हो रही है जहां सिंबाई के साधन भी हैं, विजली भी है उन कारणो को दूर करने का प्रयास किया जा रहा जो इनके पूरे उपयोग मे बाधक रहे हैं। प्रधान मली जी की इस चर्चा का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है स्रोर हम प्राणा करते है कि वहा आगे के वर्षों मे कृषि उत्पादन मे बद्धि होगी।

भी पी० जी० **मावलंकर** क्या इस के लिये कोई ठोस कदम उठाये है ?

श्री सिद्धेक्वर प्रसाव ठोम कदम उठाये हैं। मैं इस समय विस्तार में नहीं कहूगा। लेकिन वहा पिछले वर्षों में उत्पादन में कोई रुकावट थी तो उस को दूर करने का प्रयत्न हा रहा है। ग्रमर सिचाई की दृष्टि से कोई रुकावट थी तो उस के जिय कदम उठा रहे हैं। वहा जो निर्माण की ऐसी योजनाये थी जिन के सम्बन्ध में किसी वजह में फैसला नहीं लिया जा रहा था उनमें तेजां से फैसले किये गये हैं। विभिन्न राज्यों में इस सम्बन्ध में क्या क्या हो रहा है, इस समय में विस्तार में कुछ मही वहना चाहता हूं। [श्रा सिद्धेश्वर प्रसाद]

मभी कुछ माननीय सदम्यो ने इस बाल की कीर सकेत किया कि हम की बाह्र नियन्नण के लिये या मिचाई की योजनाए के लिये या बिजली की योजनामा के लिये जितनी धनराणि की जरूरा है उतनी धनराशि नहीं द। जा सकी है। इसी लिये जितनी तेजी मे बात नियमण की योजना बनाई जानी धी याजैसे राजस्था की नहर है या दमरे सबो में नहरा की ग्रांग सिवाई को योजनाम बनाई जा रहा है उन क लिय साधन की रमी हा गई है या विजला क जन्पादन के लिय हम का जिन्न साधन दिस जाने थ उत्तन माधन नहीं दियं जा सके। हम जात्त है कि जिन स्थितिया न इस इन यो बनाम। का आग बढाने की काशिश कर रहे हे उन मे माधन का संत्राल सब में बड़ा सबाल हंगा। जब में पाचिनी पववधीय याजना की चर्चा शरू हुई है यह कहाजा रहा है सि हमार प्राप्त "रियोमं बस्ड फ्लान होग फिर भी उन को आगंबढानेकी कोशिश गरग। विविध मै यह बान स्पष्ट वर देश चाहता ह किः पाचवी योजना में विलीय माधना की कांठनाई के बावजर चाहदमरे क्षत्रा मे थोडी क्टोर्नाहर्दहो लिस्न मिनाई कोर विजली की योजनामा मे यटीनी नहीं हो रही है। भीर उस बात की कोशिश की जा रही है कि सिचाई और विजनी काजी हमारा लक्ष्य या उसही प्र. प्रिके लिए जिनने साधन की जरूरन है उतने साधनो की पूर्तिकी जामके। मैं माननीय सदस्यों का ज्यादा समय नहीं लेना चाहताह, इतना हो कहना चाहता ₹

17.00 hrs.

भी पी॰ भी॰ मामलंकर: कृपया, तारापुर एटामिक पावर स्टेशन के बारे मे कुछ बताइयें। की सिद्धेवनर प्रसाद : तारापुर की विजली कही दूसरी जगह से जाने की बात मेरे ध्यान मे नहीं धाई है । वहां का जो पावर स्टेशन है उसकी विजली महाराष्ट्र धीर गुजरात को वी जाती है, दूसरी जगह जाने की कोई वात नहीं है।

17.01 hrs.

[MR DEPUTY-SPEAKER in the Chair]

ग्रभी श्रीमति पार्वती कष्णन महत्व की बान कही कि हम ग्राल इडिया पिड बनामा चाहते है । ग्रगर हम यह भाल इंडिया प्रिड नहीं बनागेंगे तो मारे देश में हम स्टैबिल पावर सप्ताई महीं कर सकेगे । दूसरे, भ्रगर हम चाहने है वि सारे देश में एक ही रेट पर विजली दे नोजिना पिट के एक रेट पर विजली भी नहीं दे माते है। इसलिए हमको पहले रीजनन प्रिट धौर फिर बाद से म्राल टडिया ग्रिड बनाने के निष् कदम उठाने पड़ेगे और तब बैसी हालत में हमका यह नहीं मोजना पड़ेगा कि कैसे राजस्थान की विजनी नामिननाड को वली गई है और का तमिलनाट की विजली पश्चिम बगाल चली गई या कैमे पश्चिम बगाल की बिजली जम्म कश्मीर चली गई। हमको केवल यही सोचना पहेगा कि कड़ी से भी किसी स्टेट को बिजली मिले----ाक समान दर पर मिले और पावर सप्लाई स्टैबिल हो । उसमे पलक्क्य्यान्स भी न हो । इस बात को ध्यान में रखते हुए हमें देखना होगा कि पजाब में बिजली की कमी है तो महाराष्ट्र मे वहा जा मकती है, महाराष्ट्र में विजली की कभी है तो वहा गजरात से मिल मकती है।

जहा तक सिंचाई दर में वृद्धि का सवास है जिसको निर्द्धा जी ने धौर बेरवा जी ने उठाया है, हमें इस बात को ध्यान में रखना पड़ेगा कि सिंचाई की योजनाओ पर जी लागत धाती है उसकी तलना में सिंचाई की दरें बहुत कम रही हैं 8 बिजली की दरें भी उसी हिसाब से कम रही हैं। एंसी स्थिति में जब कि हर एक चीज की दरें बढाई जा रही हैं और हम चाहते हैं कि ज्यादा स ज्यादा मिचाई की सुविधाए बी जाए हम चाने हैं हि ज्यादा से ज्यादा निजन, का नित्वालं दा र्मामितिया गर्ट जितनी कई माल पहल वैकेटरमन मिमित बनी थी बिजली की दरों के सम्बन्ध में और दूसरी समस्याची पर विचार करने के लिए और पानी की दरों के लिये निजीनगणा समिति बनी थीं, उन सभी समितियों का सिफारिश थी तथा साथ साथ सभी राज्यों न उन मिफारिशो को स्वीकार किया य कि हम बिजली और सिनाई की दरा में बन कर ग्रपने समाधनी म विद्र नपन के लिये नैयार हैं। बार बार जो सम्मेलन बनाने गये या जा समितिया बनाई गई उन्हान ग्रीर मख्य मिवयों के सम्मलन न उस बात का फैसला जिया वि पानी भ्रोप विजनी की उरों को बढ़ा कर गाधनों को बहाने के लिए हम तैयार है। मेरा सवाल है इस बात में ता हमारा समर्थन होता चर्षत्ए । उसलिए में उत्ता ही कहना चाहना ह कि जिस प्रकार शाजस्थान नहर बनने की वजह में गगान गर का कर बदल गया जिस प्रकार में बीकानेर का रूप बदलता जा रहा है उसी तरह में जमें जैस राजस्थान नहर का पानी भ्रागे जायेगा राजस्थान का धौर रूप भी बदलेगा । चम्बल योजना से चम्बल घाटी का मण बदलेगा, नार्गाजन सागर योजना बनने मे नार्गाजन क्षेत्र का रूप बदलेगा। हम इस बात की परी कोशिश करेगे कि जहा तक हो तेजी से राजस्थान नहर बने भीर उसके लिए साधनो की कभी न हो। हमने एक विशेष समिति बनाई है जो इस बात को देखेगी कि जिन नहरों के लिए जलामय का निर्माण हो गया है लेकिन नहरों को बनाने के निए काफी पैसा नहीं है तो उनके निर्माण की तेजी की दृष्टि से कैसे भीर धनराशि दं।

जाये । इस समिति की सिफारिश झाते ही सरकार उस पर विचार करेगी ।

सभी सुखंदव प्रसाद वर्मा जी ने कहा सगध क्षेत्र म सृत्ये की स्थिति के कारण बडी विकट स्थिति पदा हो गई है। उन्होंने उस बात की स्थार भी ध्यान दिलाया कि सकरी महाने , तिलेया इत्यादि योजनाये कई वर्ष ने पडी हुई है। उसकी छात बीत हो रही है तेकित सभी रिपोर्ट नहीं सा सकी है। मैं बिहार सरकार का ध्यान उस स्रोर स्थाकर रक्षणा कि जल्दी में जल्दी रिपोर्ट भंजी जाये जिससे इन योजनासों को जल्दी में जल्दी कार्योन्वित किया जा सके।

SHRI S M BANERJEE raised it in our speeches, Mrs Parvathi Krishnan and myself wanted to know the reaction of the Goproposed vernment regarding the token strike of the Electricity employees throughout the country They have been having some sort of a wage committee The committee was appointed during the time of Dr Rao But somebody has scuttled it with the result that they are going on strike I would like to know whether you are going to accommodate their request

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद: मैं मापकी मनुमिन मं इतना ही कहना चाहूगा कि यह जो की विजली उद्योग है वह राज्य मरकारो के हाथ मंहै, राज्य वाडं वे मधीन है मोर उसके मबध में विचार करने के लिए हमारे जो श्रम मबी है श्री रचुनाभ रेड्डी वह इस समस्या को देख रहे थे भीर में गपूरा विश्वास है कि विधिन्न राज्यों से बातचीत करके इस समस्या को सुलझाने में वे समर्च हो सकेंगे।

ग्रभी मिर्घाजी ने एलध्यूनियम की कमी के बारे में ध्यान ग्राकुष्क किया । हमने खान ग्रीर इस्रात मजानय, जिनके ग्रमीक

[की सिद्धेश्वर प्रसाद]

एलम्यूनियम उद्योग है, से बात की है भीर उन्होंने हमें बाश्वामन दिया है कि बिजली के विस्तार के लिए जितने एलम्युनियम की जरूरत है वे उसकी भरतक पूर्ति की कोशिश करेंगे।

पटो लियम और रसायन मंत्रालय में राज्य मंत्री (बी शाहनवाब का): डिप्टी स्वीकर माहब, मुझे इस बात का महसास हो रहा है कि हाऊस के पास बहत बोडा बक्त है इस लिए मे ज्यादा वक्त न लेते हए सिर्फ चन्द मिनटो मे एक दो प्वाइटस को मेरी मिनिस्ट्री के बारे मे उठाये गए हैं. उनके जवाब देने की कोशिश करूंगा। श्री मिर्घाजी धीर हरीमिह जी ने फटि-लाइजर की बहुत ऊर्वा किमते होने के बारे मे जिक किया है। मैं मानता ह फॉटलाइकर की कीमते बहुत बढ़ गई हैं। मैं पहले के मुकाबले अब युरिया की कीमत तकरीवन दो गुने हो गई है। इनकी वजह में बनलाना बाहता ह कि कृड भायल जिसकी कीमत एक दी वर्ष पहले 2 डालर 85 मेन्ट थी एक बैरल की, भाज उस कुड भायल के एक बैरल की कीमत 10 और 11 डालर हो चुकी है। नंपथा से बनता है युग्या श्रीर उसकी कीमत जैमा मेंने प्रजं किया. 2 डालर 85 सेन्ट से बढकर 10-11 डालर हो चकी है। इसलिए खासकर जो हम इस्पोर्ट करने हैं फटिलाइबर उसकी कीमते बढ गई । ग्राज जो फटिलाइजर, जो युरिया हम बाहर से इम्पोटं करते हैं उसकी कीमत करीब अ हजार रुपया की टन हम दे रहे हैं। 3 हजार काया फी रन हम बाहर म इम्पेंट करके िसाना की 2 हजार कु में दे रहे हैं इस तरह में सरकार करीब 1 हजार रुपया फी टन मब्सिडाइज कर रही है। नेफ्या हम धपन देश मे पैदा कर रहे हैं, जब बहु फटिलाइबर के लिए इस्तेमाल करते 🕏 सो उस नेपवा की कीमत 486 31 इनवा है और अब कैमीकल और इसरे

कामों के लिए नेपया को बेचले हैं तो उसकी कीमत हजार क्या टल है। तो यह जो फर्क है इससे हम जो फर्टिलाइचर बाहर से इम्पोर्ट करते हैं, उसको सम्सिडाइच करते हैं। में खुद भी किसान हूं, में जानता ह फर्टिलाइचर को कीमत बढ़ जाने में किसानों पर कितना बोझ पड़ा है लेकिन में यह भी जानता हू कि सरकार 3 हजार क्या फी टन में इम्पोर्ट करके 2 हजार फी टन किसानों को दे रही है।

श्री नटबरलास पटेल (मेहसाना).

मेरे खयान से आज ऐसी हानत नहीं है।
आपने स्टैब्लाइजेशन फड बनाया है जिसमे
पर्वेजर से 600 फी टन ज्यादा ले रहे है
इस लिए आप यह कैमे नह देगे कि हम
किसानो को फिटलाइजर में सब्मीडी दे रहे
हैं। यानी सेंट्रल पूल में जो डेफिसिट
आयेगा उसको मीट करने के लिए आपने
स्टैब्लाईजेशन फन्ड बनाया है मगर
यह कहना कि किसानो को सक्सीडी दे
रहे हैं ठीक बात नहीं होगी।

श्री शाहनवाज सां: 3 हजार में हम मना रहे हैं ग्रीर दो हजार में दे रहे हैं।

श्री नटबरलाल पटेल इन डेफिसिट को मीट करने के लिए प्रापने फन्ड बनाया हुआ है फिर ग्राप इसको मब्सीडी कैने कहते हैं।

You are not prepared to spend even a single paise from your pocket or from the treasury. The entire burden is on the kisan and you are going to collect every paise from the kisan.

बी शाहनवाच लां : तो वह मैं अर्थ कर चुका हू। दूसरी बात यह है कि डीचल आयल की कीमत बहुत बढ़ी यह कहा गया कूड की तो दुनिया में बढ़ गई हैं लेकिन हम ने डीचल की कीमत नहीं बढ़ाई है और जहां दूसरी चीचो की कीमतें बड़ी हैं मीटर स्परिट... 53 Suppl. D.G. (Genl.), BHADRA 9, 1896 (SAKA) Suppl. D.G. (Genl.), 154 1974-75

नी नामू रान निर्मा (नागीर) : पम्प्स में डीखल काम में नहीं झाता । लो स्पीड डीखल काम झाता है। उसके दाम बहुत बढ़ गये है।

भी शाहनवाच लां: उस मे डीजल भी लगशा है।

SHRI D. D. DESAI (Kaira): difference has been of the order of 3 dollars per barrel or Rs. 400 per tonne. That should not be played up to an extent to justify this extra charge that is made on various products by the Petroleum Ministry. The difference the Petrolcum Ministry has got to make up because of the rate difference is smaller. The crude oil we are receiving is from a neighbouring country. I have to say this because we do not want to get any incorrect information. We have got an internal crude oil production of nearly 8 million tonnes. again, we are not paying anything extra either to Assam or Gujarat, In other words, the whole money arising out of both these receipts has been completely taken away by the Centre. There is already a pending demand from Assam and Gujarat governments....

MR. DEPUTY-SPEAKER: You are making a speech.

SHRI D. D. DESAI: I am interrupting him because....

MR. DEPUTY-SPEAKER: It should not be too long.

SHRI D. D. DESAI: There is already a case made that we should charge a higher price.

किसान जो खाद भीर डीजल भायल इस्तेमाल करते है तो उस के लिये

Why we are charging more. I am saying that it is improper and there is no justification. The difference is of a negligible nature and there is a

substantial part which is indigenous and on which no extra amount is being paid by the Government.

श्री शाहनवास सां : ओ घाप ने कुछ फिगर्स दिए, वह सही नही है। हमारा ओ इडिजिनस प्रोडक्णन है कूड धायल है, वह सवा सात मिलियन टन है, च्रीर बाहर से हम 13, 14 मिलियन टन मगते हैं।

SHRI D. D. DESAI: I am sorry I have to interrupt you again. It is not 7 nor it is 8. It is somewhere around 7.7. Therefore, the current year is still in progress and this year will end up probably with 8 million tonnes.

SHRI SHAHNAWAZ Between 7 and 7.5 million tonnes is our indegenous production and our imports are 13 to 14 million tonnes and we are paying a much higher price for the imported crude and we are supplying naptha for fertilisers at a very much cheaper rate of Rs. 486.31 per tonne. That is why the fertiliser that we import at Rs. 3,000 per tonne is being given at Rs. 2,000 per tonne to the farmer and there is this element of subsidy which I mentioned. Price of diesel is also kept as low as possible and farmers are using high speed diesel for pumping sets also.

श्री नाथू राम मिर्घाः ज्यादा लीजिय. पर क्रैडिट नहीं किमान पर । श्रगर हम में ज्यादा दाम लोगे तो भाव भी ऊचे होगे। श्राप जितना लेना चाह लीजिये।

श्री शहबाज खां: वस इतना ही कहना है।

SHRI SEZHIYAN (Kumhakonam): Sir, I raised in my speech certain points about the information to be given on the exact dates of the withdrawal from the Contingency Fund. Please see Demand No. 48. Certain amounts are withdrawn from Contingency Fund. Date is not there. Item B states that advance was

[Shri Sezhiyan]

granted from Contingency Fund of India in March 1964. The exact date is not there. In Demand 53 also it is stated that the amount is taken out of the Contingency Fund and there also it is not stated when the amount was taken and all that. In Demand 53 also the date is not given. My point is this. If it is something before 31st March, 1974, it is not belonging to the financial year 1974-75 Please take the Constitution of India. Artirle 115 says this,

The President shall-

(a) if the amount authorised by any law made in accordance with the provisions of article 114 to be expended for a particular service for the current financial year found to be insufficient for the purposes of that your or when a need has arisen during the current financial year supplementary or additional expenditure upon some new service not conthe templated in annual financial statement for that

That means, supplementary budget is visualised on two occasions. When the amount sanctioned in the annual financial budget presented is found to be insufficient. Specific grant can be asked. Also supplementary expenditure upon new service not contemplated in the financial year's budget. Therefore it can give either a Grant for Account already but not sufficient or a New Service for current year. Supplementary Grant can cover only for the financial year Here we are considering supplementary grants for the year 1974-75. It can cover only expenditure for the year 1974-75. If there is any expenditure before 1974-75 then my point is that they cannot be We therefore have to go covered for Express Grants. Supplementary Grants can cover only the financial

year 1974-75. If there is any expenditure earlier than the 1974-75 financial year, before that date,—this is not covered. Please see Demand No. 48 item B. Payment in satisfaction of court decree, charged expenditure There the advance was granted from the contingency Fund in March, 1974.

That means that the expenditure from the Contingency Fund has been incurred. That expenditure has been incurred in the month of March 1974. Therefore, it cannot come for the year 1974-75.

Therefore, as far as this Supplementary Demand for 1974-75 is concerned. one item is very explicit. For all the other items they have not given the dates. If they give the date prior to 31-3, then all the items may not come under Supplementary Demand I am sure that at least one item which is explicit cannot come under Supplementary Demand This can come under Excess Grants For one item, that is explicit. For the other items too I want the dates. If the dates are before 31s March, then they cannot come for the year 1974-75 Take Grant Nos 48, 53 and 55 One item is very explicit But, for other items, the dates are not explicit

श्री मधु लिससे उनाध्यक्ष महोदय. में प्रतिरिक्त मांगों के पेज 11 के (बी) तक ही प्रपने को मीमिन कर रहा हूं बयों कि मंत्री महोदय में में ने बात की है प्रीर बें कहते हैं कि बाकी जो रक्म है, बें पहली प्रप्रेल के बाद हं खर्च किये गये हैं। मैं फाइनेर्नायल टयर की बात कर रहा हूं। में भ्राप का ध्यान शक्धर भीर कील की किताब की नरफ खीचना चाहना हूं। पेज 6.30 के ब्राल्यरी पैराग्राफ को भ्राप देख। उस में लिखा है

"Demands for money already spent in excess of the voted grants, are not, therefore, met by way of a Supplementary Grant. But, neverthe less, all Excess Grants and De257 Suppl. D. G. (Genl.), BHADRA 9, 1896 (SAKA) Suppl. D. G. (Genl.), 158 1974-75

mands for Excess Grants have to be presented to the House in the same session in which the Public Accounts Committee presents its Report there on or in the following session"

मैंने धाप को बहुत स्तप्ट उदाहरण दिया है। मही महोदय कबूल करते है कि भगतान विगत विसीय वर्ष मे, मार्च में हुआ। मैं (बी) की बात कर रहा है। मैं इस का पूरा ही पढ़ देता ह क्यांकि उस में बात माफ हो जाएगी।

"The payment being in satisfaction of court decree for a charged expenditure for which the advance was granted from the Contingency Fund of India in March 1974 after the last budget of supplementary demands for 1973-74 had been presented."

तो उपाध्यक्ष महोदय, यह चान् वित्तीय मान में खर्च नहीं हुआ है, यह विगत साल में खर्च हुआ है। आप मिवधान की धारा 115 में (ए) और (वी) को देखें। (बी) में दिया हुआ है

"If any money has been spent on any service the to financial year in excess of the amount granted for that service and for that year "

भ्रोर ऊपर वाला सन्तीमदरी है।

"It is for the current financial year'

"करन्ट' णब्द (बी) में नहीं है। यह सहत्वपूर्ण बान है।

डमलिए कील धीर णकधर को किताब के साधार पर धीर सिवधान की धारा 115 (बी) के साधार पर मैं साप का निर्णय बाहता ह कि यह जो चार्जंड प्रास्ट है इस के ऊपर बोट करने को सनुमिन का प्रश्न नहीं है मगर चिक यह प्रान्ट एप्रोप्रोएशन बिल में भी साती है, इसलिए एप्रोप्रीएशन बिल पर नो होने का मवाल ही उत्पन्न नहीं होना चाहिए। उन को बदलना पड़ेगा। इसलिए एप्रोप्रीएशन बिल को स्भगित रहा जाए। श्री गणेश जवाब देना चाहे, तो उस को सुन तो हम लेंगे भीर वाकी डिमान्ड्स पर भी वे वोटिंग कराना चाहेंगे तो करा ले लेकिन किसी भी हालत मे यह एप्रोप्रीएशन विल पास नहीं हो सकते।

म समद काय मली जी से माफो चाहता हू, विधेयका का रेलराड करने क लिए व यहा बैठे है, लेकिन गलत कामा का हम यहा नही हान देगे।

SHRIS M BANERJEE Sir, if you remember niany a time when we are discussing in this House suplementary grants and excess grants and when we discuss excess grants we are told that supplementary grants are being discussed now and you should speak and criticise and move cut motions on the supplementary grants only I must congratulate my friend, Shri Sezhiyan and Shri Limaye for pointing out in this House something which if it was passed we would have been held responsible for passing something which does not relate to the year 1974-75. If I have heard Mr Limaye correctly the Minister Shri Ganesh, has also confirmed that it was paid during the month of March and what we are supposed to pass, that is, an amount of Rs 352 crores relates to 1974-75 Therefore I request you it be removed from the supplementary grant as it is not a supplementary grant but an excess grant

MR DEPUTY-SPEAKER There have been many submission made by the Members in the course of the general debate. Naturally you will have to reply to that. But this is a specific point of order. It you like to reply to the first then we shall take up this point of order in which you will have your say.

श्री मधु लिमये मेरा सझाव यह हैं रिजो विवाद हुआ है, बहम हुई है उमका वे आज जवाब दे और इस मुद्दे पर इन को जो कुछ कहना है कहे लेकिन इस बिल को सोमवार को लिया जाए। MR. DEPUTY-SPEAKER: We shall see about that.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINITSRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): As advised by you, I will first take up the points made in the general debate.

Mr. Deputy Speaker, Sir, this has been a very exhaustive debate. Normally, when supplementary demand come in the course of the year the debates are not as exhaustive as we had in this case. It has come as a result of certain constitutional and procedural discussions that took place in the House and under the specified direction given by the Speaker. A very large number of hon Members have participated in the debate both from this side as well as from the other ride. Many distinguished Members have made their submission in the debate. The debate has been of a very wideranging scope. Apart from the question of inflation which is the most dominant question as far as our country's economic and social life is concerned, many other specific points have been raised by the hon. Members. The debate has also been very useful and meaningful because my senior colleague Shri Borooah, Minister of Petroleum and Chemicals intervened and replied to some of the points which Shri Limaye had been raising for the last one week.

Sir, my colleagues in the Ministries of Irrigation and Power, Defence, Petroleum and Chemicals have already intervened in the Debate and gave answers to the very many specific points that have been raised in this debate relating to their Ministries. Sir. the Food Minister is not available today here. He has gone with the Prime Minister on her tour. He was available till yesterday; he was sitting till late in the night yesterday. But, unfortunately, he had to go, and therefore, he could not be present. Therefore, with these interventions, my task has become lighter and I will concentrate on some of the major points that have been raised in relation to the question of economy.

Sir, these supplementary demands themselves, the approval of which we are seeking, indicate the earnestness of the Government to meet the situation squarely and to concentrate on some of the important requirements of our people as well as the economy. For instance, these demands relate to subsidy on food-grains, which is of the highest order of about Rs. 125 crores: Defence services-Rs. 25 crores which is due to the iroprovements in emoluments of the defence personnel and about Rs. 152 crores for investment in the core sector, which has been indicated there

Now, therefore, Sir, this break up of these demands itself indicates that on the one hand, Government is serious about maintaining the public distribution system and on the other, Governinvestments in the ment feels that core sector, despite the constraints on economy today, despite the constraints on resources today, should be stepped up and whatever requirements are there in legard to the core sector. have got to be met This is indicative of the earnestness of the Government that on the one hand, inflation has to te met by taking various fiscal and monetary measures, and on the other, it has also to be met by stepping up the production in the core sector This has also to be met by having a public distribution system, for which as much as Rs. 125 crores have been provided.

Sir, on the general question of inflation and on the state of economy. which has been discussed in the House, the Finance Minister while replying to the debate on the Finance Bill No. 2 as well as while replying to the debate on the three Ordinances, which came up for the approval of the House, which have now been passed by both the Houses of Parliament-two of them have been passed-indicated the various measures that Government has taken. Now, Sir, I will just indicate very broadly the various measures that have been taken; the supplementary budget; the railway budget; the ordinances to immobilise large amount of money supply so that it does not meinto circulation so that the excess liquidity in the economy is removed—these measures indicate the earnestness with which the Government is going about this matter.

There is no dispute with the hon. Members on the other side that inflation is the single biggest problem that this nation is facing today. Unless we are in a position to control inflation and bring it to a level which is desirable for the economy, I would submit that it is not a question of this side or that side saying it,—the whole system will be weighted down by the impact of these inflationary prices.

No democratic system based on the kind of democracy that we have, with the kind of extreme hardships which, the people are facing, with the kind of percentage of our population which is always at a level of depression with depressed living, to use a more respectable term, can bear this inflation. There is no dispute with hon Members on the other side about that

The point now is that Government are making earnest efforts, which are known the world over for fighting inflation, efforts which have made an impact on inflation in other parts of the world I have tried to indicate that the various steps that to have been indicated are serious and earnest efforts that Government have made to keep the inflationary spiral at a resonable and controllable level

It has already been said by the Finance Minister in his speech on Finance (No. 2) Bill and also on the ordinances that the impact of these measures can be seen and will be discernible only after a period of time. But it is the hope of this Government that all these measures will go to reduce the excess liquidity in the system. The effort made in physical terms can also be seen from the central supplementary budget, the increase that the railway budget has proposed, the increase in the P. and T. rates etc.

through which Government are expecting to raise Rs. 666 crores during 1974-75 and Rs. 901 crores in a full year. Then, these ordinances to withdraw the excess liquidity from the economy will also make an impact, because we expect to collect as much as Rs 450 crores due to the Additional Emoluments (Compulsory Deposit) Ordinance, about Rs. 50 to 60 crores due to the ordinance relating to company dividends and about Rs. 50 crores due to Compulsory Deposit (Income-taxpayers) Ordinance or Bill. These are very large physical targets which will draw the liquidity away from the economy The other steps that have been taken relate to the increase in the bank rate. That would also curtail public expenditure these very Supplementary Demands themselves it has been indicated how economics have got to be effected two high-powered committees of the Government are examining the scope for the curtailment of non-productive expenditure, both Plan and non-Plan.

Then, efforts taken to increase preduction have also been indicated in these Supplementary Demands. The core sector has to be stepped up in spite of the financial constraints, in spite of the fact that the single hig target of Government is to keep the deficit financing at a level which has been announced to Paritament, because that is the single biggest question te-It is not a question of whether this sector is going to be neglected or that sector is going to be neglected. whether four million jobs or 20 million jobs are going to be created. The question is that we have committed ourselves to this Parliament to keep the deficit financing at the level which has been indicated to it.

Apart from all these factors, the steps taken to increase production, the steps taken to maintain the public distribution system, all these total integrated efforts that Government are taking do indicate the earnestness of Government to tackle this problem.

How, a question may be asked 'What is the other way?'.

[Shri K. R. Ganesh]

Debate in this House goes on a manper that very serious questions remain unanswered. What is the other way out? There are two other ways. One is to take complete control of the economy, which means procurement. which means the public distribution system, which means taking commodities from where they are produced into the hands of Government, which means austerity, which means slashing down an inessential things and returning back to an economy of complete austerity. That is one way out. Here certain attempts are being made and if these do not produce the desired results, this Government has the necessary capacity, resiliance and democratic tradition even to go to the next step where complete control of the economy has got to be taken if we are to be true to the people of this country, if we are to save the system from being weighed down by the very force of inflation by the very force of depression of the people's living, by the very force of the tremendous hardship which the poor are facing.

The other way is to keep the economy completely free, to free everything, allow free market, allow free prices, allow free production, have no priorities. Probably India is too large a country with too great a tradition to allow such a sort of thing.

Therefore, these steps are earnest steps and whatever else may be the criticism of hon. members, I hope they will earnestly help Government to see that these efforts which are well known and are taken the world over have got to be tried so that they make an impact on the total situation.

Shri Sazhiyan, veteran member of the House who in recent weeks has been making interventions on constitutional and procedural matters and has made a very distinctive contribution to debates in this House, particularly when the Finance Bill was introduced, has raised certain points. As for one of the points he raised, as you had

kindly indicated, it is better I take it up later and give a reply.

He raised another point as to what is going to be the nature and extent of the deficit. In these supplementary demands themselves, we had indicated about the question of DA that the Government would have to pay. On the basis of the present trend of the average consumer price index, it would be necessary for Government to concede DA to Central Government employees on the basis of the recommendations of the Third Pay Commission which Government have accepted. Therefore, it may be necessary to come later this year with another batch of supplementary demands. That is as far as DA is concerned.

The point the hon member has rais-. ed is whether with the demand of Rs 353 crores for which we are seeking approval of the House and the DA which we have indicated here for which supplementary demands will have to be brought, the budgetary gap would be more than the Rs, 126 crores deficit which was indicated It is also before the House that additional resource mobilisation has been made to the tune of Rs. 123 crores in Finance Bill No 2 and economies have been decided is plan and non-plan expenditure to the extent of Rs. 200 crores. Over and above these, further economies have got to be effected for which, as I indicated, two high power committees have been set up.

It is also the intention of the Government to see that the public sector undertakings increase their profits and decrease their losses. With all the steps that I had enumerated earlier, it is the earnest hope of the Government to keep the budget deficit at the level which has been indicated. But one has to watch the increasing prices, international factors in terms of commodities which we have got to import and the price situation having an impact on dearness allowance and other things. As on date that is the picture

of public finances. With efforts at additional resource mobilisation, with better revenue accruals and with economies in expenditure as I had indicated earlier, the position will become clearer. It is not a question of deficit suddenly rising to a high level of Rs. 500 crores or Rs. 600 crores. The price situation being what it is, we have come with Finance Bill No. II, with efforts at additional resource mobilisation, an attempt is being made for better realisation of taxes. It is not that Parliament will be taken unawares and the deficit will go on rising because deficit financing cannot be allowed to rise. Once deficit financing is allowed to go up, the total strategy of anti-inflationary drive, the kingpin will get dismantled. Therefore, it is absolutely necessary to keep it at the level indicated earlier.

I think this partly meets the points made by the hon. Members. The question of black money has also been raised. In the anti-inflationary strategy an assault has to be made on the citadel of black money and black marketing and various other anti social practices. On this matter there is no dispute between members on that side and this side. What is the strategy which the Government has to adopt to meet this problem of black money? That is the central question. As indicated by the hon. Finance Minister and also by me on various occasions in reply to questions, etc., there is to be an integrated approach in this matter. Black money generates at the level of commodities and the assault has to be made at that level. It generates at the level of commodities such as foodgrains or steel or coment or paper or drugs or textiles. There are various agencies in the armoury of the State. Whether it is income-tax, excise, sales tax or other regulatory measures, they have got to coordinate their efforts to see that ardent is made Income-tax is a sort of beneficiary of the black money generation from various sectors, because all that goes into the income-tax net. There an integrated approach of stepping up raids has been adopted. As hon, members

know, in recent weeks and months several raids on the sources and accumulation of black money have been conducted. It is not my case that by these raids you are going to solve the problem. The question is of making an impact and creating a psychological fear in the minds of these black money operators and putting a screw from all sides so that they can be hemmed in. Apart from raids, intensive investigations will have to be done into the manipulations that take place in the larger sector. This is being done by a special cell set up by the Central Board of Direct Taxes. Various income-tax and wealth-tax cases have been instituted and some have gone to the High Court. Those who have escaped by superior tax planning and by superior methods through chartered accountants and managerial and other expertise available to them have been subjected to very intensive investigations by this special cell which has done very good work. It ask this opportunity to pay a tribute to the very fine officers, handpicked officers, who have been doing fine job, matching their ingenuity and earnestness with the best that was available to these larger concentrations. They have been able to locate the various manipulations that take place which are slightly different from just black money.

The third is the question of black wealth. Black money converts itself into black wealth in the form of buildings, gold and oastentatious living. An attack has to be made in on this—how buildings are built and they change hands very quickly. An attack has to be made on these three centres of the use of black money. There has to be coordination between various agencies. It is the determined strategy of the Finance Ministry to attack black money from the various sources which I had indicated.

Mr. Sezhiyan asked about self-employed persons. Recently we have informed the House that it is a fact that they have been evading taxes. A survey was done during the last two years. A special survey was also done. It has indicated very large evasion of [Shri K. R. Ganesh]

taxable incomes by these sections. It is a tragedy that in our society, people who are in such responsible positions, who have all the benefits of society like education respectability and various other things should be the ones who have been evading taxes. Now they have been brought under the tax net. A very large number of notices have been issued in different parts of the country and some of them are voluntarily also declaring their wealth.

The hon. Member asked about something that was done in 1964. I do not have any information about it. I will look into that,

I would very humbly submit to Shri Mavalankar that when I spoke in the House or outside about smuggling, I did not speak with any sense of helplessness. If that is the idea that I have conveyed, there is probably something wrong in the expressions I used. I did not plead helplessness. I had indicated the various measures that Government have taken like providing staff, fast boats, wireless network, equipment, having separate preventive formation, increasing the staff and giving more teeth to antismuggling formation. I had also indicated that on the basis of the Law Commission's Report, the whole gamut of economic crimes have to be seen in a new way by setting up special courts. Even the use of MISA is under examination. So, I have not indicated any helplessness.

I take this opportunity to clarify very briefly, without getting into a controversy, that when I referred to the question of satyagraha, it was a question of creating vigilant public opinion. It is not that the public is not aware of it. Yet, public opinion has got to be mobilised. For instance, the Congress Working Committee itself has said that dehoarding has to be done. Why did it say so? There is a State machinery. Still a call was made to Congressmen to encourage and initiate dehoarding. Why? The

reason is that, apart from the usual administrative machinery, political have got to be used, the parties peoples' machinery has got to be used, we have got to mobilise the people and expose the racketeers. It is in this context that I talked of mobilising public opinion. In fact, the Wanchoo Committee Report says extensively that these people should be exposed before the people as the enemy of the public. It has gone on record that their names must be published. I nave only quoted what the Wanchoo Committee has said and used it in connection with the smugglers, Sometimes bitter truth hurts. I can assure Shri Mavalankar that I am not a helpless person, nor a big person. I said it deliberately to bring home the dimension of the problem, because I know that it has gone into the very root of our system. So, I wanted to place before the public the mani-, festations and dimensions of the problem.

Shri Banerjee raised the question of the CRP incidents, which has been discussed here earlier. The manner in which he placed it before the House should have roused the conscience of this House. I am sure the Home Minister will give a reply to this. Whether on this side or that side of the House, all of us will agree that such atrocities on our people cannot be tolerated.

18.00 hrs.

It also belongs to a part which is a sensitive part of the country. I have also come from a very far off part of the country. We have our own individuality; we have our own way of thinking. Therefore, we do not like our women-folk to be oppressed in this manner. I am sure, the Home Minister will reply. I shall bring the views of the hon. Member, his very strong and bitter views, his feeling of anguish, to the notice of the Home Minister and, I think, he will be able to satisfy him.

169 Suppl. D. G. (Genl.), BHADRA 9, 1896 (SAKA) Suppl. D. G. (Genl.), 170

He also said something about the delegations to be sent abroad. As you know, there are certain obligatory functions which this country is to perform. There are international conferences and meetings on which India is represented, whether it is U.N. or U.N. organs, whether it is I.L.O., whether it is UNESCO or various other things, and these are obligatory things from which India stands to much. Therefore, our delegations have to go abroad. Then, there are purchase and trade missions and other project studies, signing of collaboration/loan agreements, etc. These are obligatory things. A strict procedure has also been laid down which requires the approval at the high level. There is a Committee of Secretaries. very senior Secretaries to the Government of India, which processes all . these visits abroad, all those delegations abroad. The Minister in-charge of the Ministry has to approve of the delegation. Then, it goes to Finance Minister. It is at the level of the Finance Minister that these delegations are finally sanctioned. As far as the Ministers are concerned, it has to go to the level of the Prime Minister.

An attempt is being made to keep the delegations to the minimum level. But being a large country, being a country which has contributed its best in the international fields, the country whose voice in the international world is today respected because of our size, because of our traditions, because of our contribution to international affairs, to the international life, certain things become absolutely obligatory as far as delegation are concerned.

Most of Mr. Limaye's points have been answered by my senior colleague, Shri D. K. Barooah. He had raised the problem of milling. I shall try to give some facts about this. The point that he raised has been sent to the West Bengal Government to find out the correct position, about the milling

margin that has been allowed by them. The Government is expecting their reply. I am sure, when the reply comes, the hon. Member and the House will be informed.

Apart from this, the point that I may like to mention here, because it is necessary to mention this, is that a particular formula has been fixed and this formula is based on a Committee known as the Verma Committee. It is on the basis of this that the formula is sought to be revised. Because of the increase in the issue price of rice and wheat that this formula is continuously being revised.

There are two points which I wish to make. I will not be able to go into the entire details because the West Bengal Government's position has not been indicated to me. It is based on a formula....

SHRI MADHU LIMAYE: For every dirty thing, there is a formula.

SHRI K. R. GANESH: That is a view. I thought, because once a point has been raised by the hon Member -he is a very senior Member-serious attention has got to be given Whatever information now I have. I am placing before the House. It is based on a formula. There is a differential of the formula which the State Government can fix: The State Government has been asking, not only West Bengal but other States also have been asking, that this formula has got to change because of various factors: As regards the specific point about West Bengal is concerned, when the reply comes, the hon. Member will be informed about it. He has also raised about U.P. Cooperative Societies' purchases....

SHRI MADHU LIMAYE: I have given notice that I shall raise that point when I speak on the Appropriation Bill.

SHRI K, R. GANESH: Shrimati Parvathi Krishan has mentioned about Demand No. 38, Rs. 70 lakhs. This amount of Rs. 70 lakhs, for which we are seeking the approval of the

.

[Shri K. R. Ganesh]

House, is for meeting the expenditure of the Employees' Provident Organisation which will look after the deposits as far as the private sector is concerned. She raised the point that the Government had spent so much and private sector also would have to spend. As I have said, this is as far as private sector is concerned.

Shri Nathu Ram Mirdha has raised a number of points. He is connected with agriculture, he is an expert in that. To some of the points, my colleague has relied. I would only mention two or three things.

There is no dispute that we have to build our agricultural economy and provide food because food economy is the crux, the central point, of the Indian economy. Unless the food economy is managed properly, the entire Indian economy cannot be managed because in the day-to-day budget of an average Indian it plays a very important part. Therefore, all help to the farmers—credit and various other things—has to be given.

In the present inflationary pressure, when deficit financing has to be kept at the level at which it has to be kept, every other thing has to be subordinated to it; the question of increase of electricity rate, the question of increase in fertiliser prices, the question of increase in prices of other inputs become germane and have to be linked up with this central task, apart from whatever other explanations Government have given.

There is another problem, the problem of resources. Resources have to be mobilised. They cannot be mobilised from a smaller sector. For mobilisation of resources, we have to have a larger sector and, I think, hon. members will agree with me that the agricultural sector will have to play its own part in this mobilisation—not the smaller part of the agricultural sector, but the larger part of it, the affluent part of it.

With the new strategy, with seeds being given, with fertilisers being given, with all other inputs being given, the Green Revolution is coming. One of the most important questions of agricultural economy is land reforms. It is my conviction that, unless there is a large scale land reforms. unless the land reforms are done in a manner that we have pledged to the people, unless the millions of hands of agricultural labour, now unused, are used for production as it has been done in China-just because we have a quarrel with them, we do not reject everything that is good there, unless the millions of hands are used for production on the farm front, so that there is increase in terms of coverage, in terms of the number of people used, I think, the Green Revolution will remain only in smaller pockets, in smaller area. Therefore, this is very major question.

As far as droughts and floods are concerned, apart from what the Fifth Finance Commission has done, the Chief Ministers of various States have come and they have been meeting the Finance Minister and have been discussing with him. The Governor of Gujarat also met the Finance Minister and discussed with him. This matter of Central help to the States is m the process of discussion, but it has to be seen within the natural constraints that are there in the economy as such (Interruption) This is a problem which the States and the Centre cannot neglect. If we have to keep the economy in its even keel, if we have to keep the deficit at a particular level, there has to be some gort of harmony between the two. Discussions are taking place. I am not in a position to say anything further.

With these words I request the House to pass the Demands.

SHRI P. G. MAVALANKAR: Do you want to leave Gujarat to fate?

MR. DEPUTY SPEAKER; We have had enough,

173 Suppl. D. G. (Genl.), BHADRA 9, 1896 (SAKA) Suppl. D. G. (Genl.), 174
1974-75

SHRI P. G. MAVALANKAR: Let us have some concrete reply.

MR. DEPUTY SPEAKER: Now about this point of order...

SHRI K. R. GANESH: We can take it up on Monday. MR. DEPUTY-SPEAKER: He says that he will answer it on Monday.

So, we now adjourn to meet again on Monday at 11 a.m. 18.11 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Monday, September 2, 1974/Bhadra 11, 1896 (Saka).